

अपभ्रंश काव्यधारा

लेखक

देवेन्द्रकुमार जैन

प्रकाशक



कल्याणमल एण्ड सन्स

उपोलिया बाजार जयपुर

१९७०

प्रकाशक
प्रकाशन-विभाग
कल्याणमल एण्ड सन्स
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-२

मूल्य ~~₹ 8.00~~ 8.00 00

मुद्रक
अजिता प्रिण्टर्स,
जयपुर

प्रास्ताविक

अपभ्रंश अब न तो एक अनजानी भाषा है और न उसका साहित्य अप्राप्य । गत चार दशकों की खोज से जो साहित्य प्रकाश में आया है वह यह उजागर करने के लिए काफी है कि अपभ्रंश—एक जीवित लोक भाषा थी और यह कि उसका क्षेत्र, किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा से बड़ा था ।

अपभ्रंश का युग (ईसवी ७ से १२वीं तक) ऐतिहासिक सदम में सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास और राजनीतिक विस्तराव का युग था । विस्तराव की यह प्रक्रिया भाषा के क्षेत्र में भी तेज थी । अपभ्रंश कवि के सम्पूर्ण दुहरा दायित्व था एक तो उसे नये पुराने के बीच सेतु बनना था और दूसरे युगीन यथाय के सदम में आध्यात्मिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना थी । और यह अभी भी शोध की अपेक्षा रखता है कि वह अपने दायित्व के प्रति कितना सजग और सजिव रह सका ?

प्रस्तुत सक्लन का अपना विंगिट सदम और उद्देश्य है ? भारतीय विश्व विद्यालयों में एम० ए० स्तर पर अवलम्बित प्रश्न-पत्र के रूप में 'अपभ्रंश' का अध्ययन लोकप्रिय होता जा रहा है यह इसलिए भी क्योंकि उसमें शोध के नए क्षितिज और दिशाएँ हैं परन्तु प्रामाणिक और अधुनातन सक्लन न होने से नए अध्ययन की बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है ? यह प्रयास इसी कठिनाई को हल करने की दिशा में एक प्रयास है ।

विषय को सरल बनाने के लिए समकालीन परिवेश टिप्पणियाँ और अवतरित प्रश्नों के सदम दे दिए गए हैं चयन में यह सावधानी बरती गई है कि सर्वांगीण दाय्य की बहुरंगी भलक सामान्य पाठक को भी मिल जाये । पाठ्यक्रम की दृष्टि से पुस्तक कुछ बड़ी है परन्तु संग्रह को बड़ा बनाना ही दृष्टिकोण यह रहा है कि विभिन्न विषयविद्यालयों में अपनी अपेक्षा और आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारित किया जा सके और कुछ समय बाद दूसरे कवियों को भी पाठ्यक्रम में रखने के विकल्प की सुविधा रहे । अतिरिक्त इससे सामान्य पाठ्य के, जो परीक्षार्थी नहीं हैं उपयोग में आ सके ?

'पाठ्यलिपि' तयार करने में जिस मनोयोग से सुधी महेशी कपूर ने काम किया है उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ । साथ ही बल्माणमल एण्ड सन्स भी धन्यवाद

यथार्थ के अधिकारी नहीं कि जिन्होंने—सत्रीय प्रमाणों की व्युत्पत्तियों के बावजूद
अपक्षित मात्र मात्रा के साथ 'पुम्नव' उक्त कर ली ।

पिछले तीन नवम्बर म म आचार्यवाच्य म सम्बद्ध हैं और यह सम्बद्धता
यह विद्वान् वरन के लिए पयाज है कि पुम्नव निश्चय ही उनका अपनापन पावगी
जिनके लिए यह समर्पित है ।

द्वैत्रकुमार

अध्यक्ष—हिंदी विभाग
इंदौर विश्वविद्यालय, इंदौर

अपभ्रंश-साहित्य

(१) ऐतिहासिक सद्म में अपभ्रंश प्राचीन भारतीय आद्यभाषा की अतिम कड़ी है। ऐसी कड़ी जो न केवल प्राचीन भारतीय आद्यभाषा को आधुनिक भारतीय आद्यभाषाओं और उनके साहित्य से जोड़ती है वरन् दक्षिणभारत की भाषाओं और उनके साहित्य को भी किसी हद तक जोड़ती है। अपभ्रंश और दक्षिणी भाषाओं का साहित्य सज्जन समकालीन साहित्य सज्जन है और अपभ्रंश में आद्यभाषा के शब्दों की तुलना में अपभ्रंश भाषाओं के शब्द कम नहीं हैं। इस प्रकार भारतीय साहित्य और कर्मरतम और नागाप्रवाह को समझने का सुन सचमुच अपभ्रंश के हाथ में है।

(२) जहाँ तक अपभ्रंश के एक भाषा रूप में विकसित होने का प्रश्न है इसका उत्तर स्पष्ट है? अपभ्रंश के विकास में वही तत्व और प्रभाव काम करते हैं जो किसी दूसरी भाषा में कर सकते हैं। अपभ्रंश का सबसे बड़ा महत्व यह है कि आद्यभाषा एक से अनन्त रूप बनी—इसकी व्याख्या अपभ्रंश का माध्यम से सही रूप में की जा सकती है? व्याकरण की दृष्टि से भी अपभ्रंश का अर्थ एक व्यक्तित्व और आकृति है। उसका एक स्थायित्व अस्तित्व है। अभी तक के प्राप्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अपभ्रंश अपने मूल रूप में उत्तर पश्चिम भारत की एक बोली थी जिसे भरत मुनि ने आभीरोक्ति कहा है और जिसकी प्रकृति थी उच्चारण जसे 'मोरत नञ्चन्तउ'—नाचता हुआ मोर। आभीरी अपभ्रंश कस बनी—इसकी कहानी लम्बी और उलझनमयी है। वैसे अपभ्रंश शब्द का प्रयोग पञ्जलि ने अपने भाष्य में किया है परन्तु वह संस्कृत से भिन्न शब्द के लिए है जैसे गौ के लिए—गावी, गौणी गोपतसिका इत्यादि। सबसे पहले संस्कृत साहित्यालोचक दंडी ने यह बताया कि बोधवान की आभीरी साहित्यभाषा के रूप में न केवल अपभ्रंश कहनाती है प्रयुक्त उसकी अपनी साहित्यिक शक्तियाँ हैं जिनका उसने संस्कृत और प्राकृत साहित्य के साथ, उदाहरण समानांतर उल्लेख किया है।

भरतमुनि और दंडी के बीच दो तीन सौ वर्षों का अन्तर हो रहा है। आभीरी को अपभ्रंश कहलान में इतना समय नग जाना कोई बड़ी बात नहीं। प्रसिद्ध संस्कृत गद्यकार कवि वालुभट्ट के समय अपभ्रंश भाषा के नाम से जानी जाती थी। इसके हयचरित में प्राकृत कवि वायुक्रमार के साथ भाषा कवि ईशान का भी उल्लेख है। यहाँ भाषा का अर्थ अपभ्रंश से है ईशान अपभ्रंश कवि थे इसमें सन्देह नहीं है।

सम्बन्धों पर विशेष जोर दिया जाता था। सामाजिक स्थिति में परिवर्तन तेजी से हो रहा था। ब्राह्मण और किसान सेना में भरती होते थे। उच्च कुल की स्त्रियाँ शासन में भाग लेती थीं। राज-व्यवस्था और साधारणव्यवस्था के रहन-सहन में काफी अंतर था। ऊँची शिक्षा के प्रबंध के उदाहरण मिलते हैं, परन्तु ग्राम्य स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था का कोई उल्लेख नहीं है। व्यक्तिगत रूप से गाँव में पढ़ाई होती थी। दस्तकारी या भण्डारी दूसरी विद्याएँ बेटा बाप से ही सीखता था। पुरानी धर्म साधनाओं और देवी-देवताओं की उपासना के साथ नये धार्मिक विचार भी विकसित हो रहे थे। इस नयी धार्मिक भक्ति चेतना का केन्द्र तमिल देश था। यह विचार चेतना शीघ्र सारे देश में फैल गयी। ऐसा लगता है कि साधनात्मक और श्रम-प्रधान धार्मिक साधनाओं के विरुद्ध स्वतन्त्रात्मक शिव या विष्णु भक्ति का प्रचार करना इनका उद्देश्य था। १०वीं सदी में धासपास प्रचार ने इनके गीतों का सफल संचारण के नाम से किया जो तामिल शब्द धर्म के लिए 'वेद' है।

(६) नयी भक्ति चलने का अधोलिखित कारण थे—

(I) राज्याश्रय के कारण जनता में प्रचार

(II) जनभाषा में गीतों की रचना

(III) शिव विष्णु के साक्षोत्तर व्यक्तित्व द्वारा जनता में विश्वास की भावना पैदा करना

(IV) सुन्दर रागों में गीतों का गान प्रचार करना।

सद्वर्धित युग में उत्तर भारत की तुलना में दक्षिणभारत में धार्मिक विचार धाराओं का सघन अधिक सक्रिय था। ये सारी विचारधाराएँ भारतीय थीं। विष्णुमत की अपेक्षा शैवमत अधिक सुगठित था। जैन धर्म और शैवमत में सघन था। बौद्ध धर्म भवमति पर था। कुछ इतिहासकारों की भावना है कि १२वीं सदी १३६ म अरब जहाज भारतीय समुद्र के किनारे पहुँचे। तब से अरब व्यापारियों का सम्बन्ध इस देश से रहा है एक सद्वर्धित धारणा यह भी है कि ईसाइयों का दक्षिण भारत में बसना इस समय तक प्रारम्भ हो गया था और इसलिए नई उठती हुई भक्ति-धार्मिक भक्ति आत्मसमर्पण, सामाजिक समानता और गुरु की आवश्यकता पर जोर देने जान आदि बातों को उक्तधारणा मुस्लिम या ईसाई प्रभाव मानती है परन्तु यह सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दानों दृष्टि से गलत है।

साम्प्रदायिक मतभेद के बावजूद सहष्णिगता का भाव था। मत-परिवर्तन वैवाहिक सम्बन्धों में बाधक नहीं था। धर्म की शक्ति बढ़ना न बढ़ना राज्य के आश्रय पर निर्भर करता था। यह युग मंदिरों के ठाट-बाट का युग था। आलोच्य युग के उत्तरार्ध में उग्र मध्याह्न सिद्ध साधना हठयोग भक्ति आदि साधनाओं

और खण्ड काय । जहाँ तक प्रबन्ध काव्य का सम्बन्ध है यह धारा परम्परागत पौराणिक कायो से प्रारम्भ हुई । बहुत सी प्रवृत्तियों में समानधर्मी होते हुए भी पुराण काव्य की तुलना में चरित काव्य की अपनी विशेषताएँ हैं, जैसे चरित काव्य में अप्राकृत तत्त्व का सर्वोच्च वस्तु विकास में यथा सम्यक् धारावाहिकता, धार्मिकता, लौकिकता और सक्षिप्तता । चरित काव्य और कथा काव्य एक ही बात है—और इनको सबसे बड़ी विशेषता है लौकिक और शास्त्रीय परम्परा का सम्बन्ध । चरित काव्य की अपनी टेक्नीक है, गीततत्त्व युक्त द्विपदों के आधार पर छन्द की लयात्मक तुल्यता रचना बहवक की योजना इसी टेक्नीक के परिणाम हैं । वस्तु वर्णन की दृष्टि से काव्य समृद्ध है, विवाह गोकुल शरद्वस्त्रियों वृष्णलीला स्वयम्बर और जल क्रीडा का वर्णन विशेष महत्त्व रखता है । रूप चित्रण में वे कवि योजीब हैं, वह भी भाव के अनुरूप रूप चित्रण करने में । स्त्रियों की रूपात्मक प्रतिक्रिया भी ये खूब चित्रित करते हैं । प्रकृति चित्रण और अलंकार योजना भी इनमें मौलिकता की लिए हुए है । चरित काव्य की तुलना में पुराण काव्य एक प्रकार से चरित्र का संग्रह ग्रन्थ है । इनमें काव्य और कथानक दोनों से सम्बन्धित रुढ़ियाँ देखी जाती हैं । चरित काव्य की दो उपधाराएँ हैं चरित काव्य (धार्मिक) और रोमांटिक काव्य । चरित काव्य की एक विशेषता यह है इसके अन्तर्गत गीति तत्त्व भी है । राम और कृष्ण के इतिवृत्त पर लिखित चरित काव्य का धाराएँ आलोच्य काव्य में देखने परखने की वस्तु है ।

(६) रास काव्य भी दो चार उपलब्ध हैं उदाहरण के लिए 'सदेस रासक' सुखात खण्डकाव्य है, कुछ आलोचक पहले इसे गीतिकाव्य मानते थे और अब कहते हैं कि वह क्षीणधर्मी प्रबन्धकाव्य है ? वस्तुतः इस काव्य में घटनाक्रम कम और प्रतिक्रिया अधिक है । मुक्तक काव्य की परिभाषा के बारे में अभी तक यह कहा जाता रहा है कि उसे इतिवृत्तविहीन होना चाहिए । परन्तु यह ठीक नहीं । मुक्तक का अर्थ है जो पूर्वापर सम्बन्धविहीन हो, वह अपने आप में मुक्त हो । अतः भावना के प्रतिरिक्त घटना या इतिवृत्त का खंड भी मुक्तक काव्य का विषय बन सकता है । संस्कृत आलोचक राजेश्वर ने इसका विस्तार से विवेचन किया है । अपभ्रंश के इतिवृत्तात्मक मुक्तकों के काफी उदाहरण मिलते हैं । गेयमुक्तकों से रूप में जो रचनाएँ मिलती हैं उनमें से अधिकांश गीतनृत्यात्मक रचनाएँ हैं । अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक की परम्परा अधिक लोकप्रिय रही है इसके प्रतिरिक्त कुछ गेयमुक्तक अपभ्रंश काव्यधारा के भीतर मिलते हैं । यह कहा जा चुका है कि अपभ्रंश प्रबन्ध काव्य के स्वरूप गठन में गीत के कई तत्वों को ले लिया गया है । मुक्तक के रूप में दोहा काव्य बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध है जैसा कि पाठ्य देखेंगे कि यह धार्मिक और लोक दोनों रूप में उपलब्ध है । गहराई से देखने पर यह साफ हो जायगा—

जि लोग म प्रचलित काव्य विधाएँ ही आगे चलकर नास्तोयविधाओं का रूप ग्रहण करता हैं। ऐसे की अधिपना के कारण प्रपञ्चन की दूसरी विधा भी बहुत है। कुछ विद्वानों का मत है कि प्रारम्भ में दूहा या दोहा—ये पंक्तियाँ बान छन्द का सामान्य नाम था बाद में सास प्रकार के छन्द को दाहा कहने लगे। इसमें संदेह नहीं कि प्रपञ्च छन्द का आधार, दो पंक्तियाँ और तुक (अन्त्यानुप्रास) है। प्रपञ्च छन्द कवियों ने अपने छन्द की प्रकृति के भीतर संस्कृत के वर्णित छन्दों को लाने का सफल प्रयास किया है। इस प्रकार प्रपञ्च छन्द कास्तोय और लोक काव्य के बीच सेतु का काम करता है। मुक्तक काव्यपारा में दो प्रकार की अन्तर्धारणाएँ हैं प्रकृति-मूलक या कमरांड में आस्था रखने वाली विचारपारा और निवृत्तिमूलक या विमृष्ट अध्यात्मवादी विचारपारा। विमृष्ट अध्यात्मवादी में भी दो उपधारणाएँ हैं—(१) जन विमृष्ट अध्यात्मवादी (२) सिद्ध सहज अध्यात्मवादी। बाह्य आहम्यर का विरोध आत्मा की स्वतन्त्रता चित्तशुद्धि और वरणा, इनमें समान रूप से मिलती है। नियति की विहम्बता के प्रति प्रपञ्चन कवि का स्वर सदा अधिक आनोदायपूर्ण है। यह अनुभव करता है कि भाग्य की विचलताओं के आगे मनुष्य का नत होना ही पड़ता है। जीवन के उतार चढ़ाव को भी वह मददगारील स्वर में अभिव्यक्ति देता है। कुमार भविस्यत् अपनी पत्नी से कहता है 'मुदरी! जीवन के गत उतार चढ़ाव पर रुद करना व्यर्थ है, क्योंकि यदि मनुष्य जीवन है तो उसमें संयोग वियोग होगा ही? मैं मानता हूँ कि जीवन को जरा रुपी टायन खा जाती है परन्तु मनुष्य की सबन बड़ी हार इस बात में है कि वह अपनी जिन्गी से ऊँच जाय।'

(१६) आलोच्य साहित्य में समाज और संस्कृति का जो चित्र प्रकट है वह यथार्थ में अधिक दूर नहीं है। भारतीय जीवन का यह यथार्थ क्या है? यह यथार्थ है कि भारत में आध्यात्मिक विचारधाराओं में जितने परिवर्तन हुए उतने समाज व्यवस्था और आर्थिक जीवन में नहीं। इसलिए आलोच्य साहित्य में युगीन समाज का जो चित्र प्रकट है वह इतना कट है कि किसी भी युग के बारे में 'फिट' किया जा सकता है? उदाहरण के लिए प्रपञ्चन कवियों ने कलियुग का जो चित्र खींचा है वह तुलसीदास के कलियुगीन चित्र से बहुत कुछ मिलता-जुलता है इसका कारण है कि मध्ययुग में भारतीय समाज के भूतया में जो टहराव आ गया था उसने अपनी सीमाएँ और अभिव्यक्तियाँ एकदम स्थिर कर ली थी। यथार्थवादीकोण से देखा जाय तो आलोच्य साहित्य में राजनीति वग और श्रष्टि वग का बालवाला है दूसरा कोई वग है, तो दरिद्र गरीब निम्न निम्नवर्गीय जनता—जो अपने ही पाप, कर्मों से अभिप्राप्त जीवन विनाश के लिए विवश है। मनुष्य परिवार के शीतयुद्ध बहुपत्नी प्रथा राजनैतिक युद्ध, व्यापारहारा श्रमिका की दयनीय स्थिति का वास्तविक चित्रण इस साहित्य में है। समाज जाति उपजातियाँ और कुरीतियों में बँट पँस

जुता था। राज समाज—विशेष रीव दीव रखता था। जुआ और मल्लयुद्ध
 विशेष पसन्द किये जाते थे। हिंसक पूजाविधान भी थे। अग्नि का उदय हो रहा
 था तत्र मात्र की भी ध्यान था। सधन बड़ी बात तो यह है कि चीजाँ में मिलावट
 उस युग में भी होती थी। दार्शनिक वैरविरोध भी अपने उत्तम बिन्दु पर था।
 घम भाङ्ग्यरूप था, साधना से अधिक वह प्रदर्शन की वस्तु था। इस प्रकार, इस
 साहित्य की सबने बड़ी देन यह है कि उसमें काव्य की शास्त्रीय और लौकिक
 परम्पराओं का निभाव है पुरानी और नयी काव्य विधाओं के बीच एक सेतु है और
 यह कि उसने युग की चिन्ता, भाषा काय रूप और अन्य साधनाओं का, धूमिल पर
 तथ्यपूर्ण चित्र हम दिया है। चाहे हम यह न जाने कि भारतीय साहित्य का उद्गम,
 प्रादय की किम गंगात्री या यथाय की चट्टान से हुआ पर यह हम जानते हैं कि वह
 जो अपनी नाना धाराओं में बहता है वह इसी अपभ्रंश के घरातल में।

महाकवि स्वयम्भू

कवि स्वयम्भू—अपभ्रंश व आदि कवि तो नहीं परन्तु अपने महाकवियों में प्रथम अवस्था है। कम ॥ कम तीन पानिया ॥ उनका धरना साहित्यिक धरा था। पिता का नाम माग्यन्व था और माता का पद्मिनी। सम्भवतः उनकी दो पत्नियाँ थी, आदित्याम्बा मामिग्रवा। आदित्याम्बा विदुषी और कवयित्री थी। पिता का साहित्य माधना में उसका भी सक्रिय योगदान था। उनका बेटा त्रिभुवन स्वयम्भू भी कवि था और कन्नड़ हैं उसने अपने महाकवि पिता की अपूर्वा रचनाओं को रचा किया। उसने विपरीत उन लोगो का मत है जो मानते हैं कि कवि की सम्स्त रचनाएँ सम्पूर्ण थी। स्वयम्भू—भारत के उन भाग्यशाली कवियों में एक थे जिन्होंने जीवन में पता-भूना घर बना और मत्तप मिना। समाज में भी प्रतिष्ठा थी। सम्भवतः उनके कान्य में निराला और कटुता से भरी पत्नियाँ कम हैं।

वह कुछ दिन के व्यक्तित्व था। वह अपने बारे में कुछ कहते हैं 'मैं दुःखना पतना नाद मेरा चिपटा और नीत विवर विवर।' वह विचारशील, स्मर और व्यवहारवादी थे। रमा का आँखा और नवा सनियों के बीच, किसी कानविदुषी के जन्म कवि स्वयम्भू किस प्रांत के थे हम सम्भवतः में निश्चित रूप से कुछ कहना नहीं है परन्तु इनका निश्चित है कि उनमें अधिकतर कलात्मक मस्तिष्क साहित्य माधना का। उनकी अमा एक ही तीन कृतियाँ उपलब्ध हैं—शिशुगेमिषरित पन्म कविता और स्वयम्भू का। दूसरे अनिश्चित एक दो ग्रंथ और उनके बताने जान हैं। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्वयम्भू का महत्त्व यह है कि वह साक्षात्प्राप्त कठनों पर अधिकारपूर्वक विचार करने वाला पहला पुस्तक है। सिवाय इसके उसका महत्व इस बात से भी है क्योंकि उसमें पूर्ववर्ती और सहस्राब्दी अपभ्रंश कविता के नमून मुरजित हैं।

कवि का रचना की मुख्य प्रेरणा ब्रिजभक्ति है। रामायण—उसके लिए प्रामाणिकता का कान्य है। रामकथा की वह पुण्य से पवित्र कथा मानता है जिसके गान से उसका चित्त मित्रता है। अपनी गमकथा का कवि ने भी का रूप देता है। उनके कान्य में भक्ति की समग्रता और कान्य का सम्मत्ता दोनों हैं। प्रकृति चित्रण और मनुष्य के स्वभाव का अच्छा परख उन्हें था। परवर्ती अपभ्रंश कवियों ने स्वयम्भू का नाम बड़े आदर से रखा है।

महाकवि पुष्पदंत

अपभ्रंश काव्य का सबसे निराला और प्रतिभासम्पन्न हस्ताक्षर। कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। पिता केशवभट्ट और माँ मुग्धा देवी। शव घम छोड़कर जन घम में दीक्षित। एकांतप्रेमी, उग्र और भावुक। पड़िता में विवाद है कि वह दक्षिण के थे या उत्तर के। प्राचीन कवियों के बारे में, इस प्रकार के विवाद अग्रहीत हैं। क्योंकि ये कवि किसी प्रांत के कवि नहीं थे, अपभ्रंश एक व्यापक काव्यभाषा थी उसमें किसी भी प्रांत का कवि लिख सकता था यह कहना भी गलत है कि 'पुष्पदंत के काव्य में द्रविड भाषा के शब्द नहीं हैं।' अतः और बाह्य साक्ष्यों से यह सिद्ध है कि पुष्पदंत ईसा की दसवीं सदी में हुए और प्रसिद्ध राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण ३ के समकालीन थे। कृष्ण ने चोलराज पर विजय प्राप्त की थी। पुष्पदंत ने भी इसका उल्लेख किया है 'तोडेण्णु चोन्हो तण्णु सीसु'।

महापुराण और दूसरी कृतियाँ रचने का कहानी स्वयं कवि के शब्दों में यह है, एक सॉम वह था मादा 'मलखेड' (मायखेट) राष्ट्रकूट राज्य की राजधानी पहुँचता है (शक स० ८६६), वहाँ मंत्री भरत से उसकी भेंट होती है, उसी के अनुरोध पर कवि पुण्य रचना में लगता है। बीच बीच में—'उसका मन उदास हो उठता परन्तु मंत्री भरत उसे मना लेते।' एक जगह कवि लिखता है कि पहले मने भरव नामक शैव राजा की प्रशंसा की थी, उससे उत्पन्न मिथ्यात्व को धार के लिए मैं इस काम में लगा। वह कहता है—'लो भरत, तुम्हारी अभ्ययना पर मैं जिनगुणा स भरित कविता करता हूँ, धन के लिए नहीं, केवल तुम्हारे प्रकारण स्नेह के कारण, जिनपद भक्ति से मेरा कवित्व बसे ही फूट पड़ता है जैसे आम के बीरो पर मधुमास में कीपल छूक उठती है। कामन में भ्रमर गुँजन लगते हैं और गुक सुख स भर उठता है कवि सरस्वती की वदना के सदम में जो कुछ कहता है उससे उसकी काव्य सम्बन्धी मायताएँ जानी जा सकती हैं। भाषा प्रसन्न और गम्भीर छंद और श्लकार काव्य की गति और गोभा है। कवि ने बार बार अलङ्कार और रसभरी कथा की उपमा दी है वह काव्य में सबसे बड़ी वस्तु गहन अनुभूति को मानता है।

कवि का घरेलू नाम 'खण्ड' 'खण्डू जा' था। उनके साहित्यिक नाम थे अभिमानचिह्न कविभूततिलक सरस्वतीनिनय, काव्यपिसल्ल आदि। उनके व्यक्तित्व में विरोधी वाता का विचित्र सम्मिलन था। एक ओर वह अज्ञान को कुक्षि भूषण कहते हैं और दूसरी ओर तब में आनंद सरस्वती को यह चुनौती भी देते हैं कि यह जायगी कहाँ? अपनी इस विरोधी प्रकृति के कारण उन्होंने विरोधाभास और दिनपट शैली का अधिक प्रयोग किया है। उनके काव्य में श्लिष्ट सरल समस्त व्यस्त, सभी प्रकार की गतियाँ प्रयुक्त हैं दशन और अनुभूति का गुंजर समन्वय है। मानिक और वैशिष्ट्य छद्म का कृत्रिम भेद इन्होंने अपने काव्य में दूर कर दिया है। महापुराण जसहूर चरित और लाय कुमार चरित उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

धनपाल

भविष्यत्तरहा व रघयिता धनपाल धनर वग व ये । पिता का नाम
 माणगर और मा का नाम धनश्री था । धनर पश्चिमी भारत की वंश जाति म
 हा । है अतः पति का राजस्थाना हुना चाहिए । मरी समझ ॥ इन्हें दसवा स
 का मानना—अथगत रहा । पति व अनुमार भविष्यत्तरहा—चरित धीन है
 अथानि क्या नाम हान हूँ भी है चरित हा । ववि बार बार धनर को सरस्वती पुत्र
 कहता है अतः धनर की अथेगा वह धनर काय को मोहहृत्प व निर रचना
 अथिन पम करत हैं अथि नन्ने क्या का नायर राजा न हानर वय है परन्तु
 उगका परिवार राय स धनिपनम रूप न समुद्ध है ? धामि व हृत्ति स भविष्यत्तरहा
 का उद्दृष्ट—धुतयवमा व वग का माहात्म्य निनाता है परन्तु मवा क्या भी
 पूर्ण पारिवारिक है घटनामा ॥ उनार-वडाव, मन्वध निर्वाह भावों का धान
 प्रतिपात धानि का गुणर समापन है ? भविष्यत्तरहा मनुष्य का भविष्यता की
 प्रतीति है घटनामा व विनाम म स्वाभाविकता है । य पटना चरित काय
 है जिनम पात्रा व व्यक्तित्व का कुछ मन्त्र अस्मिन् है उनाहृत्प के निर धनि
 भविष्य—अगीनार परत व पूय भविष्यानुष्ठा की परीक्षा लता है ता दूसर विवाह
 व प्रगम पर घट भी—अथन पति म अथवामन लता नहा पूरता म्मा प्रनार अथ
 मानिता वमता सत तव म्मायो रूप स धनर के घर नहा जानी विजय तन वह
 मारा नों माग लता धन वस्तु विद्यास चरित विषय और वस्तुवानी कोम व
 बारण—यह एक महत्त्वपूर्ण चरित बाध्य है ।

कवि धाहिल

‘पउम सिरि चरिउ’ के रचयिता श्री धाहिल—अपन को ससृष्ट महाकवि माय का बगज मानते हैं। वह थोमाल बशीय गुजर बक्ष्य थे। पिता का नाम पाश्व और माता का महागती सुराई। कवि के व्यक्तिगत जीवन की कुछ भी जानकारी नहीं मिलती। अनुमानन वह १०वां वं आसपास हुए। ‘पउम सिरि चरिउ’ छोटी रचना होते हुए भी—धाहिल के कवि होन का ग्रहसास ही नहीं कराती—बल्कि पाठक के अंतर्मन पर एक छाप छोड़ती है। धाहिल ने प्रस्तावना में स्वीकार किया है कि महासती दुलभा की प्रेरणा से इस काव्य की रचना की गई। कवि की अलग क्षमता, भाषाशक्ति और प्रकृति के रंग में मायी भावनाओं का उतार चढ़ाव को रंग देने में जो सफलता मिली है वह बहुत कम कवियों को मिल सकती है। ‘पउम सिरि चरिउ’ की रचना का के प्रिय उद्देश्य जन कम सिद्धांत का परिपाक निखाना है। कथावस्तु सम्मिलित जन परिवार से सम्बंधित है। शैली रम्य और रोचक है, कवि के शब्दों में ‘मन ललित दाग्य म अक्सर दिया है और मेरा काव्य तराणी जन का तरह बटुविकार वाला है।’ कवि का महत्व यह ही है कि वह पारिवारिक समस्या का धार्मिक हल गोजन का प्रयास करता है। वरन्, यह है कि समस्या को रखते समय वह मनुष्य स्वभाव का यथाववादी दृष्टि से चित्रण करता है। एक घनी परिचार म विषया लड़की की स्थिति का गृह मसह घरतू कूटनीति और नारी की स्थिति का चित्रण करता है, तो दूसरी ओर, विमोचिनी पक्षी की वियोग व्यजना में प्रकृति का साक्षात्कार भी दिखाता है। धाहिल का नाम दिव्य दृष्टि उचित था। उसे मनुष्य की अंतर्मविन्यास की मण्डी पसंद थी। वह अपनी कथा को अणु रसायन तक कथा कहता है।

पउम सिरि चरिउ में पक्षी के दो दो जन्मों की कहानी है, एक जन्म में वह जो बोनी है दूसरे जन्म में वही करती है। पहले जन्म में वह घनश्री है और असमय में विषया हो जान पर अपन भाइयों के पास रहती है वह घर की मालकिन है और कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र है। वह सोचती है वहीं भाभिया मेरे खिलाफ भाइयों के धान न भर दें जिससे मेरे दान पुण्य पर अकुश लग जाय। वह अपना रंग गाठना चाहती है। बारी बारी से दोनों भाभियों को नमन शील पानने और चोरी न करने का ऐसा कपट-उपदेश देती है कि भाई समझा है कि उनकी पत्निया ऐसी हैं व उन्हें पीन्ते हैं, बाद में अनश्री भाइयों से कहती है कि—‘म तो उपदेश दे रही थी तुम सच मान बैठे।’ वह उनका भेल करा देती है। इस प्रकार उनका रोव बढ़ता है। भाभिया उसकी गुलाम है। दूसरे जन्म में—वह पक्षी बनती है और न केवल पति वियोग उसे सहना पड़ता है वरन् कुलीन और चोरी का वसक भी अंत में तप कर मुक्ति प्राप्त करती है।

अब्दुलरहमान (अद्दहमान)

‘सदेरा रासक’ की उत्पत्ति का वं अनुसार, यह पश्चिम देश में स्नेच्छ देश के भीरसन नामक बुद्धिमान वं घर में कुलकमल थे। यह प्राकृतज्ञान्य और गीत विषय में विनोद प्रगट था। स्नेच्छ देश में कवि का अभिप्राय पश्चिमी भारत की किसी मुसलमान बन्धी में है क्योंकि उस समय तो मुसलमान मिथ पर बजा कर चुके थे। ऐतिहासिक तथ्या के सम्मेलन में सहानुभूति गौरव के सम्मुख की पूर्व मध्या में इनका जन्म हुआ था। डॉ० हजारीप्रसाद का विचार है कि अब्दुल रहमान के पिता भीरमेन मुसलमानी धर्म अंगीकार कर, पश्चिम में पूर्व भारत में चल आये थे वही अब्दुल रहमान का जन्म हुआ। ऐसा उन्होंने प्रारम्भ पञ्जाब में अद्दहमान और मिच्छा घण्टी के अर्थ की सीखता पर म किया है। द्वितीय का का विचार इतीति माय नहीं किया जा सकता क्योंकि समूचा रचना में पूर्वोक्त वही भी नहीं है।

इसमें सदेह नहीं कि ‘सदेरा रासक’ की रचना मध्यम शैली के पाठक के लिए है, जो सुकनक शृंगार को अभिप्रेम पसन्द करते थे। कवि की वर्णन पद्धति वही-वही शास्त्रीय है अतः उक्त निष्ठुद्ध जो कवि स्वीकार नहीं किया जा सकता।

कवि रहमान का समय महा महत्व यह है कि वह गणितज्ञ में जन्म मुसलमान होकर भी अफगान में निजिन वास्तव प्रथम मुसलमान कवि हैं। उनका वाक्य रचना में माध्यम भारतीय हैं। उनमें साहित्यिकता और सौन्दर्यता का सुन्दर मेल है। प्रकृति का उद्दीपक चित्रण है कुछ सुविनया भी हैं। उनका प्रेम साक्षात्कार और सम है।

सदेरा रासक — वस्तुतः एक मुवात निप्रलभ काव्य है। यह एक प्रतिनिधि स्मृति काव्य है जिसमें विरामपुर की एक वियोगिनी एक पथिक से अपने विरह के उद्गार व्यक्त करती है। पथिक से कहने का अर्थ यह है क्योंकि वह एक लक्ष पत्र लेकर मुलतान से लम्बाया जा रहा था। तीन प्रकार के सह वाक्य में भी कथा की काव्य की रूपा का परिपालन है। सदेरा कथन से अधिक उसमें प्रतिनिधिका अधिक है, बीच-बीच में वह उद्धरण भी दता है। डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी—रामक हान में गेय समझते हैं (हिन्दी साहित्य)। रासक नाम की लहर हिन्दी आलोचका के मन में इस प्रकार की विद्या वास्तव काव्या की जो आन प्राप्त करता कर कर चुकी है, यह उसी का परिणाम है। अब्दुलरहमान यदि पूर्व में हान, तो उनकी भाषा में कुछ पूर्वोक्त होता। सदेरा रामक का वातावरण भारतीय है उसमें विदेशी प्रभाव कुछ भी नहीं है उनकी अफगान पश्चिमी अफगान है। जिस रूप में सदेरा रामक है— उसमें उसका महत्त्व कम नहीं होता। वह एक ऐसा मुसलमान कवि की रचना है जिसमें हाल ही में परित्यक्त किया होगा, इसमें शुद्ध रामायण के लाकोक्तियों के साथ उद्भास्य उक्तियाँ भी हैं प्रकृति चित्रण में जीवन के नित्य व्यापार का समावेश है। पर है यह ‘पाश्र्व काव्य’ है।

सरहपाद

‘सरहपाद’ नई भाषाया और छन्दों के युग के आदि कवि हैं, सत सिद्ध परम्परा के आदि सिद्ध होकर भी आध्यात्मिक तीर पर वह नई दिशा देने वाले हैं, उन्हें द्वितीय बौद्ध कहकर लोग अतिशयोक्ति से काम नहीं लेते । यह वचन है स्व० महाप्रह्लाद राहुल साम्प्रदायिक का । इससे स्पष्ट है कि सरहपाद का व्यक्तित्व असाधारण व्यक्तित्व था । कहा जाता है कि पूर्वोद्देश के किसी राजा कमरे में एक ब्राह्मण परिवार में उन्होंने जन्म लिया । यह कहना कठिन है कि वह परिवार बौद्ध था या ब्राह्मण ।

सरहपाद स्पष्टन आतिवाद और साम्प्रदायिक बटुहरता के घोर विरोधी थे । वह आठवीं सदी के उत्तरार्ध के सबसे प्रबल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे । सरहपाद के गुरु थे—हरिभद्र, जो प्रसिद्ध पालवर्षी राजा धर्मपाल (७७०-८१३) के समकालीन थे । राजा धर्मपाल के अन्तिम समय शरणागत के शिष्य सुर्यपाद के प्रमुख शिष्य के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था । वह धर्मपाल का सचिव था और उसी की अनुमति से उसने घर-बार छोड़ा था । इनसे सिद्ध है कि सरहपाद उससे दो पीढ़ी पहले चल बसे होंगे । इस प्रकार उनकी असाधारण प्रवृत्तियों का काल आठवीं सदी का उत्तरार्ध ठहरता है ।

सरहपाद, का पहला नाम राहुलभद्र था और सब वह नालदा विद्वत्विद्यालय में वेदव्यास के प्रथम सिद्ध होने के कारण वह सरहपाद कहलाए । इनके पहले इस परम्परा में कई सिद्ध हो चुके थे परन्तु सरह ने सिद्ध विचाराधारा को एक नया मोड़ दिया । उनके समय नालदा में—दूसरी धाराशे के साथ असोक के समय की विनय परम्परा भी थी—जिसमें भिक्षु की स्त्री छूना वर्जित था वह मद्यपान नहीं कर सकता था शरीर पर नीवर पहनना पड़ता था । राहुल ने इसका खुला विरोध किया उन्होंने एक घरदार की कन्या को रस लिया । वह, महापूजा (सरकार कन्या) के साथ खुलेआम घूमते थे ।

सरहपाद ने ध्यान के साथ कल्याण पर जोर दिया । कल्याण के बिना ध्यान (शून्यता-योग) व्यर्थ है । उनकी अपभ्रंश रचनाओं को दोहा कोश या दोहागीति कहते हैं । उनकी प्रसिद्ध रचना ‘दोहा कोश’ में दोहों की अपेक्षा चौपाइयाँ अधिक हैं । सांस्कृत्यायन के अनुसार ‘दोहा कोश’ का उस समय अर्थ था ‘दो पंक्ति वाले छंदों की कविता ।’ ‘सात दोहा कोश—सिद्धचर्चा और वज्रयानी योग का वेद मान जाते हैं । सरह की कविता में उलटवाचियाँ और व्यंग्योक्तियाँ हैं । असाधारण प्रतिभा वाले इस महाकवि की कविता का संग्रह इनके शिष्यों ने किया । सरह मूलतः रहस्यवादी कवि हैं और उनके श्लेष पदों में—आध्यात्मिकता के साथ वास्तवता भी प्रकट होती है । वाद में इस प्रकार की कविता वामाचार में सहायक हुई । एक उदाहरण है

‘जै ठेठे पवन पर गढ़ा है एक गजरवाना जिसके गिर पर है मोर पम
श्रीर गने म है गुजामाना । जगसा प्रिय गजर प्रम म मनाना श्रीर पागन ॥ आ
सवर नू हाना गुना मन कर तग अपना बगवाना सहज मु सरा है ।’ (राजा का
पृष्ठ २४)

इस प्रतीत गीतों का आशय यह है कि गजर साधन है ? गवरी है नद
रामभी नगम्य नव शून्यता । शवर सागर—जो न भुजग और मित्रादा है ?
जगसा साक्षात् गजर की उत्पत्ति महामुन्य का अनुभूति है ।’

सरह विचारों की अनिया व विद्रोह था । और उद्धान अपन मुग न धामिन
सम्प्रदाया और आहम्बरा का भुनकर गहन किया । सरह अपना समस्त रहस्यमयी
विचारधारा व बावजूत सहज नमगिर जीवन व परापात्री था । व सहजका के
पहन आचाय ये उद्धान सासारिक भागों का नहा उषम अपनी आगवित्त का त्याग
मानत थे । चित्त की अपार गक्ति म उनका विश्वास था और उनका पढ़ता था
मन की बाध रमना बहुत कठिन है ? उद्धान आचार का महत्व कम कर बरणा
और नूयता पर अपित्त जार दिया ।

दार्शनिक सन्त म सरहपाद असम व यागाचार और नागातुन व मान्यमिर
(‘नूयता’) स सम्बद्ध हैं । असम व अनुसार क्षणिक विज्ञानवात् का मून तत्त्व आनय
विज्ञान है मून तत्त्व एव ही है वह है विज्ञान (चिन्ता) जो अपन क्षणिक रूप म
मनानत है यह विज्ञान (चिन्ता) दो प्रकार की है ।

(१) व्यक्तिव विज्ञान—प्रवृत्ति विज्ञान

(२) महाविज्ञान —आनयविज्ञान ।

दृष्टादृश्य पदाथ, इसी आनय विज्ञान का सहज परिणाम है । यह सबन
हानी अनौचित्य तव आनय विज्ञान है जो समुद्र की तरह अपनी क्षणिकता के
बाग्य सत्त्व तरंगित गता है । यह तत्त्वप्रवृत्ति का विज्ञान—याना चिन्ता है ?
सरह ने इस प्रवृत्ति का प्रतीत तगवर का माना है । व कहत हैं—

आनयतत्त्व समन

हिन्दू अगच्छाच्छ

आनय विज्ञान अभी तगवर विवसित है : हिलता दृढता दुष्टा वह स्वच्छ है ?
स्वच्छन्द हमलिय क्योंकि समवा मचानित करन वाली दूसरी शक्ति नहीं । सरह
‘आनय विज्ञान’ का मून तत्त्व मानत हैं और उते रहस्यमय रूप गता चाहत हैं ?
अत उनके अनुसार यत् मून रहित तव नूय नी हो सनता है ? नूयता का रूप
स्थिति म भव और निवाग्य एवं है रूप प्रकार उद्धान निवाग्य का महत्व कम कर
एहिक जीवन का मूल्य बगाना : उद्धान कहा कि असार सहजान पृथिव है और
मनुष्य का शरीर ही ताप है ?

योगीन्द्र (जोड़न्दु)

ज्ञान, उदार और विशुद्ध अध्यात्मवादी कवि थे। इन्होंने अपने विषय में कुछ नहीं लिखा, जोड़न्दु के समय के बारे में भी मतभेद है। कुछ विद्वान इन्हें ई० पू० सदी का मानते हैं जब कि कुछ ईसवी छठी सदी का और यह मानने का मुख्य कारण है जोड़न्दु के एक दोहे 'बाल सहेण्डिणु' का चढ़ के 'प्राकृत सक्षण' में उद्धृत होना। बू कि चढ़ सातवी के उत्तरार्ध में हुए—अतः जोड़न्दु को इसके पूर्व होना चाहिए। परन्तु भाषा के विचार से जोड़न्दु का समय, प्रस्तावित समय से बाद में होना चाहिए, जो भी हो अपभ्रंस के विपुल अध्यात्मवादियों में जोड़न्दु सबसे पुरान हैं, उनकी रचनाएँ उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियों की अभिव्यक्तियाँ हैं एक विपुल अध्यात्मवाद के एक छोर पर जोड़न्दु हैं और दूसरे पर सरहपाद। जोड़न्दु बाह्य ब्राह्मण के घोर विरोधी हैं, वह पारिभाषिक शब्दों का अध्यात्मपरण भ्रम करते हैं। 'परमात्म प्रकाश' और 'योगसार' इनके प्रामाणिक उपलब्ध ग्रन्थ हैं।

मुनि रामसिंह

जोड़न्दु की परम्परा के हैं। यह भावुक और उग्र अध्यात्मवादी थे। इनका अनुमानित समय १०वीं और ११वीं के मध्य है। शव घम और ताजिक पारिभाषिक शब्दों का इन्होंने खुलकर प्रयोग किया है। रुढ़ियों, धार्मिक ब्राह्मण और पाण्ड के यह कटु आलोचक थे। अपभ्रंस साहित्य के कुछ समीक्षक इस घारा की जन रहस्यवादी घारा कहते हैं। असल में भारतीय चिन्ताधारा के विकास के बारे में जो भीसिसे प्रस्तुत की जाती रही हैं वे ही गलत हैं। वह एक ही चिन्ता का स्वाभाविक विकास न होकर नाना चिन्ता प्रतिचिन्ता की क्रिया प्रतिक्रिया का परिणाम है। ऐसा समझा जाता है कि रामसिंह राजस्थानी थे परन्तु विशुद्ध अध्यात्मवादी नहीं के नहीं होते। विशुद्ध अध्यात्मवाद का एक रूप उपनिषदा में देखा जा सकता है परन्तु उसमें चित्तन प्रबल है जबकि मध्ययुगीन अध्यात्मवाद में अनुभूति। पाण्ड दोहा' का भ्रम है—'दोहो का उपहार' या दोहो में प्रतिपादित आध्यात्मिक विचार। इसमें शक्तियाँ हैं उपदेश अयोजित और प्रतीक। और समग्र प्रतिपाद्य है अनुभूति के माध्यम से आत्मा का साक्षात्कार करना। हिन्दी के कुछ विद्वान आनन्द्य युग को अतिविरोधी का युग मानते हैं और कुछ दो विरोधी वाक्य प्रवृत्तियाँ का। कुछ इसमें दो

के मिलन का युग मानते हैं। मेरे विचार में यन्, दो व्यवस्थाओं या स्रष्टृतियों के सघन का युग न होकर—जो दृष्टिजोषा व सघन का प्रतीक वाच्य है। यह सघन त्रिगी भी स्रष्टृति और त्रिगी भी युग में सम्भव है। गुह्य परवर्ती संतनाध्य सागा के सदन में—विशुद्ध अध्यात्मवाणियों का प्रणय यह है कि उद्दान आलोचनात्मक दृष्टि कोण लिया, परलोचन को बजाय जीवन में भुक्ति की बलना की आसक्ति से ऊपर उठने का धरपू व समागा लियाया, आत्मा-परमात्मा के मिलन के लिए प्रमी प्रपमी की बलना की सम्प्रदायवा और धार्मिक आहम्बरा का गुना विरोध लिया।

देवसेन

ससली सकयधम्म दोहावार कीन है ? यह निणय नहीं किया सकता। कुछ विद्वान इसका लेखक देवमन को मानते हैं जब कि कुछ सम्मीचद्र को। देवमन—जसा कि वृत्ति के नाम से ही जाना जा सकता है कि थावर धम का उत्तरण करते हैं। वह धम के आचरण पक्ष के बरि हैं और धम का उद्देश्य उनके लिए लौकिक समृद्धि और प्रेमता प्राप्त करना है। यहां कारण है कि पुण्य और दान का बड़ा आनपव महत्व उ दोने प्रतिपादित किया है।

दोहा कोश-गीति

सिद्ध सरहपाद

सरह भणइ जग वाहिअ आलें ।
णिअ सहाव ए लक्खिअ नालें ॥१॥

करुणा सहित भावना

अहवा करुणा केउल साइअ ।
सो जमन्तरे मोम्ख ए पावअ ॥
जइ पुण वेण्णमि जो जण साक्कअ ।
एउ भव एउ णिव्वाणें थान्ऊअ ॥२॥
जइ पच्चक्ख कि भण्णे कीअइ ।
अहवा भाण अघार साधिअअ ॥
सरह भणइ मइ कड्ढिअ राव ।
सहज सहाउ एउ भाराभार ॥३॥

चित्त

चित्तेक चित्त सअल बीअ भज णिउराण जम्म त्रिपुरति ।
त चित्तामणिरुअ पणमइ इच्छाफलदेइ ॥४॥
यम्मइ कम्मेण जणो कम्मत्रिमुक्केण होइ मणमुक्को ।
मणमोकरेण अणुअर पाणिउनइ परम (णि) वूण्णें ॥५॥

- १ सरह कहते हैं कि दुनिया भूठ म बह रही । मूल अपना स्वभाव नहीं जानता ।
- २ जो केवल करुणा की साधना करता है वह जमातर म भी सुख नहीं पाता । जो जन दाना को साध सकता है वह न निर्वाण म थकता है और न ससार मे ।
- ३ यदि वह प्रत्यक्ष है तो ध्यान से क्या करिण । अथवा ध्यानाधकार को माधिण । सरह कहते हैं म पुकार कर कहता हूँ कि सहज स्वभाव न भावरूप है न अभाव रूप ।
- ४ चित्त एक है वह सबका वागण है जम और निर्वाण दोनों उसम चमकते हैं । इच्छाफल स्वरूप उसे नमन करो व इच्छाफल देता है ।
- ५ मम से जन चयता है नममुक्त होन पर, मन मुक्त होता है और मन की मुक्ति से ही पाता है जन मोक्ष ।

जाय ए अण्ड पर परिआणमि ।
 तार कि देहाणुनर पावमि ॥
 अण्ड कहिउ भानि गु भाया ।
 अण्ड अया पुगहि ताया ॥२०॥
 मिअरमत्त ए मिअदि लिण्ड ।
 अण्ड दुरन्त गु पाण्डो-छप्पड ॥
 अण्ड जोड मूत मगत्तो ।
 मिअर गु पाण्ड मिअरमत्तो ॥२१॥
 पदिअ मण्डल मय पायाणुअ ।
 देहदि बुद्ध पमत्त गु नाअणु ॥
 अमणुगमणु गु अण्ड वि माण्डिअ ।
 तउ गिलान भण्ड हउ पाण्डिअ ॥२२॥

सपज अयस्या

जत्तः चित्तद्विगुणः तत्तदं ग्राह्यं मन्थं ।
 अणु तरंग कि अणु जनु भय-मम स मम मन्थ ॥ ३॥
 ए तम पाण्ड पुण्ड कहड, एउ त पुण्ड मीम ।
 महन महाग हलें अमिअरम, कायु कहिउड काम ॥२४॥

- २० जब तक नही जानें अणु पर का तब तब वरा अनुतर एड का पा मरगा है । एगा कहा गया है इसम भानि गरी उर आना आया का पदवान सता है ।
- २१ विषय का भाग बरता है विषयों म विषय गरी हाना समन ताहता परनु पाना का तहा एगा अय प्रकार पागा मूत का मगाता है विषय म रमता हुआ ना उमम आगमन एहा पाता ।
- २२ पाण्ड मय पाण्डा का अय म्यान करता ^१ परनु एड म वगन बुद्ध का नही जानता इसा ॥ आना जाना नही मित्र फिर ना निअर अणु का पदिउ कहता है ।
- २३ महन प्रकथा—जब तक जिन चमकता है तब तब मन्थ नही जाना जा सक्ता क्या तरंग अणु है आर पाना अणु है मन्थ मगार घोर मूय दानों व ममान है ।
- २४ त अय गुण बचा म वता है घोर त अ विषय उय ममम मरता है । ह सथा । महन स्वनाय अमन रस है वह मिमग कहा जाय ।

जत्तइ पइमइ जलेंहि जलु, तत्तइ समरसु होइ ।
दोस गुणाअर चित्तता वढ पडिअक्सु ए होइ ॥ २॥

रिद्धि सिद्धि इलें वेण्णि न जाज्ज ।
पाप पुण्य ठहि पाइहु वाज्ज ॥
सो अ (१)गुत्तर बुझहि जयें ।
सरह भणइ जग सिज्जइ तयें ॥ २६ ॥

ऐहिकतावादी कोण

एथु से सरसइ सोउणाह, एथु से गङ्गासाअरु ।
माराणसि पयाग एथु से चाइ दिवाअरु ॥ २७ ॥
येत्त पिट्ठ उअपिट्ठ, एथु मइ भमिअ समिट्ठउ ।
देहासरिस तित्थ, मइ सुणउ ए दिट्ठउ ॥ २८ ॥
जग उपपाअणे दुक्ख न्ह, उप्पण्णउ तहि सुहसार ।
उप्पण उप्पाअ णहि लोअ ए जाणइ सार ॥ २९ ॥

बुद्ध नि वप्रणें एत्तवि धम्म ।
लोआचारें एत्तवि धम्म ॥
समल तत्त सहायें देक्खइ ।
लोआचार जे तहि उपेक्खइ ॥ ३० ॥

-
- २५ जितना जल जल में समा जाता है, उतना ही समरस होना चाहिये, दोष और गुणों का आकर चित्त तब विपरीय नहीं होता ।
- २६ इसका अर्थ सिद्धि और सिद्धि दोनों से काम नहीं । पाप पुण्य पर बल्य पड़े । यही अनुत्तर को ममक सनता है और यही तब सिद्ध हो सकता है—ऐसा कहते हैं ।
- २७ यहा (१) सरस्वती है, यही मायनाथ है यही है वह गंगासागर, यही है माराणसी और प्रयाग, चंद्रमा और मूरज ।
- २८ यह क्षेत्र पीठ उपाठ, में समाधि पर नटना । दह ४ समान तीर्थ, न मने देगा और न मैन मुना ।
- २९ जग में उत्पन्न होने में बहुत रुच है उत्पन्न होने पर ही सुखमार हैं उत्पन्न और उत्पन्न कुछ नहीं है, दुनिया यह तरह मार नहीं समझती ।
- ३० शास्त्र में बाप लो यही धर्म है लोआचार में यहा कम है जो समस्त लोआचारों को अपने स्वभाव में देखता है तब वह लोआचार की उपासना करता है ।

सहजयान

जइ पमाण सिद्धि रस यइ लइत भेउ ।

जइ पण्डाल घर सुखइ नअगिण लगइ लेउ ॥३१॥

सहानुभूति

विणय-यशस पणिज्जहु मा-ये ।

सरह भणइ मइ कहिअउ या-ये ॥

सहनें सहन यि जाहिअ जये ।

अचित्त चोण मिअइ त-र ॥३२॥

शून्य निरजन

सुण्ण गिरज्जण परम प- जुद्धणोमाअ महार ।

भारहु चित्त महायता, जउ गुमिअउ जाय ॥३३॥

परमपाद साधना

सुण्णहि मग्गे सुण्ण पउ ।

तहि म-याण पइसरह ॥

म-य धम्म ज न्वसम ऋटमि ।

ममम महाये चीअ दट्ठीहमि ॥३४॥

सरह भणइ पइ दुइ पारहु ।

तुरिअ दुअ मिअु गियारहु ॥

एउ धर टटिअ महिला मणु मा ।

एउ गु नी मइ भल सदि कइमा ॥३५॥

-
- ३१ यन्नि प्रभाव ग या बुद्धि-ग ह शून्य रहस्य ज्ञान दिया है फिर यन्नि बहान के घर भी लाता है ता ह शून्य वा मा गाय नहीं लाता ।
- ३२ जिनपर-बुद्ध व बहु वषन मच्च ममना । सरह कहता है कि मने बीचबर ही यह कहा है । जब महज न मात्र का ज्ञान दिया अविन्य योग में तुम तनी सिद्ध हो गए ।
- ३३ शून्य निरञ्जन परमप- है स्वप्न तु-य स्वभाव । चित्त की इसी स्वभावदा का ध्यान करा कि जब तब वह नष्ट न-ग हाता ।
- ३४ शून्य न शून्य प- है द- मधान करत दूष प्रव- करना चाहिए, सब तत्वों की जो शून्यता बना लन है और स्वभाव न चित्त का शून्य सम कर लत हैं ।
- ३५ इसमें ही दातों की जान हा तु-न दु-य और मृ-नु का दूर करो । इसी घर में स्थित महिमा अनुप-न, ह मया कम यह सिद्धाद नहा दता ।

पासें पास भगन्ते अन्ध ।
 सरह भणअ तसु घरिणी खेच्छअ ॥
 साद के खादउ सअन जगु ।
 सद् का ए केणनि खाद ॥३६॥



३६ पास पास रहते हुए घूमते हुए भी सरह कहते हैं, उस घरनी को नहीं चाहते ।
 शका ने ही सब जग खा लिया, शका को कोई नहीं खा सवा ।

जोड़-दु

गड मसारि वसताह सामिय, कानु अणुतु ।
 पर मड रि पि ए पत्तु सुहु दुस्सु नि पत्तु महतु ॥१॥
 जसु अमतरि जगु वसड, जग अमतरि जो नि ।
 जगि नि वमनु रि जगु नि एरि मुणि परमपउ मो नि ॥२॥
 अप्पा जणियउ पेण ए रि अप्पे जणित ए कोइ ।
 दव्य सहाये णिचु, मुणि, पणउ रिणमइ होइ ॥३॥
 जीरह् कम्म अणाइ निय जणियउ कम्म ए तेण ।
 कम्मं जीउ रि जणित एरि, दोहि रि आइ ए जैण ॥४॥
 यधु रि मोस्सु रि सयनु, निय जीरह् कम्म जणेइ ।
 अप्पा विपि रि कुण्ड एरि णिच्छउ णउ भयेइ ॥५॥
 देहह पम्बिजि जर-भरणु मा भउ जीव करेहि ।
 जो अनरामरु वसु परु, सो अप्पाणु मुखेहि ॥६॥

-
- १ सामिय—स्वामी कि पि ए—बुद्ध भी नहीं । यो रि—वहा द्रव्यमहावे—
द्रव्य व स्वभाव म अनाद—अनादि । जणियउ—जनित उत्पन्न किया वृणुद
—करता है । निच्छउ—निश्चय स । भणु—कहता है ।
 - २ जगवे भीतर जग रहता है और वा जग व भीतर रहता है, लकिन जो
जग व भातर रहकर भा जग म नहा रहता उभी को परमपउ मममो ?
 - ३ आत्मा को जिसा न जन्म नहीं लिया, और न आत्मा न किसी को उत्पन्न
किया द्रव्य स्वभाव म वह निय है पयाय म वर अनित्य है ?
 - ४ जीव वा कम अनादि है हे जाव ? उमन कम पण नहीं किया कम ने भी
जीव पण नहीं किया इसलिए दोनों आदि नहीं हैं ।
 - ५ जीव वष और मोल दोना कम करता है आमा बुद्ध नहीं करता यह
निश्चय स कहा जाता है ?
 - ६ पम्बिजि—दन्तर वसु—हृ अणुणु—अणु को ।

मेल्लिनि सयना अमलडी, जिय, शिर्चिचतउ होइ ।
 चित्तु शिवेसहि परमपण, देउ शिरजणु जोइ ॥७॥
 जोइय, शिय-मणि शिम्मलए, पर दीसइ सतु ।
 अवरि शिम्मलि घण रहि५ भाणु जि जेम पुरतु ॥८॥
 राए रगिए हियगडए देउ ए दीसइ सतु ।
 वण्णि मइलए त्रिनु निम, ओइउ जाणि शिभतु ॥९॥
 जहि भागइ तहि जाइ जिय, जं भागइ करि न जि ।
 केम्बहि मोम्बु ए अत्थि पर, चित्तह सुद्धि ए ज जि ॥१०॥
 सिद्धिह केरा पयदा, भाउ बिसद्वउ एककु ।
 जो तसु भागइ मुणि चलाइ, सो किम होइ विमुक्कु ॥११॥
 बुम्भइ सत्यइ तउ चरइ, पर परमत्यु ए वेइ ।
 ताए ए मु चइ जाम एधि इहु परमत्यु मुणेइ ॥१२॥
 चेल्ला चेल्ली पेलियहि तूसइ मूढु शिभतु ।
 पयहि सज्जइ शाणियउ घगइ हेउ मुणतु ॥१३॥
 सता विसय जु परिहरइ, बलि किज्जउ हउ तामु ।
 सो दइवेण जि मुडियउ, सीसु एडिल्लउ जामु ॥१४॥
 मोक्खु म चितहि? जोइया, मोम्बु न चितउ होइ ।
 जेण शिरद्वउ जीगडउ मोम्बु करसइ सोइ ॥१५॥
 'परमपयास'

शिम्मलु शिक्कलु सुद्ध जिणु रिण्डु पुद्धु सिय सतु ।
 सो परमप्या जिण भण्डिउ पद्धउ जाणि शिभतु ॥१॥

-
- ७ अवकाशी—अमल । शिर्चिचतउ—निश्चित ।
 ८ घण रहिए—घन रहित अवरि—भागात् भाग, पुरतु—वचनता है ।
 १० केम्बहि—किसी भी तरह चित्तह—चित्त को ।
 ११ सिद्धिह केरा—सिद्धि को वा विमुक्कु—विमुक्त ।
 १२ सत्यइ—‘गान्धो’ को । वेइ—जानता है । (वर्ति)
 १३ तूसइ—सतुष्ट रहता है, शा शियउ—गान्धी, हेउ—इतु धारण ।
 १४ मना—विद्यमान । बनि विज्जउ—बनिहारी करता है ।
 १५ करेसइ—करेगा ।

जो परमप्पा मो जि हउ, जो हउ मो परमप्पु ।
 इउ नाणेविणु, जोडया, अणु म करहु विषयु ॥२॥
 जाम य भावहि, जीव, तुहु, णिम्मल अप्प सहाउ ।
 ताम य लभइ सिय गमणु जहि भावइ तहि जाउ ॥३॥
 यउ तउ सत्तमु सीउ निय ण सत्तइ अन्यथु ।
 जाय य जाणइ इत्थ पक्क सुद्धउ भाउ पविउ ॥४॥
 ताम पु-तित्थइ परिभमइ, धुत्तिम ताम करेइ ।
 गुरुहु पसाण जाम यथि, अप्पा देउ सुयेइ ॥५॥
 पुण्णि पावइ सग निउ, पावण एरय णिवासु ।
 ये छडिणि अप्पा मुखइ, तो लभइ सिय-वासु ॥६॥
 देहा देवलि देउ निणु जगु देवलिहि णिणइ ।
 हामउ महु पडिहाइ इहु, सिद्धे भिस्व भमेइ ॥७॥
 आउ गलइ एणि मणु गलइ, एणि आसाहु गलेइ ।
 मोहु पुरइ, एणि अप्प हिउ, इम ससार भमेइ ॥८॥
 जेहउ मणु विसयइ रमइ तिसु जइ अप्प सुयेइ ।
 जोइउ भणइ हो चोइयहु लहु णिज्याणु लहेइ ॥९॥
 धयइ पडियउ सयल जगि, यथि अप्पा ॥ मुणति ।
 तहि वारणि अे जीव पुडु, य हु णिज्याणु लहति ॥१०॥
 जइ लोहाम्मिय णियउ बुइ तइ सुणाम्मिय जाणि ।
 जे सुहु असुहु परिचयहि, ते वि हवति हु याणि ॥११॥

२ तो जि हउ—वही म है, जाणविणु—जानवर विषयु—विरत्य ।

४ अप्प सहाउ—आत्म स्वभाव, लभइ—पाया जाता है ।

६ यउ—यत्त, तउ—तप ।

५ धुत्तिम—धूतता पसाएँ—प्रसाद स ।

६ पुण्णि—पृथ्व स । छडिणि—छोडकर ।

७ देहा देवलि—देह-रूपा मी दर, पडिहाइ—प्रतिभासित होना है, भिस्व—भीख भमेइ—भ्रमण करता है ।

८ अप्प हिउ—आत्महित पुरइ—चमकता है ।

९ विगयण—विषया म । गिज्याणु—निर्वाण ।

११ लाहम्मिय—लोह मय गुणम्मिय—स्वर्णमय परिचयहि—छात्र दत्त है ।

ज वड मज्झइ धीउ फुडु, वीयह वडु वि हु जाणु ।
 त देहह देउ नि सुणहि, जो तइ-लोय पहाणु ॥१२॥
 जो जिण सो हउ, सो जि हउ, एहउ णिभतु ।
 मोस्खई कारण जोइया, अप्पु ण ततु ण भतु ॥१३॥
 योगसार

१२ तइलोय—जिलोय ।

१३ णिभत—निर्भान्त ततु मनु—तय मत्र ।

मुनि रामसिंह

गुरु शिष्यरु, गुरु द्विम किरणु गुरु शीघ्र उ गुरु देउ ।
 अप्पा परह परपरहं जो दरिमाउइ भेउ ॥१॥
 उयलि चोपपडि चिट्ट करि दहि सु मिट्टाहार ।
 सयल त्रि देह शिरतथ गय निह दुज्जणि उययार ॥२॥
 मणु मिलियउ परमेसाहो परमेसरु त्रि मणुस्म ।
 त्रिणिण त्रि सम रस हुइ रहिय, पुञ्ज चढायउ करम ॥३॥
 भितर चित्ति त्रि मइलियउ जाहिरि काइ तवेण ?
 चित्ति शिरजगु नो त्रि धरि मुच्चहि जेम मत्तेण ॥४॥
 हत्थ अहुट्टह देउली घालह एहि पयेसु ।
 सतु शिरनगु तहि उमइ शिम्मलु होइ गयेसु ॥५॥
 हउं मगुणी पिउ शिग्गुणउ, शिरनरुगु शीमगु ।
 पम्पहि अगि धमतयह मिलिउ ए अगाहि अगु ॥६॥
 देह गलतह सनु गलउ मइ सुइ धारणा धेउ ।
 तहि तेहइ बढ अउमरहि त्रिरला सुमरहि वउ ॥७॥
 छह दसण धवय पडिय मणह ए फिट्ठिय भति ।
 पक्कु देउ छह भेउ किय तेण ए मोम्बह जति ॥८॥

मुनि रामसिंह — २ उयनि — । चोणडि—चुपकर । चिट्टवरि—चटाकर ।

उययार—उपकार ।

३ त्रिणिण—दोनों । पुञ्ज—पूजा ।

४ भितर चित्ति—भातर चित्त म ।

५ हत्थ अहुट्टह—साथे तीन हाथ का ।

७ मइ—बुद्धि । मुइ—अनि गाम्भ । त—वम । अउमरहि—अवसरहि
 वर । धउ—धय ।

— छह दसण—धवय पडिय—६ दसना व धय म पण दृष्टा ।

पोल्या पदणि मोक्कम् वह मणु नि असुद्धउ जासु ।
 बहुयारउ लुध्वउ एउइ मूल छिउ हरिणसु ॥६॥
 तित्थइ नित्थ भमेइ वढ, घोयउ चम्मु जलेण ।
 एहु मणु विम घोअेसि तुहुँ मइलउ पाव मलेण ॥१०॥
 अगइ पच्छइ वह ण्हिहिं नहि जोवउ तह सोइ ।
 ता महु फिट्ठिय भतडी, अउसु ए पुच्छइ कोइ ॥११॥
 जो पइ जोइउ जोइया तित्थइ तित्थ भमेइ ।
 सिउ पइ महु हिंहिडियउ लहिनि ए सक्किउ तोइ ॥१२॥
 मढा जोउइ देउलइ, लोयहिं जाइ क्रियाइ ।
 देइ ए पिच्छइ अप्पणिय, जहिं सिउ ससु ठियाइ ॥१३॥
 जइ लद्धउ माणिककडउ, जोइय, पुहुनि भमत ।
 वधिज्जइ छिय कप्पइ जोज्जइ एकउ ॥१४॥

देवसेन

दुज्जण सुहियउ होउ जगि, सुयणु पयासिउ जेण ।
 अमिउ रिसें, वासरु, तमिण, जिम मरगउ वच्चेण ॥१॥
 इक्कु वि तारइ भउ-जलहि बहु दायार सुपत्तु ।
 सु परोहणु एककु नि बहुय दीसइ पारहु णितु ॥२॥

- ६ पोल्या पदणि—पापी पद से । बहुयारउ—बघकार । लुध्वउ—
 लुध्वक—शिकारी । मूलछिउ—मूल स्थित । हरिणसु—हरिणों के ।
- १० तित्थइ तित्थ—तीर्थों से तीर्थ मइलउ—मला भतडी—भ्राति ।
- १२ पइ सह—तुम्हारे असा । हिंहिडियउ—धूमता किरा । लहिनि ए सक्किउ—
 पा नहीं सका ।
- १३ मूढा—मूल, लोयहिं—लोगों ने जिहें बनाया, पिच्छ इ—पहचानता । अप्प
 णिय—अपनी । ठियाइ—स्थित हैं ।
- १ सुहियउ—सुहित कल्याण । सुयणु—सुजन, सज्जन । अमिउ—अमृत । वासरु
 दिन । मरगउ—मरकत । वच्चेन—काव से ।
- २ बहुदायार—बहु देने वाला दाता । सु परोहणु—नाव ।

धम्म-सरुणें परिणुमइ चाउ वि पत्तह दिण्णु ।
 साइय जनु मिप्पिहि गयउ मुत्तिउ होइ र'यण्णु ॥३॥
 जइ गिहत्थु पाण्णु रिणु नगि य भणिग्गइ कोइ ।
 ता गिहत्थु पसि वि इयइ जं धरु ताह वि होइ ॥४॥
 ज'दिवाइ त पावियइ पउण धयण्णु तिसुद्ध ।
 गाइ पइण्णइ खड मुमइ रिं ण पयच्छइ दुद्धु ॥५॥
 धम्मं जाणहिं नति णर, पाउं जाणि वट्ठति ।
 घर घर गेहोपरि चढहिं वृष-म्बणय तलि जति ॥६॥
 धम्मं इरुउ वि बट्ट भरइ, मइ भुक्खियउ अहम्मु ।
 बट्ट धट्ठयइ छाया करइ तानु महइ मइ धम्म ॥७॥
 एक्क वि इदिय मोक्खलउ पारइ दुक्ख मयाइ ।
 जसु पुण्णु पंच वि मोक्खला तसु पुच्छिअइ पाइ ॥८॥
 काइ उट्ठइ जपियइ, ज अण्णु पडिबूतु ।
 काइ मि परट्ट ण त करइ ण्णु वि धम्महु मूल ॥९॥
 मण्णुयइ विणय विगज्जियइ गुणु मयत्त वि णासति ,
 अह सरनरि विणु पाणियइ कमलइ केम रहति ॥१०॥
 सावगायार

-
- ५ पावियइ—पाया जाता है, गाइ—गाय पदण्णु—ग्री है खड मुमइ—खण मूला । पयच्छइ—ग्री है दुद्धु—दूध ।
 ६ जाणहिं—याना म, जति—जाति हैं पावें—पाप स, वट्ठति—ल जाते हैं बहन करते हैं ।
 ७ बट्ट भरइ—बट्टों का तारता है स—स्वय बट्ट—बट्ट, बट्टयइ—बट्टों को । छाया करइ—छाया करता है धम्म—धाम ।
 ८ मोक्खलउ—मुक्त दुक्खमया—सगलों के पुच्छिअइ काइ—पूछना क्या ?
 ९ काइ उट्ठइ जपियइ—बट्ट कहन स क्या ?
 १० विणय विवज्जइ—विनय स रहिता के । कम रहति—कम रहत हैं ।

अब्दुलहमरन (अद्दहमान)

अथ वर्णन

गण गिग्दागमि पहिय एणु जं पयसिय
 करयि करजुलि सुद समुद मद एियमिय
 सणु अणुअधि पनुटि थिरद दयि नयिप सणि
 यलियि पत्त एिय भुयणि थिसदुल थिदलमणि ॥१॥
 जन जीदद निम थंचनु एदयनु लदमदद
 सदतदयदि धर तिदइ ग तेयह भग् सहइ ।
 अइउदउ योमयलि पदवणु ज यद,
 तं मंन्यरु थिरदिगिदि अणु परिसउ दइ । ॥
 तइ पत्तिहि संसंगिदि नूयानसिरिय ।
 पीरपति परियसयइ थियउ थिरतरिय ।
 लइ पल्लय मुलति समुटिय, करण मुनि,
 इउ क्रिय थिरमादर पहिय सादर वणि ॥ ॥

तगु घणुमारिण चण्णिण अलिण निज्जिणि चन्चति ।
पुण नि पिण्ण न उन्हवद पिण्णिहग्गि निभनि ॥५॥

वर्षा

यगु मिल्हणि सलिलद्धु तम्सिहरिहि चड्डिउ
तद्धु वरिणि सिद्धिडिहि वर सिद्धिहि रड्डिउ ।
सलिल निरहि सालुरिहि फरसिउ रसिउ सरि
कलयन्तु किउ कलयठिहि चडि चूयइ सिहरि ॥५॥

मन्धरभय सचड्डिउ रनि गोयगणिहि,
मणहर रमियइ नाहु रगि गोयगणिहि ।
हरियाणु धरयलउ वयणिण महमहिउ
त्रियउ भगु अगगि अणगिण मइ अहिउ ॥६॥
एणमेहमालमालिय एहम्मि सुरचाय स्तदिसि पसरो ।
घण्णन जम इ दोइएहि पिय पायस दुसइ ॥७॥

शरद

सोइइ सलिलु सरिहि सययत्तिहि
यिणिह तरग तरगणि जतिहि ।
ज हय हीय गिभि एण सरयइ
त पुण सोइ चडी एण सरयइ ॥१०॥

४ लोग शरीर को वपुर् और बदन से व्यय चर्चन करत क्याकि विरहामि तो प्रिय ही बुझा सक्ता है ?

वर्षा — ५, बगुले सरोवर छोड़कर तह गिरतो पर चड गए नाचते हुए मोर झिझरों पर बोत उठे मडक लाताबो म बडोर झांझ कर रहे हैं झांझूओं पर बोनलें बोत रही हैं । ६ मच्छरो के डर से गादा का झुण्ड ऊँची टेंकरी पर चड़ गया है गोपिनी अपने पतिपों के साथ सुंदर गीत गा रही हैं बदनलों से हरीभरी धरती महक उठी है ७ कामदेव प्रग प्रग को चर कर रहा है । ८ नव भेषमालाओं से मुक्ति झांझ और नाल लान दिना के इच्छा का प्रसार । और बहुगिरी से प्रत्यन टका हुआ पावन एवम प्रह्ला है ।

शरद — १० समयति — १ कमनान्दो से । बहनें हुई नदी दिदिन नदी से । श्रीम ने बोन झान कर छोन लो लो, यह नद डर पर फिर चड

हृदि विन्दुविन्दुविन्दुविन्दु रम्भु,
 त्रिंशत्कम्पयन् मुमणोदहं सुन्दरम् ।
 वल्लि भुवण भविय सयगनिदि
 गयजनरिन्नि पदिन्निनय निधिदि ॥११॥
 निम्नतः पदिय जलिदि मित्रनिदि
 निम्नतः न्यूनोपदि मन्त्रनिदि ।
 सारस सरसु रमदि दि मारमि ।
 मद् पिर विण्णु दुष्णु दि मारमि ॥१२॥
 त्रिंशु भाग्यलि तुरविक तिभरिन्धु ।
 पु पुमि चंदरि तणु पञ्चरिन्धु,
 सोरददि वरि लियदि विरिन्धिदि,
 दिव्य मणोदह मेत गिरिन्धिदि ॥१३॥
 धूय दिति गुरुमसि सद्गतिदि,
 गोत्रामणिदि तुरंग चलतिदि ।
 तं जोड्मि हृत् क्षिय उन्निनय,
 योय सहिय मद् इन्दु न्निनय ॥१४॥
 दारय पु वराल संजय वर,
 ममदि रति पायन्तय सुन्दर ।
 सोरददि सिञ्च वरुणि जण सग्यिदि,
 परि परि रमियद् देह पलतिदि ॥१५॥
 दितिय लिसि दोशालिय दीव्य,
 एवमसिरद् सरिस वरि ली न्यय ।

११ वन्दुवि—वन्दन वा वृद्धि—पात्रर ।

१२ हे पण्डित, पानी कम हान ग मे छोवनी हैं जुगुप्सो के कमवन स मे गिर हो उठती ह । हे सारस तुम क्या इग प्रकार सरग बोना? मुभ पुरान दुग को माद दिताने हो ?

१३ मान पर चटाना तिनर वर, वगर चान स सरोर राजा वर सोरद हाय म लेव पूमती हैं और न्यिय सुन्दर गीत गाती हैं ।

१४ म्निपां पेरा वनावर जाला १ बाजा वजाती गतिवा म पूमता हैं तगतिवा य साथ सब धामित हैं पर पर म मासना की रेखाए लोभित हैं ।

तणु घणुमारिण चदणिण अलिउ जि मित्रि चन्ति ।
पुण थि पिण्ण थ उद्दवड पियविहग्गि निभनि ॥४॥

वर्षा

घणु मिल्हदि मलिनद्धु तम्सिहरिदि चडिउ
तद्धु करिदि सिद्धिदि यर सिहरिदि रडिउ ।
सलिल निगदि मालरिदि परसिउ रसिउ सरि,
पत्तयलु मिउ पत्तयठिदि चडि चूयह मिहरि ॥५॥
मच्छरभय सचडिउ रनि गोयगणिदि,
मणहर रमियह नाहु रनि गोयगणिदि ।
हरियाणु धररलउ वयणिण महमहिउ
रियउ भणु अंगणि अणणिण मह अहिउ ॥६॥
एउमेहमालमालिय एहम्मि सुरचाउ स्तदिसि पमरो ।
घण्डन नम इ दोइणदि पिय पारस दुमह ॥७॥

शरद्

मोहह मलितु मरिदि मयरत्तिदि
त्रिदि तरग तरगणि चतिदि ।
ज हय दीय निभि एउ सरयह
त पुण मोह चढी एउ मरयह ॥१०॥

४ लोग गरीर को गहूर और चन्दन से यथ चर्चित करत, क्यापि निरहासि तो प्रिय ही कुमा सनता है ?

वर्षा — ५ बगुल सरोवर छोटकर तू गिररा पर चढ़ गए तावते हुए मोर गिररा पर बोन उठ, मन्त्र तालावा ॥ बटोर आगज कर रहे हैं, आगजना पर कायलें बोल रही हैं । ६ मच्छरा के डर से गाया का भुण्ड उची टपरा पर चढ़ गया है गावियाँ अपना पतिया व साथ सुन्दर मोत गा रही हैं बदमों से हरीभरी धरती महज उठी है ? कामन्त्र अग अग को चूर कर रहा है । ७ नव मेघमालाया ॥ गुफित आकाश और लाल लाल निया म इन्द्रपनुष का प्रगार ! और बट्टिया म अत्यन्त डका हुआ पावस एतन्म असह्य है ।

शरद् — १० समयसिन्ही — गनपत्रा कमननिया म । बहुनी हुई ननी विविध तरंगों से । आध्या न नवशरद् की जो घोमा आहत कर छोन ली थी, वह नव शरद् पर फिर चढ़ गई ।

ह सिद्धि वंदुवि मुट्टि रसु,
 मित्र वनयु मुमणोदर सुरदसु ।
 उदलि भुवन भरिय मययनिदि
 मयजनरिन्नि पटिलिय निधदि ॥११॥
 मित्रन पदिय जलिहि मित्रनिदि
 मित्रन के मानोपदि तननिदि ।
 सारस मरसु रमदि कि सारमि ।
 मह धिर मित्रण दुबनु कि मारमि ॥१२॥
 तिन भानयलि पुरविठ तिनरिद्व ।
 कु कुमि पंदरि तनु चरपकिर्य,
 सोरंदि करि लिचदि फिरिनिदि,
 दिव्य मणोदर गेउ गिरतिहि ॥१३॥
 धूर दिति गुरुभनि-सइतिहि,
 गोधामणिहि तुरंग चलतिहि ।
 तं जोइरि हउ थिय उं शिनिय,
 थोय सहिय मह इय निनिय ॥१४॥
 दारय पु डवाल तंदय कर,
 भमहि रथि पायनय सुंदर ।
 सोहदि सिंगन तरुणि जण सभियदि,
 परि परि रमियइ देह पलतिहि ॥१५॥
 दितिय थिमि दोवालिय दीयय,
 थयसमिरह सरिम परि ली अय ।

११ वंदुवि—वसन को घुट्टि—पांवर ।

१२ हे पथिक, पावो कम होने से मे छोड़नी है दुःखियों के समकन मे मे मित्र हो उठती हू । ह सारस तुम बना एक प्रकार सारस बागवत मुन पुरान दुःख का मान निलाते हो ?

१३ मान पर चरनाला तिन कर, बेगार चरन से सारस सदा कर मारह हाथ मे सवर धूमता है धोर निव्य सुन्दर गीत गाती है ।

१४ स्त्रियों केरा बनाकर नच ॥ है बाजा बजा ॥ मन्त्रिया मे पूजता है चरगिया के साथ राज गोमिन् है पर पर मे घासना की रसाएँ शोभित हैं ।

मददि मुणु तरुण जोइमगहि,
मदिलिय निति सलाइय अस्मिहि ॥१६॥

इमि निति केलि करदि मपुनिय,
मद पुणु रयणि गमिय उन्निनिय ।
अन्दइ धरि परि गीउ रयनउ
इकहु भमगु कट्ट महु न्निनउ ॥१७॥

नि तदि देमि खहु पुरइ जुइ गिमि गिम्भन चन्ह,
अह पनरउ न कुणनि हम फल मेनि रजिन्ह ।
अह पायउ खहु पढइ सोइ सुनलिय पुण राइण,
अह पचमु खहु कुणइ कोइ पागलिय भाइण,
महमदइ अहय पन्नुमि खहु ओसमित्त, पण कुसुमभरु,
अह मुणित पदिय । अणुरमित पिउ मइ समइ जु न
मरइ घर ॥१८॥

हेमन्त

दीह उमामिहि दीह रयणि मह गइय गिरस्तर ।
आइ ख शिइय । णि तुम्ह सुयरतिय तस्वर ।
अगिहि तुह अलह त तिट्ठ । करयन परिसु ।
ससोमित्त तणु हिमिण हाम हेमइ मरिसु ।
हेमति फत । तिलतवियह जड पलुटि नासासिहसि,
त तइय मुक्ख । खल । पाइ मइ मुट्टय गिगन नि
आगिहमि ॥१९॥

१८ दीवाना म रात म दीपदान करती है नमी चन्द्र देवा व समान हाथ म लवर दाता म मसार को आनोवित करती है महिचारे आँखो म सवाई स वाजन गगना हैं । १७ तम प्रकार कोई पृथ्वती जान करती है मैं तुम म रात तिताता हू घर घर मुन्दर गीत है एक अनेका मुम सारा तुम दिया ।

हमन्त — १९ हू भूय, लम्बा उमामों म लम्बा रात बान गह, हू नित्य चार तुम्हारी यात्र करन तू नीद नही आन र नीठ तुम्हारा हाथा का स्वयं न पाने म हमन्त न मर अम अम मुखा डान जम छूट का । तू प्रिय यदि हमन्त में भा न । आन और बिनाप करना हूइ मुम आनासु नहा तन ता क्या र तू मर मरन पर आनाग ।

निगिर

साधु-लपनरदिय अमेधिय मउगियण,
 निमिरारिय निमा य गुदिय भूडण मरिण ।
 मगा मगा पधियद रा पउसिदि दिन दरिण,
 उज्जाविदि टेरवरिय अमोमिय सुसुमण ॥२०॥
 उरुगिदि पन पउगियण निप पेनो हरिदि,
 निमरि भइण किउ नला मरान् अग ीहरिदि ।
 उरुगुजदि पेनोरसु अमिम 'र' नुयण,
 उज्जाणद उमिमिदिपि गु वीरद निपि मरण ॥२१॥

वसन्त

महमदिउ अंगि वहु ग रमोउ
 ल तरणि (तरणि) पनुमउ निमिर मोउ ।
 तं विभिन्नपि मउ मउमदि महीय,
 लंकोउउ पदियउ अनाहीय ॥२२॥
 निवदेन रण परविचरीदि,
 अदियपर लियण लमंनरीदि ।
 मरु वियणु वाइ मदि मीयाणु,
 लण्ड जणइ मीउ लं निवइ तंनु ॥२३॥

निगिर—२० उज्जाविदि—उज्जा म जो सुसुम का अभी तर नही मूला था, वह
 भा भाइ मंगल रह गया है ।

२१ पतिमा पतिमा को वनियर म छाटवर लीठ के दर स अमियर ॥ पाप की
 तरण म है मोतर हा कुजामो न मोरारण का धामन स रही है । उज्जा
 म पहा क नीच अब कोई नहीं सोना ।

वसन्त—२२ वहुत स मय आयो स अय अय महान लो मानो लण्णी (तरणि)
 मूय न निगिर का पाउ छा दिया हो, वह दखवर मन मिय सतिपा के
 बीच यह दनाउ पड़ा ।

२३ नयो मजरिया स घरती पर पणम मिरता है वह अयिर लण उठता है, ठण्डा
 हुवा घरनी को लीतन मरता हुई वदनी है वह ठण्ड पण पाउ वरनी जख
 घनाय फनानी है ।

नमु नामु अलिक्कउ पदु लोउ,
 गुट्टुदरु मणुद अमोउ मोउ ।
 वण्णि दण्णि मनयिय अगि,
 साहार गुट्टु गु महार अगि ॥२०॥
 तदि मिहरि मुरत्तय किमणुमाय,
 उण्णरदि भरु जणु विविह माय ।
 अइ मणुदरु पत्तु मणोदरीउ,
 उण्णरदि मरमु महुवर मणीउ ॥२१॥
 चण्णरदि गेउ मुणि करिय तातु,
 नण्णोयइ अउय यसनयातु ।
 पद निविह हारि परिमिन्नरीदि
 एणमुत्तु र महुल सिम्पिणीदि ॥२२॥
 गज्जति तण्ण एणतु रणीदि ।
 मुणि पण्णि गाइ पिअरुन्निरीदि ॥२३॥

मण्णराय म

- २३) बिचरा नाम गानों न झूठमूठ गन ध्यात है वह ध्यात भा एव सणु भा गान दूर नही करता कान्ति द्य म ध्यातों जवात है । सहकार (धामवृत्त) भी धर्मों का सहारा नहीं ग्या ।
- २४) उम्वर निर पर प्रम म सरावार गता धानों बात रही हैं मानों भरत मुनि न विविध भावों का गा रहा हों ध्यान मुत्त वसत क्रतु धामर्द मधुकर भी धान्ते मुत्तर स्वर म बात रह ३ ।
- २५) वउत म वावर उत म वाता का ध्वनि कर गत गदा जा रहा है ओर ध्रुव नाच हा रहा है, मधुवता न गत पहन नूत वनता दूर जिनकी वरपती जिविगिया का नन्दन हा ग्या है १
- ० नवदीवना मणिदां गत्र रत्न ३ -- ७२ पुनरु प्रिय का ध्याता गन्त वानी उम्वर एक भाषा प्या ।

दोहा संग्रह

हेमचन्द्र

(१) वीर

एइ ति घोडा, एइ थलि एइ ति निसिआ सग्ग ।
 एत्थु मुणीसिम जाणिअइ, जो नरि गलइ रग्ग ॥१॥
 पुत्तं जाअे करण गुणु अरगुणु करणु मुअेण ।
 जा वप्पी की भूइदी चप्पिअइ अररेण ॥२॥
 हिअइ जइ वेरिअ घणा, तो रि अग्गि चडाहुँ,
 अन्हाहिं वे हत्थइ, जइ पुणु मारि मराहुँ ॥३॥
 अग्गे योरा, रिउ वहुअ, कायर एअ भणति ,
 मुद्धि, निहालहि गयण यलु कइ जण जोइ करति ॥४॥
 पइ मइ वेहिं रि रण-गयहिं को जय सिरि तम्केइ ।
 केसहिं लेप्पिणु जम परिणि, भण, सुट्ट को थक्केइ ॥५॥
 तुम्हेहि अग्गेहि ज रिअउ दिट्ठउ वहुअ जणेण ।
 त तेउइउठ समर भरु निजिउ एक्क सणेण ॥६॥
 जाम न निवडइ कु भ यडि सीइ चवेड चडकऊ ।
 ताम समत्तइ मय गलइ पइ-पइ धउअइ टक्क ॥७॥

-
- १ एइ ति घोडा=यहा के घोडे । एइ ति निसिआ सग्ग=य हा के पैनी तलवारें ।
 मुणीसिम=मनुष्यत्व । गलइ वग्ग=मोडता है लगाम ।
 २ भूइदी=भूमि धरती । चप्पिअइ=चाप ली गई । अररेण=दूमरे के द्वारा ।
 ४ अग्गि=माकाश । चडाहुँ=जग जाऊ । अन्हा हिं=हमारे भी । वे हत्थइ
 =दो हाथ ।
 ५ जोइ=योत्तना । ६ रण गयहिं=रण में जान पर । जयथी=विजय श्री ।
 को तक्केइ=कोई कल्पना करता है ।
 ७ त तेउइउठ=बहु ततना बढा । समरमट्ट=गुद भार ।

रन जु मीहहो न म अइ ॥ महु गडिउ माणु ।
 मोह गिण्णवय गय हण्ड विप प रस्य ममाणु ॥२॥
 भग्गन् नस्सिअि निअय ननु ननु पमग्गिअ पग्गमु ।
 उम्मिलड ममि रेह निअ ररि करानु पियग्गमु । ॥६॥
 जहि रप्पिअड मरण मग्ग टिअड मग्गोणु पग्गु ।
 तहि तहड मग्ग घट निअहि ननु पयामड मग्गु ॥११॥
 मगर-मयेहि जु पण्णअड देक्खु अग्गारा वनु ।
 अइ मत्त ॥ अत्त कुमड गय कु मड नारनु ॥१२॥
 वनु महारउ हलि महिअ, निअड मग्ग जाणु ।
 अत्थिहि मत्थिहि ह्मिअि रि ठाउ रि फेड्ड तामु ॥१३॥
 महु पनहो गोड्ड टिटअहो रउ भु पडा वलति ।
 अह रिअहिरे अहड अह अत्थग न भनि ॥१४॥
 महु पनहो वे नेमग्ग, हेम्मि म मत्थहि आणु ।
 नेहो ह्म पर अवरिअ जुअनहो करानु ॥१५॥
 प्रिय पग्गहि कर मेअु ररि, छड्ढि नु करानु ।
 ज कागलिय उण्णडा लेहि अमग्गु करानु ॥१६॥
 जड भग्गा पारक्कडा ता महि मग्गु पिअेणु ।
 अह भग्गा अग्गड तग्गा ता त मारिअटेणु ॥१७॥
 पाड तिलग्गी अग्गी, मिअ न्मिअ मग्गमु ।
 ठो रि फटाअ, ह्मड्ड अलिअिअग्गु मग्गमु ॥१८॥
 भल्ला ह्मग्गा जु मारिअ, उडिअि महात्ता वनु ।
 लग्गन्तनु नयामअड, नड भग्गा पग्ग पनु ॥१९॥

- ८ कु नमहि=कु म नड पर । मग्ग वग्ग वग्ग=विट् का वग्ग का उड्ड ।
 मग्गह मग्गह=मग्गह अग्गिअ का । वग्ग वग्ग=वग्ग है नगाडा ।
 ९ उवमिअ=उवमावत । विरवअ=अग्गिअ । पय रक्क=अग्गिअ ।
 १० उम्मिलड ममि रेह=वट्ट रग्ग व ममान वमग्गता है ।
 ११ वग्गिअड=वाग्ग जात्रा है । निअहि=अमग्गु म । पयाम=अग्गिअ कराना
 है । १२ वनु मग्ग—अग्गिअ गय अग्गिअ ररिअ मग्ग । १३ अत्थिहि—
 अग्गिअ अग्गिअ अग्गिअ अग्गिअ ।
 १४ आणु म न्मिअि—अग्ग मग्ग दाता । १५ अग्गिअ अग्गिअ ।
 १६ अग्गिअ—अग्गिअ । १७ पारक्कन्ता—पराए ।

आर्यहि जन्महि अनटि रि, गोरि सु रिज्जहि कतु ।
 गय मत्तह चत्त रुमह जो आभइइ हसतु ॥२०॥
 मग्ग विमाहिउ जहि लहह, मिय तटि देमहि नाहु ।
 रण टुभिस्से भग्गाइ, रिणु जुम्मे न उताहुँ ॥२१॥
 रिह्मि पणदुइ वरुडउ, रिद्धिहि जण सामनु ।
 किं पि मणाउ महु पिअइो समि अणुहरइ न अतु ॥२२॥
 रिहि विण्डउ, पीडतु गह, म वणि, करहि विमाउ ।
 सपइ वड्डउ पेस निव छुडु अगइ उवमाउ ॥२३॥
 एहु जम्मु नगाह गयउ, भइमिरि मग्गु न भग्गु ।
 विक्खा तुरय न नालिया गोरी गलि न लग्गु ॥२४॥

(२) अन्योक्ति

भमर, म रणकुणि रणइ सा निसि जोइ मरोइ ।
 सा मालइ देसतरिय, जसु तुहुँ मरहि रिओइ ॥१॥
 भमरा ऐत्थु रि लिंनइ के रि दिअइडा रिलतु ।
 पण-मत्तलु छाया महुनु पुत्तइ जाम वयतु ॥२॥
 उप्पीहा इइ नोल्लिण्ण निग्गिण धार-इ मार ।
 सायरि भरिअइ विमल ननि लउइ न एक्कइ धार ॥३॥
 कु जरु अनह तरुअरह कोटण थल्लइ हत्थु ।
 मणु पुणु एक्कइ सल्लइहि जइ पुच्छइ परमत्थु ॥४॥

- २० आर्यहि जन्महि—इम जन्म म दूसरे जन्म म जो आभइइ हसतु—मिड जाय ह मताहूमा । २१ लम्ग विमाहिउ—लम्ग व्यवसाय । जहि लहह—जहा गप्त कर । २२ रिद्धि पणदुइ वरुडउ—उन क नष्ट होने पर वाक्ता । रिद्धिहि—रुद्धि म । जन-सामनु—जन सामान्य । २२ किं पि मणाउ—बुद्ध योडा । महु पिअ-हा—मेरे प्रिय स । ससि अणुहरइ—चंद्रमा समा मता करता है । २३ रिहि विण्डउ—भाग्य नाचे । पीडतु गह—ग्रह सताए । वस जिव—वश्य का तरह । छुडु अगइ उवमाउ—जरा व्यवसाय तो बन जाय । २४ उय गया मरा यह जन्म । न योद्धा की थी मिली, न तलवार भग्न की व तोखे धोने पर चटा, और न गोरी क गले लगा ।

- १ एणु—अरण्य जगत म । देम तरि अ—देशान्तरित कर दी गई ।
 २ निवड्ड—नीम पर । वयतु—कन्ध । ३ उप्पीहा—पषाहा । निग्गिण—निस्य । ४ कोट्टेण—कोठुन स । हत्थु थल्लइ—हाथ डालता है । एक्कहि थल्लइहि—एक सल्लकी मता म । पुच्छइ—पूछा हो ।

शुजर, सुमहि म मलडउ मरला माम म मेन्लि ।
 वयल नि पात्रिय विन्नि-वमेण, त चरि, माण-म मेन्लि ॥१॥
 मड तुत्तउ, तुहँ धुम चरहि, वमरेहि पिग्गुत्ताड ।
 पड पिण, धयल, न चडड भरु, म्मइ चुनउ वाड ॥६॥
 धयतु पिग्गुइ सामिथदो गरुआ भरु पिग्गुवि ।
 हउं वि ॥ जुत्तउ दुहु दिमिहि वंडउं दोणिण करेवि ॥७॥
 गयउ सो वसरि, पिअहु जलु भिन्निचतड ॥ रिणाड ।
 जमु केरँ हुमारउँ सुदहु पड ति तिणाड ॥८॥
 तणह तडणी भगि न वि तँ अयड यदि पसंति ।
 अह जणु लगवि उत्तरड अह सह मड मज्जति ॥९॥
 सिरि चडिआ वनि प्पलड, पुग्गु डालड मोड ति ।
 तो वि म्मइम सउणाइ अयराडिउ न करंति ॥१०॥

पड सुग्गाह वि वरतरु
 पिट्टड पत्तत्तणु न पत्ताण ।
 तुह पुण छाया ञड होउ
 वद वि ता तेहि पत्तेहि ॥११॥

जे छड्ठेयिणु रयण गिहि अपउ तदि च-लति ।
 तह मग्गइ विट्ठाउ पग्ग, पुत्तिज्जव भमंति ॥१२॥
 एत्तहे मेह पिअति जलु,
 एत्तहे यडधानल आवट्टड ।
 पेग्गु गहीग्गि मायरहो,
 मग्ग वि वणिअ नाहि ओहट्टड ॥१३॥

- ४, साम म मन्नि—साम मत छोटी । विधि-वमि—आम्य व वग ते ।
- ६ वगररं विगुत्ताड—वगर-गरियाव वर स विन । वाइ चुनउ-इम समय पिन क्या ? हउ दुहु निमि-नीना निगाथा म शुभ क्यों नहीं पोट लिया । जमु केरए-कारण-जिमवी हुवार म ।
- ८ तड-जी भगि ल वि-नीगरा गति नहीं । तँ अयड तडि पडति-यू वि घोषट घाट पर पडत है १ १० गउगाह-पक्षिया वा । १२ अयड यदि पटनति-अपन की न पड डाल जा है । विट्ठाउ-नीव । पुत्तिज्जव भमति-पूर्वे जान हूय भूमत है । १२ घाउग्ग—विद्यमान है । गहारइ-ग मीर । सायरहो-समुद्र वा । वणिअ नाहि ओहट्टड-एउ वणु भी वम नहीं होता ।

सोसउ म सोसउ चिचअ

उअही, वडानलस्य किं तेण ।

ज जलइ जले जलणे

आएण व किं न पज्जत्त ॥१४॥

त तेत्तिउ जलु सायरहो, सो तेउहु पित्थारु ।

तिसहे निवारणु पलु पि न पि, पर धुटठुअइ असारु ॥१५॥

वच्छहे गृण्हइ कलइ जणु, कडु परलप यज्जेइ ।

सो पि महदधुसु सुअणु चिय ते उच्छगि धरइ ॥१६॥

(३) नीति

सरिहि न सरेहिं न सर वरेहिं न पि उज्जाण उणेहि ।

देम रक्खणा होंति वड निवसतेहिं सु अणेहिं ॥ १ ॥

सत्थावत्थइ आलवणु साहु पि लोउ करेइ ।

आदन्नइ मग्गीसडी जो सज्जणु सो देइ ॥२॥

जो गुण गोउइ अप्पणा, पयडा करेइ परस्सु ।

तसु इउ कलि जुगि दुल्लहहो बलि विज्जउ सुअणरसु ॥३॥

सु-पुगिस वगुहे अणुहरहिं भण वज्जे वणणेण ।

जिव महुत्तणु लहहिं, तिय तिय नउहिं सिरेण ॥४॥

दूहइहाणे पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ ।

जिह गिरि सिगहु पडिअ सिल अनु पि चेरु करेइ ॥५॥

- १४ चिचअ—चेत्—सायद । उअही—उदधि—समुद्र । आएण व किं न पज्जन्त—
क्या इतना पर्याप्त नहीं है । १५ सो ते वडु=विस्तार—यह उतावा बड़ा
विस्तार । तिसहे निवारणु—प्यास का निवारण । धुटठुअइ असारु—
भय गरजता है । १६ वच्छहे गृण्हइ—शृणु ऐ ग्रहण करते हैं । पलइ
जनु—लोग फल । कडुपल्लव—कड़व पत्ते । वज्जइ—छोड़ देते हैं ।
उच्छगे धरेइ—उत्सव—गोद म धारण करते हैं ।

- १ सरिहि=नदियो स । सरेहिं=सरो से । मरवरेहिं=सरोवर से । देम
र वण्ण हाति=दश मुन्दर होते हैं । वड=मूख । २ सत्था आलवणु=
स्वस्थ अवस्था वालो से आलाप । आउ नहु=पीडिता को । मग्गीसडी=
ठरोमत यह अभयमान ३ वणि विज्जउ=बलिहारि करता है ४ वणणेण
वज्जे=विश काम से ५ दूह दूर भी म्यान म । पडिउ=पड़ा हुआ
अणु जलु मारेइ=अपन जन को मारता है । सिल=सिला ।

मातु वि लोच तटफफट्ट वट्टत्तण्हो तणेण ।
 वट्टत्तण्णु परि पाविअट्ट हरे मोक्खल्लटेण ॥८॥
 गुणहि न सपट्ठ मिच्छि पर फल निदिध्या मुज्जति ।
 केमरि न लहट्ट मोट्ठिअ वि गय लम्मेट्ठि धेय्यति ॥९॥
 मायक उपरि तण्णु धरट्ट, तलि पत्तट्ट रयणाट्ट ।
 मामि मुमिच्चु वि परिहरट्ट, ममाणेट्ट म्मलाट्ट ॥१०॥
 जीयिट्ट मासु न पलट्ट ? पण्णु पुण्णु मासु न इट्ट ।
 नेण्णि वि प्रमर निरदि विण्णु मम गण्णु विमिट्ट ॥११॥
 रुमवट्ट मल्लि वि अलि म्मल्ल ररिभाणाट्ट महति ।
 अ सुलह् मेण्णु वाह मलि न प वि दूर पण्णुवि ॥१२॥
 माणि पण्णु जट्ट न तण्णु तो म्महा चट्टन ।
 मा हुज्जण-पर-पल्लेट्ठि पविपतु भमिअ ॥१३॥
 जामहि विममी कण्ण-गट्ट पीरह मज्जे पट्ट ।
 तामहि अण्णट्ट इयक पण्णु सुअण्णु वि अतक नेट्ट ॥१४॥
 म्मत्तु पडावट्ट पणि तट्ट मण्णिह पम्भ फलाट्ट ।
 मो परि मुम्भु पट्ट म्म-वि कण्णदिन्दल-वयणाट्ट ॥१५॥
 तट्ट वि पम्भु फल मुणि वि परिहण्णु असण्णु लहति ।
 मामि पत्ति अण्णट्ट आयक मिच्चु गृहति ॥१६॥
 गिरिहे मिला-यणु तट्ट फल धेवट्ट नीमावट्टु ।
 पम्भ मेण्णुपण्णु माण्णुमह तो-वि न रुक्खट्ट रत्तु ॥१७॥
 विहवे म्मत्तु पिरत्ता जोजणि म्मत्तु मरट्टु ? ।
 मो नेवट्ट पट्टाविअट्ट जो लगट्ट निचट्टु ॥१८॥
 पत्तहे-पत्तह पारि-परि लण्ठि विलट्टुत घाट ।
 विअ-पम्भट्ट प गोरडी पुत्तल नदि-वि न ठाट ॥१९॥

- विविधा=विधा अथा । वाट्टिम वि=वीथी म मा । धवनि=वयन जन है । मुमिच्चु
 विमुमय वा ८ पाणि विवट्ट=मनीं द्रव्यस्य प्रा पत्त पर ११ म्महा
 पम्भ=मम छाट्ट १५ । या म्मत्तु व अमुनिया द्वारा मवति न धूम ।
 १० गुण्णु वि=गुणन भा निनाग वापता ११ मण्णिह=मणिया व
 तिण । १८ अण्णट्ट=अण विप । १४ न माण्णु=निनामय । रत्तु न
 म्मत्तु=मम अट्टा नया रत्ता । १६ निचट्टु=नच पम्भ ।
 १७ माण्णु=मण्ण । विहट्टु=विहट्टु=धनम्भ । या=पेया
 है । विअ-पम्भट्ट=विअ ३ पट्ट गेग ।

दिअहा जति मळफडहिं, पडहिं मणोरह पन्डि ।
ज अच्छइ त माणिअड होसड करतु म अच्छि ॥१८॥

जो पुणु मणि जि सप्तपसिअ-दूअउ ॥
चितड, देइ न दम्मु न रअउ ।
रट—वस—ममिन् घरगुल्लालिउ ।
घरहिं नि कोतु गुणइ सो नालिउ ॥१९॥

पम्पसि सील-मलमिअह देवजहिं पन्डित्ताइ ।
जो पुणु खडइ अणु-दिअहु, तसु पन्डित्ते काइ ॥२०॥
निउ सु-पुरिस तिउ घघलइ निउ नइ तिउ बलणाइ ।
निष बागर तिउ कोटरइ, दिआ मिसूरहिं काइ ॥२१॥
उम ते मिरला के-नि नर, जे सवग-छइल्ल ।
जे घना ते वचयर, जे उज्जय ते यइल्ल ॥२२॥
अग्गिण उएहउ होइ जगु पाएँ सीअलु तेम्ब ।
जो पुणु अग्गि सीअला, तसु उएहत्तणु केम्ब ॥२३॥

पम्प रुडुल्ली पचहिं रुद्धी ।

तह पचह नि जुअ-जुअ बुद्धी ॥

वहिणिये त घरु, कदि, निउ नदउ ?

जेथु बुडुम्भउ अप्पणउत्त ॥२४॥

१८ पहिं=मनोरथ पीछ पड जाते हैं । १९ जो मन म खुमकुमाता हुआ सोचता है, न छदाम देता है, न रुपया पैसा के बग अगुवी पर नचाए गए मोटे भाल की तरह, वह मूल घर में समझा जाता है । २० एक बार सील में पत्रकित होने पर प्रायश्चित दिया जाता, है लेकिन जो प्रतिदिन सील कर्त्त करे उस प्रायश्चित् कसा ।

२१ जमे गज्जन वस घोघें, जसी नदी बग ही उसने मोढ जम पहाड वसे ही उसने सोह, हे हृत्थ तुम दुख क्यों बरते हो ? २२ वे लोग दुनिया में विरल हैं । जो सत्र तरह से चतुर हा जो बाबे हैं व ठग हैं जो सीधे हैं वो बल हैं । २३ आग से दुनिया गम होती है और जल से सीतल । यदि आग से सीतल होने लगे तो फिर गर्मी कहा से आयेगी । २४ एक कुटी (भारीर) पाच ने रोग रक्खा । उन पाचा का भी अलग बुद्धि । हे बहन उस घर में बग धाल रह गया है ? जिस कुटुम्ब का हर सम्प्य अपने मन का है ।

आयने नट-कनेरहो न बाहिर तं मार ।

जइ नट-मइ तो बुट्ट अह उम्भइ तो छार ॥२५॥

(४) शृङ्गार

(१) रूप चित्रण

मीमि मेहर गगु यिणिम्मरिदु

मणि कटि पालर सिदु रन्ध्र ।

निदिदु मगु पुमालिछे न पण्णेणु,

तं नमहु कृमुम-म फोडु फामहो ॥१॥

माय सनाणी गोरडी नरकसी हरि रिम-गडि ।

भहु पन्थलिआ सो मर , तामु न लग्गइ कटि ॥२॥

जइ सो घट्ठि प्रयागनी केरु रि लेण्णिगु मिसुवु ।

ज-थु रि त-थु रि जगि, मण तो सहि मारिस्सु ॥३॥

मुह-करि घर तहे मोह धरदि ।

न म-ल-तुम्मु मलि-गडु ररदि ॥

तहे सहि उरल भमर उल-तुन्धि ।

न तिमिर डिम गलति मिलिअ ॥४॥

चलेदि चलतदि लोणणेदि जे तई दिट्ठि बालि ।

तहि मयारदय दहइइ पडइ अपूरइ-बालि ॥५॥

आयइ लोअहे लायणइ तइ मरइ न भति ।

अण्णिण्णिट्ठइ म-लि-अ-लि विण्णिण्णिट्ठइ रिहमति ॥६॥

निउं निउं रिन्नि लोअणुं णिन्नि सामलि मिसुवेइ ।

निउं निउं उम्भइ निअय मा वर पछरि तिकरइ ॥७॥

२५ गग नट द न जा गध जाय बहा सार है । यदि सम्झना तों नष्ट होता है यदि जनता है तो छार छार हुना ३ ।

१

०

सनाणी=सनानी, गगन=गगन नरकसी=घनासी विसगटी=विष का भाग ८ सो=नाना । घर=पारण करना है । तिमिर डिम=प्रधनार क चले । ५ जाई-मर=जानि-मरति । अण्णिण्णिट्ठइ=अप्रिय क लता पर । ७ निउं निउं=त्रिग त्रिग प्राण । सामनि=सावना । मिसुव=मिसावा है । वर पछरि=ताउ पतर । निउं=नावा करता है ।

मिट्टीये, मड भणिय, तुहु मा वर मी न्दिठि ।

पुत्ति मरणी भल्लि जिय मारड हिअड पट्टिठि ॥८॥

असु जेल आदम्प गोरिअहे सहि, ऊत्ता नयण सर ।

ते समुह सपमिआ न्ति तिरिच्छी घत्त पर ॥९॥

उअ कणियाऊ पफुल्लिअउ काण-यति-पयासु ।

गोरी घयण विणिजिनअउ ए सेइ उण वासु ॥१०॥

ओ गोरी मुह णिजिनअउ वहलि लुम्भु मियउ ।

अनु रि जो परिहणिय-तणु सोकिं घ भगइ निसउ ॥११॥

निअ-मुह करहिं रि मुह कर अघारइ पडिपेक्खइ ।

ससि मडल चदिमए पुणु काइ न दूरे देखवइ ॥१२॥

जिय तिय तिक्खा लेरि पर जइ ससि छोरिलअनु ।

जो जइ गोरिहे मुह कमलि सरिसिम का पिलह तु ॥१३॥

फोडेंति जे हिअडउ अप्पणउ,

ताह पराई वण घण ?

रक्खेअउ, लोअडो, अप्पणा

वालहे जाया निसम थण ॥१४॥

अनु जु तुच्छउ तहे घणहे त अम्पणइ न जाइ ।

कटरिथणतरु मुहडहे जे मणु रिचि ए भाइ ॥१५॥

अने ते दीहर लोअण, अनु त सुअ जुअलु ।

अनु सु घण-यण दारु त यन्नु नि मुह-कमलु ॥

अनु जि केस उलाणु सुअ-नु जि प्राउ विहि ।

जेण णिअनिणि घडिअ स गुण-लानएण णिहि ॥१६॥

८ बकी दिट्टी=बाकी नजर । मरणी भल्लि=मरण आली की तरह ।

९ असुजले=आमुछा ने जन म । आदम्प=प्राय उव्वता=गोल या भागे हुए । नयण-सर=नहररूपी बाण । १० उअ=दया । कणियार=वनर ।

११ वहलि=वादल म । मियकु=मृगाव । १२ सरिसिम=ममानता ।

तदनु=प्राप्त करती है । १४ घण=या । अप्पणा=अपनी । १५ घनह=

घ-या का । अम्पणह न जाइ=रहा नहीं जा सकता । कटरि=आदम हैं ?

विचि=बीच म । ए भाइ=तनी समाती ।

१६ गुण सायण णिहि=गुणतावण्य निधि ।

(२) प्रेम

वटि ममहन् रटि मयर हन् रटि गरिटिगु रटि मेटु ।
 रर टिआह रि मज्जणह दोट अमडहनु नेटु ॥१७॥
 देमुन्चाणु मिटि-कटणु, पणु कटणु ज लोट ।
 मनिटटण अट-रत्तिण मनु महेज्ज डोट ॥१८॥
 अगल्लिअ णेह-णिग्गट्टाह जोअणु लम्बु रि जाण ।
 रिम मण्ण रि जा मिलह मटि, मोम्बट मो टाण ॥१९॥
 सुमरिच्चड व जलहन् ज बीघरह मणाउ ।
 जहि पुणु सुमरणु जाण गण, वटो नेहहो रड नाउ ॥२०॥
 तिलह तिलत्तणु ताउ पर जाउ न नेह गलति ।
 नेहि पणट्टड तग्गि तिल तिल सिट्ठि रि म्बु हाति ॥२१॥

(३) सयोग श्रु गार

रिंसा, रि तणु रयण-अणु रिह टिउ मिरिआणु ।
 गिरुज्जम रसु पिणं पिअरि उणु सेमहो निण्णी सुद ॥२२॥
 अट तु गत्तणु ज थणह, मो देउउ न हत्ताटु ।
 मणि वट कम्बट मुडि-अमेण अहरि पण्णचड नाहु ॥२३॥
 मण माह निहृअ तत्र मड जड पिण्णिट्टु मणेसु ।
 जेय न पाण्ड मग्गु मणु पक्क्याडिअ वासु ॥२४॥
 जड न सु आरह दूट घर, नाउ अहो मुह तुग्गु ?
 घयणु जु मड्ड त महिण सो पिण्णि होउ न मग्गु ॥२५॥
 केम समअण्ण टुट्टु निणु, किय रण्णी टुडु होउ ।
 नर-अण्ण-मण-लालमउ उहड मणोरह सोउ ॥२६॥

- १७ वटिगिणु=वटि मयूर । दूरग्गिआण=दूरस्थितों वा । अमहन्नु=प्रमाणाणु
 १८ दमुन्चाणु=म म च्चाणु । मिटि कण्णु=प्राण निकरना ।
 घण कट्टणु=घन म पाया जाना । मम्बु मव कुछ मन्न पत्ता है ।
 १९ आनिअ आनिअ म्बु म भरपूर ।
 २० रयण्णु=रयण रण=रान वा घास । मृन्=मृदा मृत्तर । २१ मुडिअणु=
 अटि म मूत्र उ । पण्णच=पट्टचना । २४ पक्का रटिअ=पक्कायी
 है । वासु=मवा । २५ वड्डु=घन मृत्त ।
 २६ किय=किय प्रकार । रण्णु छुट्टु श्रु=रान गात्र है ।

अग्नीष सत्यायत्येहिं सुधि चित्तिज्जइ भाणु ।
 पिण रिट्ठे हल्लोहलेण कोचेअइ अण्णाणु ॥२७॥
 अगहिं अणु न मिनिउ, डलि, अहरं अहरु न पत्तु ।
 पिअ जोअतिहे मुह रमलु एअइ सुरउ सचत्त ॥२८॥

मान

ढोल्ता, मइ तुहु गरिआ, माकुरु दीहा माणु ।
 निदहे गमिही रत्तडी, दडवड होइ जिहाणु ॥२९॥
 चंचलु जीविउ, ध्रुवु मरणु पिअ रुसिज्जइ काइ ।
 होसहिं दिअहा रुसणा दिअइ वरस-सयाइ ॥३०॥
 अम्मडि, पच्छायावडा, पिउ कलहिअउ जिआलि ।
 पइ विनरीरी बुद्धडी होइ जिणासहो कालि ॥३१॥

विपोग भू नार

मइ जाणिउ बुद्धीसु हउ पेम्स-अहिं हुहरत्ति ।
 नवरि अचितिय सपडिय विप्पिय नाउ भडत्ति ॥३२॥
 ढोल्ता एहे परिहासडी, अइ भण कवणहिं देमि ? ।
 हउं मिअसउ तउ केहि पिअ, तुहु पुणु अगहिं रेसि ॥३३॥
 महु हिअउ तइ, ताण तुहु, स पि अने गिनडिज्जइ ।
 पिअ, काइ परउ हउ, काइ तहु, मच्छे मच्छु गिलिज्जइ ॥३४॥
 एअकु पइअइ पि आगही, अणु गहिल्लउ जाहि ।
 मइ, मिच्छा, पमाणियड पइ जेहउ खलु नाहि ॥३५॥
 विप्पिअ आरउ जइ पि पिउ तो पि त आणहि अज्जु ।
 अगिण दड्ढा जइ पि घरु, तो तें अगि कज्जु ॥३६॥

२७ सत्ता०=स्यस्थ=भवस्था काले । गुधि=मुयसे । २८ एअइ=एत समय । सुरउ=सुरनि समात्तु=समाप्त है । २९ दडवउ=भीष । जिहाणु=सवरा । रत्तडी=रात । निदु=नीद म । ३० काइ रुसिज्जइ=क्यों रमता है । वरस सयाइ=सोयडा क्यों तब ३१ पच्छायावडा=पच्छात्ताय । विआलि=विवात सय्या समय । पइ=प्राय विनरीरी=उत्पी । विनाग काल विपरीत बुद्धि ३२ बुद्धीसु=बुद्ध जाऊगा । पेअहिं=प्रेम समुद्र म । हुहरत्ति=हह हर हर । विप्पिय नाउ=विपोग की नीरा । ३३ अगहिं रेसि=दूरे के लिए । ३४ गहिल्लउ=भीष ही । पमाणियउ=प्रभावित कर दिया

जइ तहे तुट्ट नैहडा, मइ महु न रि तिल-तार ।
 त मिहे रेहिं लोअणेदि जोदग्नउ मय-वार ॥३७॥
 पइ मे-लतहो ? महु मरगु मइ मे-ल तहो नुम्हु ।
 मारम नसु जो रेगना, मो रि कन्त हो मग्गु ॥३८॥
 अग्न रि नाहु महु जिन घरि मिद्धथा पदेइ ।
 ताउ नि परहु गयकरोहिं मक्कड-गुग्गिइ नेइ ॥३९॥
 जाउ, म जतउ पल्लरह, देम्भउ फइ पय देइ ।
 हिअइ तिरिन्हीइउ जि प। पिउ डंजरइ करेइ ॥४०॥
 रवि अत्यमणि समान्नेण रठि मिट्ठणु न ठिणु ।
 चम्मे म्भु मुणालिअहे नउ जीरगनु न्णिणु ॥४१॥
 बाह रिदोअधि जाहि तुहु हउ तेमउ को नेसु ।
 हिअअ द्विउ जइ नीमरहि, नाणउ सु व, मरोसु ॥४२॥

विरहाणल नाल-करालि अउ
 पहिउ को रि कुडिदरि ठिअउ ।
 अण सिमिर-नालि सीअल चलहु ॥४३॥
 धूसु कह तिहु नटिअउ ? ॥४४॥
 विरहाणल नाल-करालिअउ
 पहिउ पधि ज दिट्ठउ ।
 त मेनरि सत्रहि पधिअहिं
 मो नि मिअउ अगिदठउ ॥४५॥

हिअउ खुहुकरउ गोडो, गयणि घुहुम्भउ मेहु ।
 वासा-रत्ति-पनासुअइ, रिसमा सकहु णु ? ॥४६॥
 पहिआ मिट्ठी गोरडो, दिट्ठी मग्गु निअत ? ।
 असू-मासेहिं वचुआ विनुवाण करव ॥४७॥

- ३७ तिन-तार=तिना की तरह स्वच्छ । जाइ-उउ=ज्या जाता है ।
 ३८ बगला=बोझ । कन्त हा सज्जु=कृतांत का भाव्य है । ३९ मक्कड
 घुम्नित=बन्द घुम्नी । ४० दम्बरउ=प्राम्बर । ४१ विण्णु=दण ।
 जावणनु=जीवार्ण द दा । बाह=बाट । ४४ अग्गिदठउ=अग्नि मित ।
 ४५ वासा रत्ति=वषा की रात म । पवामुअह=प्रवास करन वानों का
 ४६ वचुआ=वचुकी । विनुवाण=गीना । करव=करती हुई ।

जइ स सणेही तो मुदअ, अप जोउइ निन्नेह ।
 जिहिं रि पयारे हि गइअ घण, कि गज्जइ, खलमेह ॥४७॥
 अमा लग्गा हु गरिहिं, पहिउ रडतउ जाइ ।
 जो येहा गिरि गिलण-मथु, मो किं घणहे घणाइ ॥४८॥
 लोगु मिलिज्जइ पाणिअेण, अरे खल मेह, म गज्जु ।
 बालिउ गलइ सु भु पडा गोरी तिममइ अज्जु ॥४९॥
 जउ परसतें सह न गय न मुअ रिओअेतस्सु ।
 लविज्जइ सदेसडा देतेहिं सुहय-जणस्सु ॥५०॥
 एअहिं अमिलहिं सायण, अनहिं भदउउ ।
 माइउ महि अल-सत्थरि, गडरले मरउ ॥
 अगिहिं गिम्ह सुहच्छी तिल गणि मगासिरु ।
 तदे मुदहे मुह-परुइ आगसिउ सिसिरु ॥५१॥
 पलयात्रलि निउडण अयेण घण उद्वम्भुअ जाइ ।
 पल्लह रिउ महा-दइहो थाइ गवेमइ नाइ ॥५२॥
 पप्पीहा पिउ पिउ भणनि केत्तिउ रुअहि, हयास ।
 तुह जलि महु पुणु उल्लहइ, रिह रि न पूरिअ आस ॥५३॥
 दिअडा, पुट्टि तइत्ति नर, काल-नत्तेरें काइ ?
 देक्खउ हय रिहि कहि ठउइ पइ त्रिणु दुक्ख सयाइ ॥५४॥
 दिअडा, पइ पइ वोल्लिअओ महु अग्गइ सय-वार ।
 पुट्टिसु पिप परसनि हउ, भइय दक्कर-सार ॥५५॥
 जे महु दिण्णा दिअहडा न्दअं पेवसतेन ।
 ताण गणतिअे अंगुलिउ जज्जरिआउ नहेण ॥५६॥
 मइ जाणिउ, पिअ रिउहिअह क बि घर होइ रिअलि ।
 एअर मिअकु रि निहि तवइ निह दिणमरु खय गालि ॥५७॥

५० तिममइ=गीता होती है । ५१ भदउउ=माने । ५२ उद्वम्भुअ=ऊँची मुजाए
 करके जाई=जाने है । गवेमइ=गोजाने है । ५३ विहृवि=लोहा की ।
 ५४ काउ-काउ काइ=गमय विमान मे क्या ? ठउ=रगता है । दुक्ख
 ममाइ=गमना दुःख का । समवार=गनवार ५७ विमानि=विमान=
 गध्या समय ।

अयणु लाटि जे गया पद्विथ पराया केरि ।
 अयम न सुग्रहिं सुन्निष्ठग्रहिं निव अम्हट तिर ते रि ॥५८॥
 रम्हट मा रिम हारिणी ने रर चुभिरि जीउ ।
 पद्विनिष्ठ मु जानु नलु जेहिं अदोहिउ पीउ ॥५९॥
 चहुन्तउ चुण्णी होटमड, मुद्धि, रगोलि निहत्तउ ।
 मामानल चाल-मलम्हियउ बाह-मलिन-मसित्त ॥६०॥
 जाडम्हट तहिं देमट्ट, लम्हट पिअहो पमाणु ।
 जड आयड तो आयिअट, अह्या त नि निवाणु ॥६१॥
 मदेमे काट तुहारेण, ज सगहो न मिलिअड ? ।
 सुण्णतरि पिअे पाणिअेण, पिअ पिआस किं दिअड ॥ ७॥
 जड केरड पारीसु पि, अरिआ सोड्ड करीसु ।
 पाणिउ नरड सरावि निव मज्जगे पडमीसु ॥६३॥
 णमी पिउ, रुमेसु ह, रुट्ठी मड अण्णेड ।
 पणिअ णड मणोरहड दुम्हक रुट्ट करड ॥६४॥
 पिअ-मगमि रुड निहो पिअहो परोम्हहो केम् ।
 मड निन्नि रि रिनासिया गि न अमेव न तम्ह ॥६५॥
 णड गृएहेपिणु पु मड जड पि उवारिअड ।
 मट्ट ररिण्णट्ट किपि ण रि, मरिअेअ पर देअड ॥६६॥
 अ-मड-अचिउ ने पयड पेम्मु निअत्तड चार ।
 सज्जासण रि-ममयहो कर परिअत्ता तार ॥६७॥



- ५६ जहिं जिन हाया स चाकर पिया ६० निन्निअ-निन्नि रखा दृष्टा ।
 बाह बापअउ मे गाता । माया चाम की अग्नि ज्वाला म
 प्राल । ६१ निराणु=निवाण । ६२ गुणतरि =स्वप्नान म ।

मेरु तु गाचार्य द्वारा सकलित

अम्मीणउ सन्देसइउ नारय कन्ह कहिणन ।
 जगु तालिहिहि दुखियउ बलिबन्धणइ मुइज्ज ॥१॥
 सउ चित्तइ सट्ठी मणइ बत्तीसइ दियाइ ।
 अम्मी ते नर ढड्ढसी जे बीससइ तियाइ ॥२॥
 भोली तुट्ठि किं न मूउ किं छूउ न छारइ पुब्बु ।
 हियइ दोरी दोरियउ जिम मइहु तिम मुब्बु ॥३॥
 चित्ति तिसाउ न चितीयइ रयणायर गुण पुब्बु ।
 निम जिम पायइ विहि पढहु तिम नक्चिजइ मुज ॥४॥
 सायर पा (स्वा) इ लक गहु गढवइ दस शिर राउ ।
 भगपा (र) इ सो भविन गउ मुज म करसि विसाउ ॥५॥
 गय गय रह गय तुरय गय पावकइ निभि ।
 सगगट्टिय करि मठइउ मुहुता रुहाइच ॥६॥
 न्यारि बइल्ला घेनु दुइ मिट्ठा बुल्ली नारि ।
 काटु मुज कुडनियाइ गयर बज्जइ बारि ॥७॥
 जे यन्ना गोला नई इ बलि कीजू ताइ ।
 मुज न दिट्ठउ त्रिहलउ रिद्धि न दिट्ठ सलाइ ॥८॥

- १ अम्मीणउ=हमारा । स देसइउ=सदेसा । कहिणन=कहिए । मुइज्ज=छोड दो ।
- २ स्त्रिया के सी चित्त साठ मन और बत्तीस हृदय होते हैं, ४ नर मष्ट हो जाते हैं जो स्त्रिया का विश्वास करते हैं ।
- ३ भोली=छोटी । दोरी दोरियउ=दोरी से बंधा हुआ । छारउ पुब्बु=घूल का डेर ।
- ४ मुज, मन म खेद न कर, विघाता जसा २ नगाडा जाता है वसा २ तुम्हें साधना है ।
- ५ भजि गउ=भजन होगया । विसाउ म करसि=विपादमत करो ।
- ६ पापावन्नि=पाप निपायी । मिज्ज=मृत्यु=जीवन । सगगट्टिय=स्वर्ग स्थित । रुहाइच=रुद्रास्त्य ।
- ७ बारि=द्वार पर । बज्जइ=बाधता है ।

जा मति पच्छद् मम्पन्नद मा मति पहिली होइ ।
 मुन्न भण्ड मुगानवड प्रियन न रउड कोट ॥६॥
 जइयद् रायणु जाइयद् न्हमु इम्ह मरीम् ।
 जणुणि प्रियम्भी चिन्तउड रुणु प्रियाउड मीम् ॥१०॥
 मइम् नही म राणु न कु नाइम् नकु लाइड ।
 म प गारिहि प्राणु रि न वटमानरि होमीड ॥११॥
 राणा मरे थाणिथा जेमनु रइम् मेडि ।
 पाट् थाणिनहु माग्दीयउ अम्मीणा गम्हटि । १२॥
 तड गरुथा गिरनार पाट् मणि ममरु घरिउ ।
 मारीता पगार पट् मिहम् न टानियम् ॥१३॥
 जेमन मोडि म वाह थलि रलि रिम्भ भावियड ।
 नइ विम नवा प्रवाह नरउण रिणु आवड नही ॥१४॥
 वादी तम् अटवाण धीमारणा न रमरड ।
 मूना ममा पराण भोगावह तड भागरड ॥१५॥

- ११ जा मति=जा बुद्धि । पच्छद्=पछ बाग् म । मम्पन्न=मन्थन हातो है ।
 वर=वेरना है । १२ प्रियाउड=प्रियाउ । मा=माग्=पू । १३ म्भ
 =म्भ व न चे । माग्थ=माग्=था वनाया । प्रिउड=वाणिज्य ।
 १४ मग्थ=प्या । मागना=माग्=माग् व नग्थ वर । १ टानिय=वग्
 टान दिया ।

स्वयभूच्छद

मित्तु मन्त्रु सत्तु दहययणु ^१
 रअ सामन् दुप्पगमु
 सो पि वधु पाहाण-खडहि
 जह रामहो तह, लन्धि ययसायन्त हो ।
 भाई-पियोण जिह जिह करइ पिहोसणु सोओ
 तिह तिह दु खेण रुइ यणर लोओ ।
 सव्व गोपिउ जइयि जोणइ ।
 हरि सुट्टि धायरेण,
 देई दिट्ठी जहि वहिं राही
 को सक्कयि सररेयि
 दहययणु येहें पलोट्टु ^२
 ठाम ठामहिं घास संतठ रत्तिहिं परिसठिआ
 रोमयणुयस चलिअ ग डिआ
 दोसति धनलुज्जला
 जोहा-निहाण गोहना ^३
 पट्टु सन्दमु णहु ममोअ
 सहि सरम, सलिल सरस
 सरय मेह दिमि वहल पिज्जुल
 पडिअ-नण-भग भोह-अरु सररिचारु पावसु ^४



- १ मित्र बदर । यज्ञु रावणु सामने अगम्य सागर । उस भी बाध लिया पत्थर-सडा से । जिस प्रवाग राम को उसी प्रकार दूसरे यवमाय करने वाले नर को ही सदसी मिलती है ।
- २ हरि सत्र गोपियो का आदर स देखने हैं पर उनकी दृष्टि वही है जहा राधा है । स्पर्शसक्त आत्मा का कौन रोक सकता है ।
- ३ ठोर ठोर पर घाम रक्खी है । रान म बठो है जुगाली करतो हुई गायें । उनके गाल हिन रहे है एक सफद गोगे बादनी के समूह के समान गोधन ।
- ४ पय बीचछभरा है आकाश गुम्फ स भरा है घरनी सरम है पानी सरस है बाग्न गरजन है है दिगाघा म विजली है पयिकी के लिए मुन्दर पावस घा गई ।

स्वयंभुदेव १

रामकथा का उद्गम और कवि को आत्मलघुता

(१)

रामकथा और नदी

पद्ममाण—मुह—बुहर—त्रिणिमय
 रामकहा—एइ णइ पमाण ॥
 अक्खर—यास—जलोह—मणोहर
 सु—अलङ्कार—छद—मण्डोहर ।
 दीह—समास—पवादावद्विय ।
 सक्खय—पायय—पुलिणालद्विय ॥
 देसीभामा—उभय—नहुग्गल
 प वि दुपर—वण—सह—मिलाय ॥
 आथ—यद्दल—पत्तोलाणिट्ठिय
 आसामय—ममन्हु—परिट्ठिय ॥
 एह रामन्हु—सरि मोहन्ती
 मणहर—देवहिं दिट्ठ वहती ॥
 पण्डइ इदमूह—आयरिण
 पुणु धम्मेल्ल गुणालङ्करिण ॥

कवि, अपने प्रसिद्ध काव्य पठन करित म स्वीकृत रामकथा का नग्न रूप देना है और हर प्रकार अपनी रामकथा की परम्परा को भोगमय नाथर महावीर से जोड़ता है ।

- (२) पद्ममाण—पद्म मान, महावीर का नाम । मुहबुहर=मुखबुहर । पमाण—पमाणत । अक्खरवास=अक्षर व्यास । जलोह=जलोप=जन का ममूट । मण्डोहर=मत्स्यधर, मछनी धारण करने वाली । सक्खय=स्वकृत प्राण प्राणय=धन शब्द विनाश ।

वगु पञ्चै ममागारा
 दिनिदरग अत्युत्तरवाण ॥
 पुगु रविमेलायदिय रमाण
 सुद्धिण अयगादिय वदराण ॥
 पत्रमिणि वगुणि गाम-मयूण
 मारुयण-रु-अगुण ॥
 अह-तगुणग पट्टदर-गण
 दिव्यर-एामे पविरल-दत्त ॥

पत्ता

गिम्मल-पुण-पवित्त-रह-दित्तगु आदण्ड ।
 तगु ममाजिज्जतणे धिर दित्त दिट्ठण्ड ॥

(२)

आम दिनप—

एउ संधिहे उप्परि बुद्धि थिय ॥

एउ एिसुअउ मत्त बिदित्तियउ

छविहउ समास—पउत्तियउ ॥

छफारय दम—लवार ए सुय

धीसोरसग पञ्चय वहुय ॥

ए वलायल धाउ एियाय—गणु

एउ लिङ्ग उणाः वक्क ययणु ॥

एउ एिसुगिउ पञ्च—महाय वन्नु

एउ भरहु गेउ लवणगु रि सन्नु ॥

एउ बुम्भित पिङ्गल—पत्थारु

एउ भम्मह—दण्डि—अलङ्कारु ॥

यउसाउ तो रि एउ परिहरमि

परि रङ्गावद्ध वन्नु करमि

सामण भास छुडु सारवड

छडु आगम—जुत्त वा विउपड ॥

छडु होतु सुदामिय—ययणाइ

गामिल—भास—परिहरणाइ ॥

एहु मउनण—लोयहो मिउ रिणउ

ज अउहु पदरिसिउ अण्णउ ॥

एइ एम विम्सइ को रि खनु

तहो हत्थुत्थरिलउ तोउ छलु ॥

घत्ता

पिसुणें कि अमत्तियए ए जसु को रि ए म्मचउ ।

कि दणव्वडु महागहेंण वम्पतु रि मुत्तइ ॥

सत्त बिदित्तियउ=सत्त विमत्तिय। छविहउ=छ विष। छफारय=छ फारव।
धीसावसग=धीस उपसर्ग। पञ्चय=प्रत्यय। उणाः=उणाणि वास्य।
महाय वन्नु=महावाय। पत्थारु=प्रस्तार। सामणभास=सामाय भाषा।
गामिल भास=ग्रामाण भाषा। विणुण=विणुन, दुण् ।

हनुमान मीठा मवाद—

प्रभुन मनि पउम भरित के मुन्द बाँह म है। पउम भरित-पद्मभरित
रामभरित, राम का सम्बन्ध मूल यज्ञ म है। पद्म-कमल का भी सम्बन्ध मूल म है,
पाद-प्रभाव ज्ञाना म रामभरित का पद्म भरित शमीमिष्ट बना गया ? स्वयम्भू के
पउम भरित म बाँह है। विद्यापद, चमोपा, मुन्द, मुट्ट धीरे उतार बाण्ड। मीठा
का पादपाद चमोपा बाँह म हो चुका है। विद्यापद धीरे मुट्ट के सहयोग म
हनुमान का रूप बनाकर मीठा के नाम भेजा जाता है। प्रभुन पाउ म उन दोनों की
ब मोन है। हनुमान के नाम व मनि पादपद होकर मीठा भोजन ग्रहण कर लेती है,
इन्के पूर्व वह भोजन के विषय थी। विषय का स्वप्न दगनी है। विषय का
राग की पादपद मोन।

गन नन्नेपरि गिय पगटों
हनुमन्नु वि नीयहें सम्मुत्त।
अगाए थिउ अटिसंयकर
गु सुगदर-नशिद्धहें मता-नाउ ॥

(३)

मानूर—पउर—पीवर—थरगा
पुननय-दल-दीदर सोदगाए ।
पद-निय-दर—दल-गलाए
हनुमन्नु पदुमिष्ट दिद-मलाए ॥

त शिसुणेंरि सिरमा पणमते
 अक्खिय जुमल उत्त इणुमते ॥
 माण माण वरें वीरउ शियमणु
 जीवइ रामचन्द्र स-वणदण ॥
 एयरि परिट्ठउ लोढ-विसेमउ
 तरमि य सन्न-सज्ज-परिसेमउ ॥
 चट्टु य गल्ल-यक्ख-यय गीणउ
 शियइ य रज्ज-विहोय विहीणउ ॥
 रक्खु य पत्त रिद्धि-परिचत्तउ
 सुत्त य उम्भर गइ चिन्त-वत्त ॥
 तरणि न शिय ढिरणेंहि परिज्जिनउ
 जलणु य तोय तुसार परज्जिनउ ॥

घटा—

इट्टु न चरण-वाले रहसिउ नममिहें आगमणें जेम जलहि
 साम-नासु परिभीण-वणु तिइ तुम्ह विश्रोण वासरहि ॥

(१)

तत्त्वमण आपसी गूढ याद करता है—

अरण वि मयरहरावत्त वरु
 सिर-मिहर चट्टाविय नमय-क्ख ।
 शिय वणणि वि वत्त ए अणुमरउ
 सोमिन्ति जेम पइ समरद ॥^१

(पद्धदिया दुवई)

परिवज्जित्त=परिवर्जित । श्वणु-वारें=चयनकाव प्रस्थान के समय ।
 परिम ग तणु=परिशील तनु ।

(४) मयर हरावत्त वर ।

अणुमरद=अनुमरति अनुमरण करता है । मुमरद=स्मरति याद करता है

पञ्चुड फुँँ विमय-खडु गड
एँ मनु अलहनु विमिट्ट-मड ॥'

(पद्मद्विया दुर्द)

पदम् सरीर ताँदे रोमगिड
पञ्चए एयर रिमाण खडिउ ॥
दुषट्टर राम-रूड पट्ट आइउ
मञ्जुडु अण्णु को वि मपाइउ ॥
अत्थि अण्णेय ण्यु रिगनाहर
जे ग्याग्याविह मय मयंर ॥
म-गहं मड म-मार गिरिस्मिय
चण्णट्टि वि चिरु एण्टि परिस्मिय ॥
ए पण्णदेयय थाण्हो चुस्वी
'मइ परिण्हो' पमण्णलि पट्टुकी ॥
एयर गियाणें हूअ रिगनाहरि
ट्टिलिलिनि धिय अण्हइ उणरि ॥
लम्भण-वग्गु गिणरि पणट्टी
हरिणि थ गह मिलासुत्तट्टी ॥
अण्णेस्सए रिउ ग्याउ मयस्स
इउ मि छलिय रिउओइउ हलहुर ॥

पत्ता

रुहि लम्भणु रुहि दामरहि आय्हो दूअत्तणु वहि तणउ ।
माया-रुहे विउ कर वि मणु चोअइ को नि महु तणउ ॥

चात्री (प्रगिया) । फुड वि = फूट कर । टुवर = टुवर कठिन । मण्डहु =
नाप । मनाइउ = पत्राज आया है । एयु = यणी । विजान्तर = विद्याप ।
म = मने । वणु दवण = वन दवना । थाण हो चुक्ती = स्थान ॥ चूस गइ ।
पट्टुकी = पट्टुका । गियाण = निजान में, प्रान म । वग्गु = वरग-उपवार ।
तट्टी = व्यात्र के मुह के प्रम । विच्छादउ = विष्णुप किया । वरि तणउ =
विमवा क्या ।

हनुमान की दृष्ट परीक्षा—

आश्विनि मेरुदु यति षण् मरु
 पेण्डु वयमृणक दृष्ट मरु ।
 मागैण द्वावि आगच्छिषत
 मिह मयल-महोशदि मपियत ॥
 वरुषारिड त्रिभ-मर्जे निम्नभिष
 'जह तुष्ट राम-दुष्ट गिणु भमिष ॥
 री विह वमिड वरुष वड मादव
 ओ मो मरुद-मगाद मयदुष्ट ॥
 वरुषारि-मरुद-मरुद-गुणारुड
 मंगुमार-वरि-मरुद-मरुद ॥
 जीवतु-मरुद मरु जव विषय
 त्रिभ-मिणोड लेम भद्र-दुष्ट ॥
 वरुष मरुद-मिह तुष्ट-मरुद
 वरुष वि आग-नी-मरुद ॥
 मो मरुद तुष्ट मरुद व
 वरुष विमरुद वरुषारि ॥
 मरुद वरिषतु वरिषारि-मरुद
 वरुषारि वरुषारि-मरुद ॥
 वरुष मरुद विमरुद-मरुद
 वरुष वरुषारि मरुद-मरुद ॥

आयड मत्रद पहिहरेनि तुह लड्डाणयारि पड्डुनि ।
अड्ड नि कम्मद गिहलेनि उर मिद्धि-महापुरि सिद्धु निह ॥

(७)

हनुमान न। प्रत्युत्तर—

त गिसुणेंधि ययणु मड्डययिउ
जिमेहपियणु अंनणे चरि ।
परमेसरि अउउ जि भान्नि तउ
जाणेदि यउवाउ ममरे ह ॥१॥
जोणेदि उमिसिय लड्डामुअरि
लड्डय माजि बुद्धवरण उ बुद्धरि ॥
गिहयामालि महेयहि लड्डिउ
उरहि गउणी नि आमड्डि ॥
उउ जि जड्डण अजि पत्तिउरि
तो राहव मड्डे मुणुमेवहि ॥
जड्डयह वणुआमहा गीमरियड
ममर-कुअर पूर पमरियड ॥
गम्मय विळ्ळु ताधि अहिणगुड
अरुणगाम रामरि पयाणुड ॥
जयउ गुअउत्त गिउमणु
मिमळ्ळलिअम उल गणुड ॥
गुत्त मुपुन-नटा गिउमड
मगु मवु चउणहि पणमड ॥

- (७) मत्रदविउ = महाजित = युवगीय या मन्त्रवान् । अउउ = अत्रय
वविउ = उवा । पत्तिउरि = विवास करती हो । पमरु = दव । वनवा
ह = वनवास व विण । दमउर = कुल्लर = गुहुर-कुहुर । गम्मय = जमन

पर-तिय मग्गु मग्गु मग्गु यच्चहो
जे चुक्कहा ममार-ययच्चहो ॥

पत्ता

म, जाणेज्जहा पहरु गउ जमरायहो फेरउ आण-रु।
विपरोहि गादि-वुद्धारणहि दिवे दिवे विद्वउ आउ-नरु

(१०)

स्वप्न दर्शन-

सिमि-पहर चन्त्यण तादियाण
गुं जग-कयाहे उग्गादियण ।
न्हि तहण कान्न पणामियउ
ठियहण मियिणुउ यिण्णामियउ ॥
हले हले लयलिण लहण लयलिण
मुमणे मुवादिण तार तरणिण ॥
हले कसोलिण पुवलय-सोयणे
हले गचारि गोरि गोरोयण ॥
हले विजुण्णहे जानामालिणि
हले हयमुटि गयमुटि ककुललिणि ॥
मियिणुउ चणु माण महे दिट्टउ
णकु जोह्ण च्चण्णो पड्डउउ ॥
तरु तरु मन्नु तेण आररिमउ
यग्गे निह यण मङ्ग पदरिमउ ॥
सो वि गियदउ इन्द-राण
पाव पिणु गु गम्भ-कमाण ॥
पट्टणे पडमादिउ वट्टेयिणु

८ रयणवसि=रत्नवशी एक विद्याधर । गहमग्ग=महामगति । वरुणा सारियउ-
वडाया । चणुवत्तण=चणुग । पड्डउ=प्रवर्जित । चउयउ=धोया । जम-यहउ=यम
पहउ=यम का नगडा । छिउवउ=जाग जाग है । आउ-नरु=आयुष्मती वन ।

१० ॥ उग्गादियण=उदात्त हान पर । पणामियउ=प्रवर्जित हुआ । विपणु=
विपरीत । ककुलिणु=पर वर । तावडणुवउ=नव एक घोर ॥ । आवट्टिण-
आवर्जित वर नी घृमा दा ।

एदु सिमिणउ सीयहें सहउ असुरामहो विनउ जणहणहो ।
सदु परिणारे सदु पलेण सय काल पटुक्कु दसाणण हो ॥

(१२)

लंका सुन्दरी का प्रवेश—

तहि अवसरे पीण पओहरिए
अरुणुग्गमे लङ्कासुन्दरिए ।
इर अइरउ विणिए मि पेमियउ
इणुय-तहो पासु गवेमियउ ॥
जहि उज्जाले परिट्ठउ पावणि
सयल एग्गिन्द रिद चूणमणि ॥
तहि संपत्तउ विणिए मि जुवइउ
ए सिव सामए तवसिरि सुगइउ ॥
ए सम-दवउ जिणामे रिट्ठउ
जयगारेप्पिणु पासे णिणिट्ठउ ॥
तेण मि तहि समउ रिउ पम्पेरि
वण्ठउ वञ्चो-दागु समम्पवि ॥
पुण विणएत्त हलीस मणोहरि
'भोग्गण तुम्ह वेम परमेसरि ॥'
अक्खइ सीय समीरण पुत्तहो
'वासर एक्ख गीस मइ भुत्तहो ॥
जाम ए पत्त वत्त भत्तारहो
ताम णिणित्ति मज्झु आहारहो ॥
अज्जु खर परिपुण मणोहर
त जे भोज्जुज सुअ रामहो कह ॥'

पत्ता

॥ णिसुणेवि पवणहो सुएण अज्जोइउ मुहुअइरहे तणउ
"गम्पिणु अक्खु विहीसणहो बुच्चइसीयहें करि पारणउ ॥

- ११ पीण—पमोहरिए=वीन पयोधरा । अरुणुग्गमे=अरुण उदगमे=सूर्योदय होने पर । इर अइरउ=चिरा, अचिरा । तवसिरि=तपस्वी । णिणिट्ठउ=बठा । विणएत्त=विश्रुत, निवेदित किया । पत्त=प्राप्ता=पायी ।

मीना का मोहन—

तं तेहउ मुञ्चवि मोयणउ
 पुउ करवि थयण-पञ्चालागउ ।
 मननहवि झङ्ग, थर चण्णेण
 प्रित्तण दवि मरुण्णन्दण ॥^१
 वर मट्ट ताण न्नाये वरमेसरि
 तांमि तेउ अहि राहवन्धमरि ॥
 मिमहो ये वि पूरु मज्जेरह
 विट्टउ जण्ण रामायण-रुह ॥^२
 तं विमुण्णेवि देवि गच्छोन्तिय
 साद्वारण, वरान्ति पणन्तिय ॥
 सुहर विण पण मय-गुण धट्टमहे,
 ण्ड म विणि होउ कुन-वट्टमहे ॥
 गम्मइ वण्ड जउ वि विण मुलहर
 वि मूमणारे गम्मउ अमुहर ॥
 जण्णउ होउ दुमुञ्चउ-मीनउ
 गनमहाउ विण विच्छे मइमउ ॥
 अहि ने अण्णु अहि ने आमड्डर
 मण्ण, रणोवि मण्णो विण मण्ड ॥
 विहण दसाउउ जउ जय मण्ण
 मइ जण्णउ मड्ड वमहर ॥

धमा

(१५)

हनुमान की रापनी और प्रतिपेदन—

अणु नि आलिङ्गे नि गुण धण्ड
 सदेसउ अणु महु तणउ ।
 “वल तुम्ह निओण जणय सुय
 विय लीह-विसेस य न्ह निमुअ ॥”
 भीण मयङ्कुलेइ गह-गहिय व
 भीण सुरन्द रिद्धि तग-रहिय र ।
 भीण बुदेस-मग्गे वामाणि र
 भीण सुद सुहे सुन्द सुवाणि य ॥
 भीण निवार-सण्णे रत्ति य
 भीण कु-वणय निणय र भत्ति य ॥
 भीण दुभियगे अत्थ-सपत्ति य
 भीण वृद्धत्तणेण वल-सत्ति य
 भीण, चारत्त निरूण्हो कित्ति य
 भीण कु-कुलहरं कुत्तयहु णित्ति र ।”
 अणु वि दमरह-यम पगासहो
 वच्छत्थन जय-लच्छि गिमासहो ॥
 रणे दुज्यार-वड रि निणियारहो
 तहो स देमउ णेहि दुमारहो ॥
 पुच्छइ ‘पड’ होतण नि लक्खण
 अण्डइ मीय कयन्ति अलक्खण ॥

पत्ता

एउ देवेहि एउ पाणोहि एउ रामेयडि रियारण ।
 पर मारेवउ दहयण सइ भुअ नुअलेण तुहारण ॥



भिज्जइ कुमार सुसियाणणउ ।
 ए करिणि मिरहे उण वारणउ ।
 जउ जउ सीमतिणि मंचरइ ।
 तउ तउ चहुयार-मयइ करइ ॥
 मरइ दिणि गयणाणदणिण ।
 णि मन्ठिउ दुमयहो एदणिथे ॥
 एत्थु करात पुरि मंघज पच महु पेसण ।
 जइ जाणति पइ तं सुंति, पाय नम-मासण ॥१॥
 जोणपिणु दोयइ मुद-कमलु ।
 पमणइ एउ-गाय-महाम-उलु ॥
 हउ सुहइ-सएहि पडिवगिनयउ ।
 पड, सु हरि एउर परागिनयउ ॥
 पडिमल्ल ए हरि-हर-चन्त्यण ।
 पचहि मंघविहि मा गणुण ॥
 महु करि पमाउ जीगवि मइ ।
 सु जायमि यमुमइ-अच्छु पडं ॥
 अउहेरि करिणि गय दुमय-मुय ।
 सहो एवमो वामाउत्थ हय ॥
 णिय-ममहे बहिउउइ नइइहे ।
 मणु रनहि आयहे तीमइहे ॥
 जहि अउदामि हउ एयग-मणु ।
 सहि पट्टमि लवि ममातइणु ॥

को पञ्चलद=प्रवर्तित=जयना है । अणु निहि=काम की ज्वाला ।
 मिज्जइ=सीग होता है । सुसियाणणउ=गायित मुख वाला । वण वरणउ=
 जंगली हाथी । चहुयार-मय=सबको चाटुकारताण । एउरहि निणि=एउ
 त्ति । एयणाणि=उत्थों का आनंद दन वानो ने । विमच्छित्त=हाग ।
 पमण=प्रेषण=सवा, आना ।

जोएणिणु=अपर । प्रमणइ=प्रमणनि=रहना है । एउ गाय-सहाम-उलु
 हजारों नवनागा (गज) के वन वाना । सुहइ-सएहि=मैंकहों मुमों द्वारा ।
 उ=म । एउर=कवउ । गणुण-गणुना=गिनती । पमाउ=प्रसा । छु=
 शीघ्र । जोवावि=विनाशा । पइ=तुम्हें । अउहरि=अवहेतना उपसा ।

त्रिण्येण पिउन्नामिउ ममुहु ।

ए सीह मिसोरि पच मुहु ॥

रोउ दुमय—भुय निर्माति त्रिण्येण—इत्या ।

पद जोउतयेण महु थेही मदय अरया ॥३॥

भाग्य की आलोचना—

तो मणइ विश्रोयक अरि—मणु ।

कहि, पाद नाथे, मिउ आगणु ॥

परिमनिय केण, रहो सणउ ॥

पम्वालहि लोउण लुइहि मुहु ॥

त त्रिमुणियि तुमय—राय—मुहिय ।

पमणउ छण—टुहु—हीर—मुहिय ॥

महु करणु मुहु अणउ करण निनि ।

जदि तुम्ह मि गहुइ पद विहि ॥

जो सा म—मानु महि—मडल हो ।

मिउ हरिमि लन्दि आहडलहो ॥

सो त्रिहि—परिणामे २ चरट ।

परिमन्द हो छिन्न सेन फरड ॥

जो मुटिउ—पहारें मलड गिरि ।

ज सणु मि ए मेल्लइ मुन्द—मिरि ॥

त्रिण्येण के अंतराल की वाता दवाने में समय । किम्बोर=एक रागण ।

विमार्हो=वक्त्रोर क । विउन्नामि=ममन्नाया । पचमुहु=चिह ।

त्रिण्येण—इत्या=लनिउ हस्त । भयइ=इ । प्रवस्थ=प्रवस्था ।

- ४ परिमावि=परिमात्रित किया । बड़ा मण=गौर मा । पम्वालहि=प्रदायति=
 पौद ता । टण=हीर मुहिय=मव म चमवत हो के सभान पुत्रवाती ।
 निहि=नाथ । वह=वेत है । मानि-मानु=मानि थे । नि-परिणामे=
 नाथ के परिणाम में । मच्छट्टा=मट्ट (गड) क । मुट्टि पहारें=मुट्टी के

संसार धम्मु ख णिरिन्धियउ ।
 सुट्ट पेत्तिउ, पेत्तिउ दुक्खियउ ॥
 देइ दुपि पि फलइ पंचालि पुराइय वस्सु ।
 जइ णिय रावणिय किं सीयहि थोवउ दुक्खु ॥५॥

भीम की प्रतिज्ञा—

अइत्त दिवसि अ त्रिणीयच्चेण ।
 परिभविय, माइ, ज वीयच्चेण ॥
 तं तदि पि कालि मिर छिट्ठमि ।
 पाहुणउ वयंतहो पट्ठमि ॥
 हउ ताम णरिंदहे सण्णियउ ।
 णिय-रोसु तेण अथ गणियउ ॥
 जइ वइ पि पुनकु अज्जोणियहो ।
 मारमि रयण्हे वल्लोणियहो ॥
 घुहु तेण समउ संकेउ करि ।
 पइसारहि एवण सान परि ॥
 जहि तु गिहे को वि ण सचरइ ।
 तहि कल्लइ वीयउ महु मरइ ॥
 त णिसुणि वि पुनउन्निमण्ण भुय ।
 गय णियय णिहेलणु दुमय सुय ॥

केत्तिउ दुक्खियउ=दुःख कितना । पुरा इय वस्सु=पुराना वृत्त ।

- ७ अइत्त दिवसि=जिन के बोलन पर । छिट्ठमि=नष्ट कर ना । वयंतहो=कृतान्त के । पट्ठमि=बेदना । सण्णियउ=आश्रित बान्धव समोदया । अज्जोणियहो=प्रातः दिन । वल्लोणियहो=वसत के दिन । एवण सान परि=

धिउ ताम भौउ परियलिय गिमि ।
 अरुणेण-अरुणिय पुण्य दिमि ॥
 कत्तइ दोवददे अं कट्टिउ येम-अमारउ ।
 मो मउ किय नउ, रां दिउ-आण भाउ विहावउ ॥९॥

द्वीपदी का कीटक से प्रभुत्व—

अरुणियुइ थामरे दिपद-अय ।
 अंथाति पुमारहो पामु गव ॥
 बोन्नाविय तनु मरान-गइ ।
 कुम जाव वरुण्यव विमलमइ ॥

कीरु की वृद्ध स्त्रीकृति एव कीरु मा भाम क पति में पमना—

पदियणु सधु तं गेयदश्रे ।
 दुवार-जार मारण महिण ॥
 आदिगनड नचण-मान तुट्ट ।
 तं माणट्ट पिण्णि रि मु रय सुट्ट ॥
 गय तेयदो वट्टिउ रिआयरदो ।
 विट्टु रिगट्टिउ विट्टु गोयरदो ॥
 भीमेण रि त पदियणु रणु ।
 अ हिम वर तान गउ अयणु ॥
 सेणा-यड जेवि पमाट्टणउ ।
 सकेय-भरणु गउ अणणउ ॥
 तदि भीममेणु थिउ पडमरिउ ।
 तदि सीट्टु वृगदो नमु ररिउ ॥
 तदि ध पु विनयु पडट्टु विट्टु ।
 ए-उ टाणड जट्टि मरण-पिट्टु ॥
 रायाणुश्रेण विट्टुदि घरिउ ।
 ए वाने पडम कनट्टु भरिउ ॥
 चित्तिउ कीयश्रेण, लड इउ गनने मारिउ ।
 ए-उ मदलिवि-ऊर पट्टु वाने दूरु पमारिउ ॥२॥

८ दुवार-जार मारण महिण=दुवार जार का मारण की गरज म । गेयदश्रे=सनापति । पमाट्टणउ=प्रमाणन । धनु=शंखा रमाणुणु=राजा के अनुगामी न । विट्टुहि=गाला म । पमारिउ=धना विमा ।

कीचक्र वध—

सेखानइ पेन्मिनि अ-तुल-बलु ।
 ओहुत्तिउ मीनहो मुह-मलु ॥
 मिय होसइ महु जस-हाणि रणि ।
 पजेसइ अ-यस-पदहु भुगणि ॥
 किय होसइ जण वझे जपणउ ।
 कह-कहय वि घोरनि अपणउ ॥
 आयासु करिणि शिय-भुय-जुयलि ।
 हउ मुट्ठि-गहारिं वञ्च-यलि ॥
 पाएण नि यद्वस खयरु णिउ ॥
 सो कीयउ कुम्मागारु किउ ॥
 पइसारिय हत्य-पाय वयरि ।
 ए पु जिउ आमिस-पु ज् पारि ॥
 एीसारिनि भीमु महा भुयघे ।
 जाणानिउ दुमय-राय सुयघे ॥
 गवन्निहि विड भडु णिट्ठिउ ।
 पेयाहिउ परि पट्ठिउ ॥
 धाव्य पउर भट, मरु-मारिउ कीयउरेण ।
 पव नणाहिउरेण घरु वेदिउ माय-सअरेण ॥१०॥

१०. पेन्मिन्व=पेन्मन् । ओहुत्तिउ=नीचे झूक गया । वज्जेसइ=वज्जेगा । पयस
 पदहु=अपयस वा ठका । जपणउ=निदा । कुम्मागारु=कूमावार । खयरि=
 पेट में ।

द्रौपदी का चीत्कार और भीम का प्रसूट होना—

णिन्नती कण्ड दुमय सुय ।
 गंगरुह धारह, माइ मुअ ॥
 अहो जय जयन विनयन परि ।
 खयसेख जयागह-रम्प करि ।
 ठो भी मुण कुहिणहिं माइयउ ॥
 भनिवि पायारु पगइयउ ।
 अण्णेतदे जेतदे नइरि ए वि ॥
 एप्पाइय नोकरो भाग व रि ।
 मुम्फलिय केसु उक्खाय-तरु ॥
 पच्चक्खु माइ थिउ रयणि यरु ।
 सउडमुहु नीमइ नीयणेहिं ॥
 जमु दह-पाणि ए भीयणेहिं ।
 छट्ठिउउउइ महया नागु रडिं ॥
 एउ एाय पणटठ पडुह वडि ।
 पल्लट्ट विओयरु शिय-भयगु ॥
 पडिउरणु विगयरु उगमगु ॥
 सरुप नट्ट मणि तहो मन्दहो अ णिइय-मत्तहो ।
 कइउइ सिरसाउइ, सगिभि णिगमहो पल्लहो ॥१२॥

१२ सउडमुहु=मामने मुख । छट्ठिउउउ=आठ दी गई । पणटठ=नष्ट हो गए ।
 पडुह=कहीं चले गए । पल्लट्ट=पलटा ।

[२]

महाकवि पुष्पदन्त

आत्मलघुता और दुर्जननिन्दा

(१)

अनलंक वरिल कण्ठयर मयाइ
 दिवसुगय पुरन्दरखयमयाइ ।
 दत्तिल त्रिमाहिलुद्रा रियाइ
 एउ खायइ भरहन्त्रियारियाइ ।
 एउ पीयइ पायनल जलाइ
 अद्दासपराण्ड शिम्मलाइ ।
 भागहिउ भारत्रिभासु मासु
 कोहलु कोमलमिरु कान्तिशसु ।
 चउमुहु सयमु भिरिहरिसु दोणु
 खालोइउ कइ इमाणु माणु ।
 एउ धाउ ए निणु ए गण मनासु
 एउ कम्म करणु किरियाणिउसु ।

- १ अलंक वरिल जीताचार्य आनन्द कवि साध्वी शार्ङ्गिक कण्ठयए वापिह दागनिक न्त्रि जिज वर पा क मुगन=बौद्ध पुरन्दरखय=चर्वाचमन के सम्प्रदायक पुरन्दर) क सिद्धांत । नन्त्रि=नन्त्रि और रिम हिन्दु सतीतद्वारों की रचनाए भरह=भरत के रचे राम्य । पयवन जव=वनज्जानि वा शास्त्र रतिहाम और नियल पुगण । भागान्त्रिक भागवि नायकनार भाग, महाभरत वार व्यास कवि को न चतुर्मुख पट्टहिय वेद वाक्य का रचयिता स्वयम्भू कोमल वाणी का नाम श्री रूप, जोण ईशान और वाण आयसु = आयस ।

भरत बाहुबलि युद्ध

‘प्रादि पुराण — प्रादि तीसरे ऋषि का जीवन चरित्र है यह महापुरुषों का एक महत्वपूर्ण चरित्र रहा है। ऋषि १४ वें कुन्वर नाभिराय के पुत्र थे। उनका युग—देवभूमि की समाप्ति और वसुभूमि (वृष सम्प्रदाय) के आरम्भ का युग था। ऋषि की दो पुत्रियाँ थीं यशोवती और सुनन्दा। यशोवती से १०० पुत्र और एक बच्चा मागही भरत उनमें बड़ा था। सुनन्दा से सुनन्दी और बाहुबलि। ऋषि राय का बेटों में बड़े बड़े बेटे थे। पर सत्सत्ता करत है। भरत, निश्चिन्त के बाद समाप्त हो जाता है। उनका बड़ा नगर सीमा में प्रवेश नहीं करना इसका कारण था—बाहुबलि का धर्म तब तक समझी समझता नहीं स्वीकारना। भरत, मृत द्वारा समझता का प्रस्ताव भेजता है जिस बाहुबलि दुःख देता है फलस्वरूप, सेनाएं सामने सामने आ जाती हैं। तबिन बड़ा मंत्री गिता को ध्यान के नाम पर दोनों भाइयों को बड़ा युद्ध के लिए लाहान करत है। हृष्टिकर और महानयुद्ध में भरत की हार पर बाहुबलि दाक्षा ग्रहण कर सता है। जबकि भरत की मंत्री समोप्यात जाते हैं।

(२)

आर्याल

रविणिहृषणकुडला रयणमेहला मङ्गलमरा ।
बलिदा मङ्गलसरा सगरसुरणरा कठ बद्धदारा ॥

भरत की सेना के रूप का वर्णन—

होइ निरित्यत्तु शिनिमें समग्रत्तु
किं ए किं ए निरि र्हमिदत्तु जत्तु।

१ रविणिहृषणकुडला—रवि निम बल कुडल मूल के समान बानों के

चक्र का अरुणोद्यम—

(३)

यवच्छिन्न चक्रं तु एव पुनरिपरिवर्तय
 युवन्मि वरं युव एव निम्नम् ।
 गगनकोशान् पञ्चानामिदं
 एव पुरलन्ध्रं परिहृत्तुं कुरु ।
 भरद्वाजोऽयं पायिरिजायते

आरुणोद्यम

एतद्वत्सरं पुरतरे रयणमयदरे जयमिरीरग ।
 भगुर भामरात्यं निमियारय राक्षो रदग ॥
 भागुविनु एव द्वाजं च यत् ।
 इन्द्रं पदिकृत्तम मोलु
 घमघमनु मयद्वयमहर्त्तु ।
 सह नि चरन्महि अलोयद्व
 एवरे नीतु धरित ए लोयद्व
 मणिमउदमाला धेलात्तु
 रायदिमायि पुरणयकृत्तु ।

(भावार्थ) चक्रं । अस्मिन् चक्रं विजयतः पुनर्यथा ।
 उज्ज्वलं चक्रं म । मणिं चक्रं साक्षात् म ।

- १ परिहृत्तुं=पहल किया है । जयमिरीरग=विजयपथी के रंग वाता । भगुर
 भामुराग्य=चक्र विरगों का समूह । निमियारय=पानी धार वाता ।
 राक्षो=राजा का । रदग=चक्र । मयद्वय वह सातउ=मयराज की प्राण के
 समान सीता वाता । त्रि=हृत् । मणि यकृत्=मणिमयूग । सममनु=अमर
 सत्त । एवमहि=नमस्को न । स । विमिठ=मिन गया । रत्तणतु=
 सात कमल । मन्नायद्व=मुत्तर कीर्ति वाता । धवसे=धवश्य ही । धामद्व=
 इमवी । गिराणा=नराज न । म्दराणा=प्रतिद्व राजा न । रदग्य=

सुरहिगधु सिरिसेविउ समसत्तु
 ए गहसरि विहसिउ रत्तप्पत्तु ।
 बलयायारहु शिरु सञ्जायहु
 अचसैं देइ घरणि कर आयहु ।
 पत्ता

त चक्कु ए एयरिहि पइसरइ वेमहि जणियवियारउ ।
 हियउल्लय कणइसहयं भरिउ गानइ धुत्तइ केरउ ॥

(४)

आरणाल

ता भणिय गिराइणा रुढराइणा चढवाउवेय ।
 कि थियमिह रहगय शिच्चलगयं तरुणतरणित्तैयं ॥

मत्रियों का सुभाष—

त शिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ
 जेणेयहु गइपसरु गिरोहिउ ।
 अक्खमि त शिसुणहि परमेसर
 देवदेव दुज्जय भरहेसर ।
 भुयज्जुयत्तपडिन्नलनिहणह
 पयभ रथिरमहियलकपवणह ।
 तेओहाभियचददिणेसह

-
- ४ गिराइणा=नृराज ने । रुढराइणा=प्रसिद्ध राजा ने । रहगय=चक्र । शिच्च लगय=निश्चलाय । गइ पसरु=गति प्रसार । पुरोहित=मन्त्री । तेओहाभियचददिणेसह=अपने तज से चन्द्रमा और सूर्य को भुजा देने वाले । कित्तिसत्ति जणमेत्ति-सहायइ=कीर्ति शक्ति और

जण्णदिण्णमदिलच्छित्तासद् ।

कित्तिसत्तिनणमेत्ति सहायद्

फो पडिमलु एत्थु तुद्द मायद् ।

सेन करति ए एदमाईनद्

एउ एउति तुद्द पयराईनद् ।

देति एि करमरु केसरिकंधर

पर मुद्दियद् मुजनि वमु घर ।

अउन त्रि ते सिज्जमति ए जेण जि

पद्मद् पट्टणि चम्बु ए तेण नि ।

यत्ता

रइयए परमेस क उच्छुधणु घरणिहरणपरियरु ।

फामयतणुत्तु एनणल्लिणमुद्द भुरणुद्धरणधुरधरु ॥

(५)

आरणाल

दूतों से भाइयों का निवेदन—

ता विगया नहुयरा जणमणोहरा थिअधुमारनास ।

दुमदलललियतोरण रसियवारण द्विण्णभूमिदेस ॥

तेहि मणिय ते त्रिणउ करधिणु

सामिसालतणुरुद्द पणवोणणु ।

लोगों की सीमित सख्या की सहायता पर निर्भर रहने वाले । एउ माई
वद् = नख, चद्द वर । पयराईनद् = चरण वस्त्र की (सेवा नहीं करते ।)
ए तण जि = इसी कारण से ।

५, विगया=चले गए । ता=तब । नहुयरा=बन्धु से चर । रसियवारण=रवान
पर हाथी गरज रहे हैं । द्विण्णभूमिदेस=जिसका भूभाग इका दृष्टा है ।

सरणर निसहरभयइ जणेरी

करहु केर खरणहहु केरी ।

पणवहु कि बहुवेण पलायें

पुहइ ए लम्भइ मिच्छागानें ।

त णिसुणेनि कुमारगणु घोसइ

तो पणवहु जइ बादिण दीसइ ।

तो पणवहु जइ सुसुइ कलेनर

तो पणवहु जइ जीगिउ सु वर ।

तो पणवहु जइ जरइ ए भिज्जइ

तो पणवहु जइ पुट्ठि ए भज्जइ ।

तो पणवहु जइ पलु णोहट्ठइ

तो पणवहु जइ सुइ ए विहट्ठइ ।

तो पणवहु जइ मयणु ए तुट्ठइ

तो पणवहु जइ कालु ए पट्ठइ ।

कठि कयतनासु ए चुट्ठइ

तो पणवहु जइ रिद्धि ए तुट्ठइ ।

घत्ता

जइ जम्मजरामरणइ हरइ चवगाइदुक्खु णिनारइ ।

तो पणवहु तामु खरेसहो जइ ससारहु वारइ ॥

जणेरी=उत्पन्न करने वाली । केर=प्राणा । खरण हहु केरी=राजा की ।
मिच्छागानें मिच्छापात्र से । णोहट्ठइ=नष्ट नहीं होता । विहट्ठइ=नष्ट नहीं
होता । तुट्ठइ=टूटता है । चुट्ठइ=जहाँ छूटता । पुट्ठइ=जहाँ पहुँचता, नहीं
तगता ।

आरणां

पणरि तेहि गहिरयं मयणमहुरयं परिस पउत्त ।
आणापसरधारणे धरणिधारणे पणरिउ ए जुत्त ॥

पारतन्त्र्य की आलोचना—

पिडिटांडु मदिगांडु महेप्पिणु
विह पणविज्जइ माणु मुणप्पिणु ।
पणरणिपसणु कंदरमदिह
पणहलभोयणु धर त सु दय ।
पर दालिह, सरीरहु दडणु
एउ पुरिसहु अदिमाणविहडणु ।
परपयरयधूसर किंरसरि
असुहाविणि ए पाउससिरिहरि ।
णियपडिहारडसपट्टणु
को विसइह करेण सरलोट्टणु ।
को जोयइ सुहु भूमगालउ
किं हरिसिउ किं रोसें कालउ ।
पहु आमणु लहइ धिट्ठणु

- ६ सवण महुरय=सवण की मयुर । पउत्त=प्रोक्त=बचन । आणापसरधारणु=आणा के प्रसार की धारण करने का लिए । महेप्पिणु=आदर करके । वकनणिपसणु=वक्ता को का पहनना । कंदरमन्सि=गुफा का घर । वणहलभोयणु=वनपत्र का भोजन । परपयरय धूसर=दूसरा की पन्ना से धूमरित । किंरसरि=मक्का की नली । पाउसमिरिहरि=पावस की सोना धारण करने वाली । मोल्ले=मीन स । सतिह=गति ह । पणवु=पणु=सरन सीधा । पलाविह=प्रलाप करने वाला । महुर पयपिह=मीठा

पतिरत्नमनु रिप्पोहत्तु
 मोउ जहु महु मारिद अरु
 अउवु पमु पडिय पनाविन ।
 अल्लियदिमवानाहरे
 छलहसीउ मपरु कुरुहरे ।
 महारपनरिह चाहुनागर
 केन वि गुरि र होह सेवार ।

धन

अरविन्द धनगुम्हिरह धनविमलवसरह ।
 को बाउह समुह बाउ रणे कोमदिन्दरि निमुरह ॥

(७)

आरजान

अहवा वेदि कि हन अ मनाम दुस्तद ररु ।
 व जो तिसरमिन्नसे निवड परसे वम्भ कि हुदुह ॥
 कचपुडे जहु विरह
 मोनिनगमे मरुह वर ।
 लीनमयारि देउनु मोड
 मुचरिमिनु त्तिनु मयि रोडह ।
 कम्पारकम्पु रिमु मर

बोनं बाण । धन = धन का बाण या धन का रत्न ।
 धनविमलवसरह = धन और स्वयं के विदारण के स्वभाव बाण ।
 मरिद धनिका के घर में । समुह = समूह का हो सकता है ।

७ विद्वन्मित्रमित्रोव कृपा है । मरु = मर । लीन कार्य = लीन

कोइयेत्तद्दु उइ पारंमइ ।
 तित्तमनु पयइ दहिनि चत्तुतरु
 तिसु गेणइ मप्पदु दोयत्रिक्क ।
 पीयइ कसणइ लोहियसुक्क
 तम्मे तिसुक्क सो माणिसुक्क ।
 जो मणुयत्तणु भोण गामइ
 तेण समाणु हीणु ओ मीसइ ।
 चित्तु ममत्तणि ऐय शियत्तइ
 पत्तु कलत्तु तित्तु मचितइ ।
 मरइ रसणप्पसणरमदुद्धउ
 मे मे मे करतु चिइ मेइउ ।
 गव्वइ पल्लयसालमइल्ले
 दम्मइ दुक्कम्भयासणाले ।
 मज्जरु जइ महिमउ मइतु
 होइ जीउ मम्मदु माइतु ।

धत्ता

केलामदु जाइनि तययरणु ताण भामितु त्रिगइ ।
 जेणेइ सुत्तसट्ठापरारि समारिणि तिम टिगइ ॥

के लिए । मुत्तणिमित्तु=मुक्ति के लिए निण नुण मणि को भोक्ता है ।
 वप्पूरायरक्कम्भु=वप्पूर और अगद के धूर्तों की नष्ट करता है ।

आरणा

ज दिण्ण महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्त ।
त मट लिहियसासण कुल निट्सण हरइ को पटुत्त ॥

बटुलि का उत्तर—

केसरि केसरु घरसइ यणयनु
मुहइहु सरणु मग्गु घरणीयलु ।
जो हत्थेण द्विअइ सो केहउ
किं वयतु कालाणलु जेहउ ।
हउ सो पणमि को सो मणइ
महिल्लहेण कअण परमुणइ ।
किं जम्मणि देअहिं अहिसिचिउ
किं मदरगिरिसिहरि समन्चिउ ।
किं तहु अग्गइ मुरवइ णन्चिउ
सिरिसइ रिणियइ किं रोमचिउ ।
अक्खु दडु व तासु नि सारउ
महु पुणु ण वृ भारहु केरउ ।
करिमुयररहनरुडिभयरइ

८ दिण्ण=दत्ता दिया । दुरियणासिणा=दुस्ति नाशी-पाप का नाश करने वाले ।
वरसइ यणयनु=वर सती का स्तनवन । मुहइहु-सरणु=मुमट की घरण ।
केहउ=वसा । जेहउ=जैसा । मायणु=गज ।

९ सज्जोए=सज्जात स जुगनु से । अण्णणे=अन्नान से । वायसेण=
कोए से । विग्गह=बैधा जा सकता है ? वसहण=वपम=वन से । वग्गु=

फोहयछेत्तहु षड् पारंभइ ।
 तिन्नमनु पयइ दहिरि चदणतरु
 यिसु गेण्डइ मय्यहु दोयनिकरु ।
 पीयइ षसणइ लोहियसुन्डइ
 तरुं यिकरु सो भाणिरुइ ।
 जो मणुयत्तगु भोण गामइ
 तेण समाणु हीणु को मीसइ ।
 चित्तु ममत्तणि शेय शियत्तइ
 पत्तु फलत्तु त्रित्तु मचितइ ।
 मरइ रमणफ सणरमददुइ
 मे म मे करनु जिह भेइउ ।
 मज्जइ पलयनालमहूँ
 डग्गइ दुक्खहुयासण नालें ।
 मनइ हु जइ महिमउ मइनु
 होइ जीउ मरुहु माहु डलु ।

पत्ता

केलामहु जाइरि तययरगु ताण भासिउ किग्गइ ।
 जेणेह सुत्तमइतापरि मसारिणि तिस ठिवाइ ॥

के लिए । मुत्तणिमित्तु=मुक्ति के लिए, निह गुण मणि को मोन्ता है ।
 कप्पुणायस्सवहु=कपूर धोर ययइ के धृत्तों को नष्ट करता है ।

आरणा

ज दिण्ण भद्दसिण्ण दुरियण्णसिण्ण णयरदेसमेत्त ।
त मइ लिद्धियसासण कुल विहूसण हरइ को पहुत्त ॥

बहुरत्ति का उत्तर—

केसरि केसरु वरसइ थणयलु
सुहडहु सरणु मग्गु धरणीयलु ।
जो हत्थेण द्विणइ सो केहउ
कि थयतु फालाणलु जेहउ ।
हउ सो पणमि को सो भण्णइ
महिस्सडेण फणण परमुण्णइ ।
किं जम्मणि देवहिं अहिंसिचिउ
किं मदरगिरिसिहरि समच्चिउ ।
किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ
सिरिसइ रिणियइ किं रोमच्चिउ ।
चक्कु दडु त तासु जि सारउ
महु पुणु ए कु भारहु केरउ ।
करिसूयररहवरुडिंमयरह

- ८ दिण्ण=दत्ता दिया । दुरियण्णसिण्ण=दुरित नाशो पाप का नाश करने वाले ।
वरसइ थणयलु=वर सती का स्तनतल । सुहडहु-सरणु=सुभट की शरण ।
केहउ=कहा । जेहउ=जैसा । मायगु=गज ।
- ९ सज्जोए=सज्जोत से जुगनु से । अण्णणो=अन्नान से । वायसेणु=
कोए से । विज्जइ=बैसा जा सकता है ? वसहेणु=वपय=बल से । वग्गु=

एर णिदणमि रणि जे विमहारइ ।
 भरहु हरइ किं मन्हु भूयामरु
 तइ चुम्बइ जइ सुयरइ निणवरइ ।

घत्ता

तट्ट मेइणि मट्ट पोयणणयर आदनिणिदे दिणणउ ।
 अमिइउ पडउ अमि मिट्टिसिट्टि जइ ए सरइ पडि पयणणउ ॥

(१)

आरणाल

ता नूण जपिय किं सुनिपिय अणमि भो कुमारा ।
 बाणा भरहपमिया विज्जभूमिया हावि दुण्णिशारा ॥

दूत को फटकार—

पथरण किं मेरु अलिउणइ
 किं सरण मायगु अलिउणइ ।
 मग्गोण रति निसेउणइ
 किं पुट्टेण उज्जहि मोमिउणइ ।
 गोपणण किं णट्ट माणिउणइ
 अण्णायें किं निणु जाणिउणइ ।
 बायसेण किं गरहु गिरम्भइ
 शयनमलेण कुलिमु किं विज्जइ ।
 परिणा किं मयारि मारिउणइ
 किं वमहेण उणु पारिउणइ ।

बाप । ममहु=माक चद्रमा, हेरुट्टण=साँप य । विणइ=नीया जा
 सवता है ।

किं हसं ससकु धरलिङ्गइ
 किं मणुएण कालु कउलिङ्गइ ।
 डेंडुहेण किं सपु ढसिङ्गइ
 किं कम्मेण सिद्धु असि ढिङ्गइ ।
 किं णीसासें लोउ णिहिप्पइ
 किं पइ भरहणराहिउ जिप्पइ ।

घत्ता

हो होउ पहुप्पइ जपिण राउ तुहुप्परि वग्गइ ।
 करालहिं सुलहिं सच्चलहिं परइ रणगणि लग्गइ ॥

(१२)

आरणाल

ता नूउ त्रिणिग्गमो णिययुर गमोनम्मि णियणिवासे ।
 सो त्रिण्णइ सायर सारसायर पण्णउ महीस ।

भरत का दूत से प्रतिवेदन—

विसमु द्वेष याहुनलि खरसरु
 खेहु ए सधइ सधइ गुणि सरु ।
 बउजु ए बधइ बधइ परियरु
 सधि ए इच्छइ इच्छइ सगरु ।
 पइ एउ पेच्छइ पेच्छइ यगलु
 आण ए पालइ पालइ णियधलु ।

खर खिहणमि रणि जे विमहारइ ।

भरहु हरइ किं मज्झु भूयामर

तइ चुम्बइ जइ सुयरइ जिणवर ।

घसा

तट्ट मेइणि महू पोयणणवर आइजिणिदे दिण्णउ ।

अग्निइउ पडउ असि सिहिसिहहिं जइ ए सरइ घडि पयण्णउ ॥

(६)

आरणात्

ता दूण जपिय किं सुविप्पिय भणसि भो पुमारा ।

चाणा भरहपेमिया विद्धभूसिया हानि दुण्णिगारा ॥

दूत को फटकार—

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ

किं स्वरेण मायगु गलिज्जइ ।

मज्झोण रवि खित्तेइज्जइ

किं घुट्टेण जलहि मोमिज्जइ ।

गोप्पण किं खड्डु माणिज्जइ

अण्णाणं किं निगु जाणिज्जइ ।

नायसेण किं गरुडु शिरुमइ

खयमलेण कुलिसु किं पिम्मइ ।

वरिणा किं मयारि मारिज्जइ

किं वमहेण वग्घु तारिज्जइ ।

किं हसं ससकु धरलिञ्जइ
 किं मणुएण कालु वरलिञ्जइ ।
 ढेंडुहेण किं सपु ढसिञ्जइ
 किं कम्मेण सिद्धु उसि विञ्जइ ।
 किं खीसासं लोउ खिहिप्पइ —
 किं पइ भरहणराद्धिउ जिप्पइ ।

धत्ता

हो होउ पटुप्पइ जणिएण राउ तुटुप्परि वग्गइ ।
 करनालहिं सूलहिं सन्वलहिं परइ रणगणि लग्गइ ॥

(१७)

आरणांल

ता दूउ त्रिणिग्गमो थियपुर गमोनम्मि थियणिवास ।
 सो त्रिण्णइ सावर सारसायर पणनिउ महीस ।

भरत का दूत से प्रतिवेदन—

विसमु देव धाहुबलि थरेसरु
 शेहु थ सधइ सधइ गुणि सरु ।
 कञ्जु थ वधइ वधइ परिंयरु
 सधि थ दच्छइ दच्छइ सगरु ।
 पइ थउ पेच्छइ पेच्छइ ययलु
 आण थ पालइ पालइ थियधलु ।

१२—परियरु=परिकर=सेना सात्र सामान । सगरु=युद्ध । धाणु=धाना ।
 वड्डइ=निकसता है ।

मागु ग छट्ट छट्ट मयामु
 दयगु ग चित्त चित्त पोगिमु ।
 मति ग मण्ण्ड मण्ण्ड कुलकलि
 पुद्द ग देद देद माणमति ।
 तुम्मु ग मयड मयड मुण्णवड
 अगु ग कट्ट कट्ट मड्ड ।
 देय ग देद माड तुद पोयगु
 पर जाणमि देसड रणमोणु ।
 दोयड रयण्ड गड करियण्ड
 दोणसड प्रनु मरररयण्ड ।

घञ्जा

सत्रागु कुलम्मु पुद्दहि मत्तयम्मु उ उम्म ।
 नञ्जायमिचित्त सामरिमु अरसे मड्ड पुम्म ॥

(११)

आरण्य

आमोमिअममारमो मयिययमो तरणिमराओ ।
 उ मरमयि उ माओ मिदि बाइआ मद्द नयणओ ॥

सध्या का चित्रण—

मन्त्रायनज्ञगु जो ममिय
 सो वमनलकलोलदि ममिय ।

११ मन्त्रायन ज्ञगु=मन्त्रायन ज्ञान । मन्त्रायनविदुः=मन्त्रायन स्त्री केन्द्र । मन्त्रायन विद्वि=मन्त्रायन स्त्री जो दूत सिना है । तमोह

सभारायघुसिणु ज सकिउ
 त तमोहमयणाहें ढकिउ ।
 सभारायत्रिडवि जो फुल्लिउ
 सो तमतवेरमउपेल्लिउ ।
 चदमइ दें तमवरि भग्गउ
 किं जाणहु सो तासु जि लगगउ ।
 मयणिहेण दीमइ सुहयारउ
 तप्पवेसु वइरिहिं भल्लारउ ।
 जिसइ गउस्सहिं थणयलिं घोळइ
 पणुहारु व ससितेउ णिहालइ ।
 रघागारु वियउ अवारइ
 दुद्धसक पयणइ मज्जारइ ।
 रदपासेयनिंदु तेणुवज्जु
 दिद्धु भुयगहिं या मुत्ताइसु ।
 दिद्धु पत्थइ दीहायारउ
 परि पइसत्तउ किरणुम्भेरउ ।
 मोरें पडक सप्पु त्रियप्पिवि
 मुद्धे वइ व य गहिउ भइप्पिवि ।

धत्ता

गगामरि इसपक्खदलइ पियविरहिं णिगडयलइ ॥
 जायइ सभियरपनखालियइ धवलाइ जि णिरु धवलइ ॥

१

भयणाहें=तम समूह रूपी मगेन्द्र । तमतवेरनवइ=मधिकार रूपी
 महागज । चदमइ दें=चन्द्र मूनेन्द्र । तमवरि=प्रधवार रूपी राज । जाणहु=
 पुत्र । तप्पवेसु=तत्त्वभेष । गवक्खहिं=गवालों गोलों से ।

दृष्टि युद्ध में मरत सी परानय—

इय प्रितियि द्रन्धिन् मन्तिमनु
 युद्धाणुगामि शीसेमु मनु ।
 अरन्धिउ रोमु ए परियणेहि ।
 आयरुमण मियभोयणेहि ।
 सरुमायमार आमएणु दुक्कु
 नेहि मि अथभोइन् एरुमेरु ।
 उद्धाणुणु पट्टु मयउलिहिं मोडु
 पेच्छड ररिन्तिउ य रिन्निअडु ।
 हेट्टिल्ल निट्टि उररिन्तियाड ।
 एगिनय दिट्टिड अयिहाल्लियाड
 ए हाति कुगड पचमगईड
 विमयामा एन मुण्णिउरमडड ।
 ए तागमि भग्गी रिहरडड
 ए सैलभिन्नि गगाणुईड ।

- १४ युद्धाणुगामी=युद्धानुगामी । परिहराडि=परिवर्तनों में । आयव कमणु मिय सोवएहि=ता सदे आधों माने । उद्धाणुणु=ऊँचा हुए पच्छड प्रेक्षयत=निर्वाह दता । हेट्टिल्ल निट्टि=जाकी दृष्टि । उररिन्तियाड=ऊपर की दृष्टि । अथभोइन्=अविचलित । पचम गई=पचम मन्ति=मोम । विहरडड=विहारा गुल के प्रेम में । मय मिति=मय मिति=हिमानय रूपा दीवान । मुमियरुई=वड मन्ति=वडमा का विरगुों द्वारा । एमा बाटुवनि ने अरना अविचलित दृष्टि में भगव की दृष्टि बाधन ही जीव निदा जेन मानगति मुक्ति का । मुनि की बुद्धि विपस्या को, गुल का प्रेम तपम्बा की, गगन्ती हिमानय की दीवार का जोतत इयाणि । मधी द्योहिमारण दवतभोइ=वडमा क प्रतिनिध्व म हरिण का सुहर विममें

ए कलपति ससियरतईइ
उमुओलि व मडलिय रनिरईइ ।

घत्ता

ठिउ हेद्वामुहु चम्पनइ णिजिनउ पडिभडिदिठिपहावहि ।
घल्लियणउसुमनलिहिं एणतणुरुहु सथुउ देवहि ॥

(१५)

सरोवर का वर्णन—

मञ्जोमत्तमायगलीलायद्वारा
रमायासवच्छत्यलोलवद्वारा ।
फणिदेण वादेण इ देण दिइ ।
पुणो दो रि राया मरते पड्डा ।
सरतेहि आनोइय सच्छणीर
बिसाल गहीर तुसारोहत्ता ।
महापोमसुत्ताहिमाणिककदित्त
भरुद्धयति गिच्छिधूनी त्रिलित ।
महीरगर गतल्लोलमाल
मरालीपहालगलीलामराल ।
सिगीणेउरालायण्णत मोर
मिसाहारपर तनचूवउर ।
तरतामर रोयररद्ध कीटा

सिंह दोर रहा है । समुद्र गङ्गा की उद्यतती हुई पेनराशि से जिसके किनारे
वन गए हैं गुजन करते भ्रमरों का जिसमें घोलाहल हो रहा है सारसों
से भरा हुआ । सूर्य की मुक्त किरणों में पून जिसमें सिले हुए हैं जिसमें
पक्षी और यक्षों के शब्द सुनाई दे रहे हैं गढ़ात हुए हाथियों की सूहा
व जिसका पानी मया जा चुका है ? (सरोवर का वर्णन)

१५ सुदरानु=सुंदर वी । दीसइ=दृश्यने दिखाई देती है । वाराली=वारावली ।

ननु म तमीण लयावत्तणील ।
 ससीद्धादिसार गढेयतमीह
 समुत्तु गफेणा वलीद्वरण्वृहं ।
 भुण्णतालिनीलाहल सारमिल्ल
 इण्णमुस्सपायावली पुल्लपुल्ल ।
 सुयाणेय पम्बिद जम्बिदमद
 पमज्जत इत्थिदसोडापिमद ।

घत्ता

इहि त्रिणिण त्रि जण ओयरिय पट्टणा धित्त जलनलि भायद्व ।
 पियलड सप्परि मेहलहे ए मदादणि दिमदरिरायद्व ॥

(१६)

जल पुद्ग—

कडियल धावती सु दरासु
 दीसइ तारालि न मन्नासु
 ए मरगय महिहरि नान्कति
 ए णील महोरहि हम्पति
 डेयती दीमइ सलिलधार
 ए कट्टमइ कटिय सुतार
 ए सुरसरि चणल तर ग पार
 गयणुल्ललत मम्मसु सुमार
 आनसिवि पुण् भरहद्व त्रिमुक्क
 एदा तणए गुणल मन्नस्स

सलिले णमोत्तड पूरियाइ
 बहु परियण सयणइ' जूरियाइ
 रग्घोसित्ति जिणत्त महासरेहिं
 नाट्टनलि णराधिय किंनरेहिं

यत्ता

धीसु धुणतु सुयतु धलु सरवर धारि पवाहें सित्तत्त ।
 पडि ओसारियत्त पुद्दइत्त णाह करिदु करिदें जित्तत्त ॥

(१७)

मल्ल पुद्द—

तथो भुयभइणि भायर लग्ग
 णरिदिसिरोमणि चट्टपयग्ग ।
 सुलीण कुमारणि माणमइल्ल
 पहाण महात्तल जिणिय जि मल्ल ।
 सुकचण कु डल मडियग्ग
 पसारियवाह सरोसपयड ।
 चिरात्तस चट्ठवावियणाम
 सुजिक्कमत्तं णराहित्तकाम ।
 समत्थ सिरीण रईण णिक्केय
 महारह भारह भन्धरतेय ।
 मिलति मिलेप्पिणु हत्थि घरति
 घरेप्पिणु देह घडेत्ति पडति ।

- १७ बडे भाई भरत को बाट्टन ने उठा लिया इस पर बवि की उपेक्षाएं हैं
 मानो शुभ परिणाम ने जीव का उद्वार किया हो, सज्जन समूह ने सुनवि को
 का म का, मुनिवर सन विषय का किसी महान् राजा ने देस का, इत्यादि ।
 णिय कृत्त पईत्त=निज कृत्त प्रदीप । सुत्त भुत्ति चित्ताणुपट्टि-आगम की धृत्ता

पदन वि गान्गिर्वग्गु ॐनि
 कदीयलु कट्टु गिरु भिविट्ठनि ।
 विरुद्ध वि गाह यत्तेण सुयनि
 सुण्णिगु -ट्टिहनि भज्जि यत्तनि ।
 अलसुयनुम्भ विहाणमयाड
 पवण्णउरुद्धउरेदणयाड ।
 कर्दनि वि घोर अरिहयिया
 गिरुत्तु ग्याड मयय मयय ।
 दधो हयमाणिगिनाउमण्ण
 एरामरमगल्लदवण्ण ।
 सुग्गिच्छरी कयोर भुण्ण
 अग्गिच्चिग्गि सुण्ण सुण्ण ।
 पट्टम धरेण कया पत्तावि
 परण विग्गु परण क्कमावि ।

पत्ता

कु धरें राउ समुद्धाग्गि ग्यायगिउरिगिमेरियकट्ट ।
 कयहण्ठाकोट्ठत्तेण डि उ पुग्गरेण गिरि मन्द ॥

(१८)

जट्ठि सुपुत्तें य सुवसु
 कमलावरण य राउट्टु ।

म अयन विम वा अट्टमन कील कय मच्छा ३ ?

१८ विमानद काण्ड-विमानय गगग, तैम कमल-मरावर कु पाता मार २-
 हो । स्वच्छदुह स्वच्छ-पाण्डव मे अता दृष्टा दे । धाट्टे-न सुग

माहुयलि ने भरत को उठा लिया—

ए सुहपरिणामें जीव भन्बु
 ए सुयणसमूहें सुकइन्बु ।
 ए मुखिवरणाहें ययविसेसु
 ए एरवरिन्णाएण देसु ।
 ए गमणवियारे नालभाणु
 ए वाण चापयकुसुमरेणु ।
 ए कामुयसत्थें कामचार
 ए सो जि तेण ससारसाह ।
 म्वयराभरमाणविमदणेर
 पढमेण पढमनिणणदणेर ।
 अट्ठसुद्धें बहुमण्णियधणेर
 फुद्धें अगणियसज्जणेर ।
 परिपालियसयल वसु धरेण
 ता चित्तिउ चक्कु सुरुधरेण ।
 जमणाढानलयहु अणुहर तु
 उद्धाइउ चावसु विण्फुर तु ।
 रयिन्निवेण व जियविसमवेउ
 तें परियच्चिउ माहुयलिदेउ ।
 थिउ दाहिणमुयन्ढहु समीउ
 नो एहइ किर णियकुलपईउ ।

को सुरयष्टिचित्तागुपट्टि
को एम जिणइ जगि चम्पट्टि ।

यत्ता

मिमिउ भरहणराहिउड गह्वरजीसु जोगेण पममिउ ।
गयणमाउ सुरमुम्भियहि पुण्णवपतिहि गु पइमिउ ॥

(१२)

वाटुनलि की आन्मग्लानि—

ए कमलमरु हिमादयदायउ
रुद्रहृउ रक्खु य विन्हायउ ।
ज ओट्टुल्लियमुहु पट्टु न्दिउ
त उलि भणउ हउ नि निक्किउउ ।
चक्कउट्टि थियगोत्तहु मामिउ
जेण महत्त भाइ ओहामिउ ।
हा किं किञ्चइ भुययलु मेरउ
ज जायउ सुहिउण्णगारउ ।
महि पुण्णालि न केण ए भूत्तो
रउत्तहु पडउ उउनु सममुत्तो ।
रउत्तहुकारणि पिउ भारिउत्त
दपउहु मि निमु मचारिउत्त ।

अपोमभ । हउत्ति=वे हो । निक्किउ=निहृत् । सामिउ=स्वामी ।
आहामिउ=पराजित किया । मुत्तिगारउ=मुत्तियों के मति दुनमा
करने वाला । पुण्णालि=पुष्पवा=दण्ड । उतो=नागे । सममुत्ति=
समोचीन मूर्ति । रउत्त पउ वउ=राग पर वन पउ । उकारहु=नाग को

निह अलि गर्धे गउ सघारहु
 तिह रज्जेण जीउ तजारहु ।
 भइसामतमतिक्रयभायउ
 चितिज्जतउ सन्धु परायउ ।
 तडुलपसयहु कारणि राणा
 णरइ पडति काइ अपियाणा ।
 डड्ढउ रज्जु जि दुक्खु गुरुक्खउ
 जइ सुहु तो किं ताए मुक्खउ ।
 सुहणिहि भोयभूमि सपययर
 षहिं सुरतरु षहिं गय ते कुलयर ।

धत्ता

दुल्लभहु दुक्कियलक्षणहो दूसहदुक्खलदुरतहो ।
 भणु दाढापजरि पडिउ णरु को डडरिउ कर्यतहो ॥

(१३)

भरत की प्रतिक्रिया—

सज्जनकरुणें सज्जणु कपइ
 त सिमुणिनि भरहाणुउ जपइ ।
 जइयहु हउ सिमुत्ति सहकीलिउ
 तइयहु पइ पि किं ण परितोलिउ ।
 मग्गु पि तुग्गु पि करणु पराहउ
 मग्गु बि तुग्गु पि करणु महादउ ।

प्राप्त होता है । दाढापजरि=घड़ी पजर में । डडरिउ=ठहर सका ।

१३ सज्जनकरुणें=सज्जन की करुणा से । भरहाणुउ=भरतानुज । पराहउ=

जे गय ते सयल रि मगिगि मिमु
 भावइ भोउ ताह् खावइ विमु ।
 तेत्यु ए वाइ रि दोमु तुहारउ
 थंदिण्जु तुहु जगि गरुयारउ ।
 जइ ग्गहि धरिति ए ममिच्छदि
 ता जे दिष्णी तहु चि पयच्छदि ।
 तदि अयमरि ययणेहि एिरोहिउ
 मतिदि भमिणाहु मंयोहिउ ।
 सुउ सनाणि थवोय महाथलि
 गउ फेलासु परायउ भुयथलि ।

धत्ता

वणु जतु सुयंतु एरिदमिरि महि महंतु अदिमाणिउ ।
 सारेयहु राउ विसण्णमणु मतिदि महइ अणिउ ॥



पराभव । महाइउ=महाहव । पयच्छइ=गे । एिरोहिउ=निरोपित, रोजा ।
 सवोहिउ=सवोधिनि सवाधिनि किया । परायउ=परायात=पहुँचा । महइ=
 बलपूर्वक । मतिदि=मत्रियों के द्वारा ।

महाकवि पुष्पदन्त

'श्रीकृष्ण का चरित्र, पुष्पदन्त के महापुराण का सबसे अधिक महत्वपूर्ण चरित्र है। पादवा और कृष्ण से सम्बन्धित घटनाओं में कुछ भिन्नता होती हुई भी जहाँ तक कृष्ण बाल यौवन सीताप्रो का सम्बन्ध है, हिन्दू परम्परा से बहुत समानता है। काव्य और मार्मिकता की दृष्टि से भी यह बेजोड़ है। इसमें कृष्ण चरित्र के कई नए सन्धों का सूचना है उदाहरण के लिए कृष्ण के 'बाल रूप' का बलन, राधा का उत्पल उपात्म इत्यादि।

कृष्ण की बाल लीलाए

(१)

दुन्द

ए हरिसवसणनलदरु ए रिउयणतिमिरओ ।
जोइउ दीनएण हरि मायइ ए जगकमलमिहिरओ ॥

रात में चुपचाप बालक कृष्ण को ले जा रहे हैं—

कण्डूमासि सत्तमि सनायउ
मारण कलिक कसु ए आयउ ।
इउ आणमि सो दइउ मोहिउ
महिउइउमलणलम्पसाहिउ ।
लइयउ चामुणउ उमुणो
घरिउ गारिवारणु नलणो ।

१ हरिसवसणनलदरु=हरिवा रूपी वस्त्र (वाम) के लिए=नए मेघ की तरह । रिउ यणतिमिरओ=धनु की आवाँ के लिए आचकार । जोइउ=

गिमि मंगलिय छत्तमगिय
 म प्रियागिय गिरु धूरें डयें ।
 अगड ररिमिय तिमिरिहगिहि
 यगड यमहु पुर तहि मिंगहि ।
 को प्र पराड अमरमिममउ
 फालहि फालिहि मगपयामउ ,
 देरड थोडड आरयहु ठड
 लगड माहयउरगुगुडड ।
 जमलकथाडड गाढविडगुड
 गिहडियाड गु वडरिहि पुणुड ।
 पुलिमायमवलयरियपा
 थोल्लिउ मुमहुक महुराण ।
 छत्तालमि का विर गिंगाड
 को गिमिममड टयारहु लगड ।
 मामर मीरि ममि य मुहमगु
 जो तुह गिनिहगियल्लिह मगु ।
 जो नीबनमउप्रिहाउगु ।
 पोमारडकरमरिमेन्लानगु ।

दमा । दीवएव=पुत्र म । जग कमन मिहिरा=ब्रह्मणो कमल के लिए
 मूय । बगड=वृष्ण । मलमि=मातृवै । मागण वलि=भावन का प्राप्ति
 रसन यात्रा । महिव=पमाहिर=मंगलिन के मंगलों में प्रभावित । वारि
 वारगु=मंगल । वडावै=वतराम न । छत्तमगियरें=पत्र के छपनार
 के समूह म । थयें=पत्र=दूतरा । यमग=घात । पराउ=परायान =
 घाया । मग पयाउ=मागप्रमाण । घावय हुठ=घाति का
 हुटित करने वाला । माहव अगगुगुड=मापन के अगु का धूरा ।
 महुराण महुराण न (ठगन) । गिनि मम=निता क समय । गूट अगु=
 गृह गन । गिनिग गिनि विह मनु=निनि निग विध्वज=मथन बैटियों

सो णिगउ तुह सोम्बजणेरउ
उगसेण नूअ भच्छदि सेरउ ।

घत्ता

अउ भणुत गय ते हरिमैं कहि मि ण भाइय ।
णयरहु णीसरिणि जउणाणइम सति पराइय ॥१॥

(७)

यमुना का वर्णन—

दुपई

ता कालिदि तेहि अउलोइय मथरबारिगामिणी ।
ए सरिण्यु धारविधिय महियलि घणतमनोणि जामिणी ॥

आरायणतणुपहपती त्रिब
अजणगिरिउरिदरती त्रि ।
महिमयणाहिरउयरेहा इन
बहुतरग जरहयदेहा इन ।
महिहरदति दाणरेहा इन
फसरायनीनियमेरा इन ।
बसुइणिलीणमेहमाता इन
साम समुत्ताइल वाला इन ।
ए सेगालगल दन्खालइ
फेणुपरियणु ए तहि धोलइ ।

यो धामने वाला । जीवजस बइ विहावणु=जीवमसा पति विहावक=
भावजमा वे पति (धम) को मारने वाला । मोवजणेरउ=मुख उत्पन्न
करने वाला ।

२ कालिदी=यमुना । मथर बारि गामिणी=जिमका जल धीरे धीरे बह रहा था ।
भसि=शीघ्र । जउण नदी=यमुना नदी । सरि ह्यु धरि=नदी का रूप

गेभ्यस्तु तोड रत्तव
 ग परिहृइ चुयट्टसुमहिं कुरु ।
 मिणरिथणमिहृइ ग पाड
 रिभमेहिं ग समउ भावड ।
 पणिमणिमिरणहिं ग उज्जेयड
 कमलन्दिहिं ग रुहु पतोयइ ।
 भिमिणिउत्तवानेहिं सुणिम्मन
 च्चाइय ग जलरुणनटुल ।
 म्बलम्बलति ग मगलु घोमइ
 ग माहवहु पम्पु सा पोमइ ।
 गउ कासु रि मामण्णह् अण्णह्
 अम्मं तूमइ जग्ग मज्जण्णह्
 निहि भाइहिं यम्पउ तीरिणिचनु
 ग परणारिनिहत्तउ रुज्जनु ।

पत्ता

परिमिउ ताड तनु रि जाणहु ण्हहु रत्ती ।
 पेस्मिन्नि महुमहलु मयण्णं ग मरि रि रिगुत्ता ॥२॥

(३)

दुपइ

गुड उत्तरिणि नायवोरतरु जनि मभीहियामण ।

पिट्ठं गटु तहि सो पुच्छिइ गिक्कडिल ममामण ॥

पाणम कर । विव न्व=ममान । जरयन्ता इवे=बुद्धाय म आहत गरीर
 की तरह । उज्जायट्ट=उत्ताय करना है । प्रमाण करना है । पत्ताप=
 प्रतीकयनि=मना है । मिमिणापत्त धानहि=कमन पत्ता की पानी ।
 विगुत्ती=वजा गई ।

उपरिदि=उपर कर । जेव=जय तव । गिक्कडिल=निक्कड माव य ।

नन्द की पुत्री का श्रीकृष्ण से विनिमय—

महु कतइ देय्य ओलगिय
 धूय ए सु दरु पुत्तु नि मगिय ।
 देत्रिइ दिण्णी सुय किं मिन्नइ
 तहि केरी लइ ताहि जिं निन्नउ ।
 जइ सा तणुग्हु पडि महु देसइ
 तो पणइणिहि आस पूरेसइ ।
 ए तो गधधूचरफुल्लइ
 चारुभक्तरूपाइ रसिल्लइ ।
 देमि ताम जा देवि गिरिक्खमि
 ता हलहेइ भणइ सुणि अक्खमि ।
 लइ लइ लच्छिविलासरणणउ
 एहु पुत्तु तुइ देविइ दिण्णउ ।
 भति म करहि काइ सुहु जोयहि
 मेरइ करि तेरी सुय डोयहि ।
 ता हियउल्लइ एहु विगप्पइ
 एरवेसेण भडारी जपइ ।
 लेमि पुत्तु मिं पत्तरपल्लामें

आलगिय=सेवा की । भगिय=भगो । धूय=लटकी, क-या । दिण्णी=दी ।
 तहि केरी=उसकी । पडिमहु देमइ=प्रति दास्यति=फिर देगा । पणइणिहि=
 प्रणयिनी की । चारु=सुन्दर खाद्य रूपा मे । रसिल्लइ=रसीले । हलहेइ=
 बलराम । भक्कमि=वहता हू । लच्छि=लक्ष्मी के विलासो से रमणीय ।
 देविइ=देवी न दिया । जोयहि=देखते हो । मेरइ=मेरी । तेरी सुय=तुम्हारी
 क-या । हियउल्लइ=हृदय मे । एहु=नन्द । विगप्पइ=विकल्पयति=विकल्प
 करता है । पत्तर पल्लामें=प्रथम प्रलाप से क्या । चवण्णिणु=बह कर । कमल

परिपालमि मण्णैहमग्गा ।
 एम पवेप्पिणु अत्थिप थानी
 वलरुक्कमलि वमलमोमानी ।
 मङ्ग पिठट्ट माण्णै म्मिं
 मेट्ट थ आनिमियत्ति रिंत्तिं ।
 इत्त मज्जथत्त गत्त मो गोत्तु
 जण्णय तण्णय अट्ठिआया रात्तु ।

धत्ता

सुथ छण्णममियण्ण दयइयहि पुरत्त लिवेमिय ।
 वेण वि ट्ठिअरिण्ण थरण्णट्ट वत्त ममासिय ॥३॥

बाल लीला —

दुर्ग

धनीधूमरेण परमुक्कमरेणु पिणा मुरारिणा ।
 वीतारमयसेण गोराजयगोभीद्वियद्धारिणा ॥

रंगनण रनतरमत
 मयत्त धरित्त भमनु अण्णत्ते ।
 मनीरत्त तोदित्ति आरट्ठित्त
 अट्ठिअरोलित्त ट्ठित्त पलोट्ठित्त ।
 का वि गोवि गोविट्ट लग्गी

छोमार्ने = वमर की तरफ मुंह । विट्टु = विष्णु । मज्जथत्त = महताप ।
 गोत्तु = गायु । छण्णममियण्ण = पूज्यमान ममान भुवनात् । वत्त = वाना =
 वात । ममासिय = वट्ट ।

५ तिल मुरारिणा = ज्वन भृगाद्ये न । गोराजयगोभीद्वियद्धारिणा = गाराजय

एण महारी मयणि मग्गी ।
 एयहि मोल्लु देउ आलिगणु
 ए तो मा मेरलहु मे प्र गणु ।
 काहि नि गोत्रिहि पडरु चेनउ
 हरितणुतेण जायउ फालउ ।
 मूढ जलेण फाइ पक्खालइ
 शियनडत्तु सहियहिं दक्खालइ ।
 थण्णरसिच्छिरु छायात्रतउ
 मायहि समुहु पारघात्रतउ ।
 महिससिलनउ हारिणा धरियउ
 ए करणिनघणाउणीसरियउ ।
 दोइउ दोइणहत्थु समीरइ
 मुइ मुइ माहव कीलित पुरइ ।
 पत्थइ अगणभण्णातुद्धउ
 बालनत्तु जालेण गिरुद्धउ ।
 गु जाम्भुयरइयपओए
 मेल्साविउ दुम्भेहिं जसोए ॥
 पत्थइ लोणियपिण्डु गिरिक्खउ
 कएहे कसहु ए जसु भकिगउ ।

की गोपी का हृदय चुराने वात्रे । रगतेण=रंगते हुए । अद्ध विरोलित=
 धाया विलोपा हुषा । दट्टिउ=टही । पलोट्टिउ=पलोट दिया=उलट दिया ।
 मा मेल्लहु=मल छोड़ो । हरितणुतेण=कृष्ण के शरीर के तेज से । पडरु
 चेनउ=मफेद बपन । थण्णरसिच्छिरु=धन के दूध की इच्छा रखने वाला ।
 दोइउ=टूटने वाला । बाल वत्तु=छोट बच्चे को । महिससिलवउणु=भैस के
 बच्चे को । गु वा=मू गी की । मेल्साविउ=टूटाना । लोणियपिण्डु=नवनीत का

घत्ता

पमरियरयलेहिसहतिहिं सुहसुहकारिणिहि ।
महिह णियाडिणि घरयम्मु ण लग्गइणारिहिं ॥४॥

दुयई

णउ भु जति गोय कयममय णिणिनयणीलमेहइ ।
केसरमायनतिपनिलित्तइ न्हियइ अनयाइइ ॥

गोपियों से घात लीलाण —

घयमायणि अग्लोइनि भायइ
णियपडिनिनु बिट्ठु योत्तायइ ।
हमइ णदु लेप्पिणु अरु बइ
तहु उरयलु परमेसम् मइइ ।
अम्माहीरण तदिणइ
णिह घइयउ परियंदिज्जइ ।
हलरु हलरु जो जो भएणइ
तुम्भु पसाए होमइ उण्णइ ।
हलहरभायर येरिअगोयर
तुहु मुहु सुयदि देव गमोयर ।
तहु धोरतु णइयतु गज्जइ
सुत्तनिउद्ध ण केण लउणइ ।

पिउ : महि=हृष्टु के । णियनिणिघ=समीप रहन पर ।

५. वेसव नित्त=हृष्टु के घरीय की कानि स निष्ठ । घयमायनि=पूतभाजन ।
णिय पडिनिनु=अग्ने प्रतिविम्ब को । बोत्तावइ=बुनाना है । हलरु हलरु=
धीरे धीरे । उण्णइ=नन । यरि अगोयर=घातु के लिए अटस्य । महुइ=

પુદ્ગળાહુ કિર કાસુ ય વલ્લહુ
 અન્નદુરુ યરુ સુરહ મિ સો દુલ્લહુ ।
 વિયલિયપયાફિલેસસંતાવે
 પમરત તદુ પુણ્ણપદ્ધાવે ।
 રાદહુ ધેરત મોન્નુ રાદહ
 મદુરહિ યારિ મસાણદ કદહ ।
 મોહ કપદ પદતિ યમ્મલત્તદ
 સિવિણતરિ મગ્ગદ નૂપલ્લત્તદ

વત્તા

શિયધિ જલતિ દિસ કસે વિણ્ણણ શિયચ્છિદ ।
 જોદસસત્થશિદિ દિત વરુણુ યામ આડચ્છિદ ॥૧૫॥

દુરદ

ફહિય દેય્યાહિં જો રાદણિદ્દેલણિ વસદ વાલ્લઓ ।
 સો પદ નૂપણ મ તિ ક મ્મિસુ તિમારદમચ્છરાલઓ ॥

પૂતના વધ—

જાણિદ્ અરિરરિ	તા તદિં અવસરિ ।
કસાપસેં	માયાવેસેં ।
વલ માયાવિણિ	ઘાદય જોદણિ ।
વચ્છરવાડલુ	મય ત ગોડલુ ।

મધુરા મ । મસાણદ=મરષટ મ । મવલ્લનદ=નદાવ । સિવિણતરિ=સ્વપ્ન મ ।
 નરદસદ=પદ્ધન । શિયચ્છિદ=પૂદા ।

૧ મચ્છરાલમો=મત્સ્યરાજ થો । જોદણિ=યોગિની । વચ્છરવાડલુ=વદ્ધો વે
 રાન્ સે આમુત્ત । પવણી=પદ્ધ થો । પૂણ્ણ=પૂતના । દુદ્ધરગિલ્લત્ત=દૂધ સે

लस्यसिरितण्डहु	खण्डमहु ऋण्डहु ।
पामि पवण्णी	भूति शिमण्णी ।
पमण्ड पूयण	हे महूमयण ।
पियगरुद्धय	आउ वणद्धय ।
दुद्धरसिल्लउ	पियहि वणुलउ ।
त आर्याण्णि	चगउ मण्णि ।
चुययपडरि	गणु पओहरि ।
हरिणा णिहियउ	राहु गहियउ ।
ए मसिमडनु	मोद्ध णयनु ।
सुरहियपरिमलु	ए णीनुपनु ।
सियल्लमुप्परि	विभिउ मण्हरि ।
कहु मीरे	जाणिय मीरे ।
जण्णि ए मेरी	विणियगारी
जीअयहारिणी	रक्खसि उदरिणि ।
अणु नि भारमि	पलउ समारमि ।
इय चित्तवे	रोसु उह्वे ।
माणमह्वे	भिण्डि रुते ।
त च्छदीकते	देनि अण्णते ।
वतहि पीडिय	मुट्ठिउ ताडिय ।
निट्ठिउ तज्जिय	धाम णिज्जिय ।
अणु नि ए मुक्की	एहदि निनुक्की ।
खलहि रसतहि	सुण्णु इमण्हि ।

रिसउ । चगउ = चगा भला ममक कर । चुययपणरि = गिस्तन दूध स मदेद ।
 णिहियउ = पकड लिया । वणु मीरे = कटव दूध स । विणियगारी = बुरा
 करन वाली । भिट्ठि करन = माहें चगान हुए । सच्छेज्जे = जमीकान्त ने ,
 तज्जिय = राटा । पामे = मय स । गह्हि विनुक्का = धाकाश स टिय गई ।

भीमे वालें	कयकल्लोलें ।
लोहिउ सोसिउ	पलु आकरिसिउ ।
दाणउसारी	भणइ भडारी ।
हियरुहिरासव	मुइ मुइ केसव ।
एदाणदणु	मेल्लि जणुदण ।
कसु ए सेउमि	रोसु ए दाउमि ।
जहि तुहु अछइहि	कील समिच्छइहि ।
तहिं एउ पइसमि	छलु ए गयेसमि ।

घप्ता

इय रयति फलुणु कह कह व गोविंदें मुक्की ।
 गर देउय पहिं मि पुणु एउ शिरासिण दुक्की ॥६॥

दुगई

वरनाहलियउसलउहिरिण	गाइयगेयरससए ।
रोमथतयकनगोमहिसिउलसोहियपएसए	॥
अणणहिं पुणु दिणि	तहि शियपंगणि
जणमणहारी	रमइमुरारी ।
घोटइसीर	लोहइणीर ।
भ जइ कु भ	पेल्लइ डिभ ।

पलु=मात । भावरसिउ=सीव लिया । मुइ मुइ=छोडो छोडो । छलु ए गयेसमि=प्रव बोइ छन नहा करू गो । दुक्की=गुह ची ।

- ७ वरनाह=बाहल बामुरी से बहरे । गाइय ससए=भणडा गीत रस गाए जा रहे थे डिभउजण=बच्चे बो । चलाचव=जतना आग बो । द बुलि=दुःखाल योग समय । राहे=लोगो की सोभा से ।

छद्दइ महिय	चक्खइ दहिय ।
कद्दइ चिन्चि	धरइ चलन्चि ।
इच्छइ केलि	करइ दुगलि ।
तहि अमरण	बीलाणिरण ।

गमटा का पड़्यन्त्र—

कयनराह्ये	पकयणह्ये ।
रिक्खासिद्धा	देरीन्दु ।
अनरा घोरा	मयझयारा ।
पत्ता गोदु	गोत्रदु ।
चक्कचलगी	दलियभुयगी ।
उप्परिण ती	पल्लउ करती ।
दिट्ठा तेण	महुमहण्णेण ।
पाण पह्या	णासिवि निगया ।
रत्तिक्किरणहि	अवरदिणानहि ।
इण्डणिए	पियचारिणिए ।
दिहिचोरेण	ददबोरेण ।
मनलनलालो	बद्धो वालो ।
उदुखलए	णिहियउ णिलए ।
सीयसमीर	तीरिणितीर ।
सिसुक्कयझाया	निगयगामाया ।
ता सो न्निओ	अन्निओ अन्निओ ।
इय सह तो	परिचइदतो ।

सयणयार १=नक्कटआकार वाली । गाठ=गोठम । गोत्रइ=गोत्र के लिए
इय । चक्क चलगी=चक्क से अगो नो चलाती हुई । दलियभुयगी=साया को चुचलती

तमुदूहलय	पयणियपुलय ।
लयक्यकण्डहु	जयनसतण्डहु ।
जाणियमगो	पच्छइलगो ।
अरिणिज्जाए	गयणयराए ।
ता परिमुक्क	णियडे दुक्क ।
मारुयचबल	सरुवरजुयल ।
अरोपुलिय	भुयपडिखलिय ।
नीलतेण	मिहसतेण ।
बलनतेण	सिरिकतेण ।

घत्ता

होइनि तालवरु रगतहु परि तटितरलइ ।
रन्लसि केसबहु सिरि धिउइरुडिणतालहुलइ ॥७॥

(८)

राक्षसी का तालफल गिराना—

दुबई

सिरिरमणीजिलासकीलापरिउच्छयले घडतइ ।
ए अरिवरसिराइ विदिसुम्कइ दसदिसिवहि पडतइ ॥ १
ताइ इन्दए सो पडिच्छए ।
पनलीयरो कीलणायरो ।
गयणसंचुए णाइ मिदुए ।

हुई । उदूहलए=उलूखल स । णिलए=बढी म । तटितरलइ=विजली की
सरह षडयन हुए । धिउइ=धानवा है । तालतलइ=तालपत्र । रन्लसि=
राससी ।

८ मिरिरमणी वच्छयले=लक्ष्मी रूपी रमणी के निध, जिनका वध, विलास का

धृद्ध महिय	चमसद दहिय ।
कृद्ध चिन्चि	घरह चलन्चि ।
इच्छद केलि	करह दुयानि ।
रहि अउसरए	कीलाणिरए ।

शकटा का पड्यन्त्र—

कयनएराहे	पकयणाहे ।
रिठ्यामिट्टा	देनीट्टा ।
अउरा घोरा	मयहायारा ।
पत्ता गोठ	गोउदठ ।
चक्कचलगी	दलियभुयगी ।
उप्परिए ती	पलउ नरती ।
दिट्टा तेण	महुमदणेण ।
पाण पइया	णासिनि त्रिगया ।
रनिकिरणह	अउरदिणानहि ।
इनाइणिण	पियचारिणिण ।
दिदिचोरेण	ददहोरण ।
पउलनलानो	बद्धो बालो ।
उदुसलए	णिहियउ णिलए ।
सीयसमीर	तीरिणितीर ।
सिसुऊयझाया	त्रिगयगामाया ।
ता सो णिओ	अओ अओ ।
इय सद तो	परिचद्धता ।

सयणयार १=शकटआकार वाला । गाठ=गोठमें । गावद=गोमोट के लिए दूध । चक्क चलगी=चक्क से अगावो चलाती हुई । दलियभुयगी=साया को बुचलनी

तमुद्रूलय	पयणियपुलय ।
एयऊयऊण्डहु	जयजसतण्डहु ।
जाणियमगो	पण्डइलगो ।
अरिविन्नाए	गयणयराए ।
ता परिमुक्क	णियडे हुक्क ।
मारुयचवल	सरुवरजुयल ।
अगेघुलिय	भुयपडिखलिय ।
कीलतेण	गिहसतेण ।
बलपतेण	सिरिकतेण ।

घत्ता

होइणि तालतरु रगतहु परि तडितरलइ ।
रक्खसि केसबहु सिरि चिरइकडिणतालइलइ ॥७॥

(८)

राक्षसी का तालफल गिराना—

दुवई

सिरिरमणीविलासकीलाघरिबच्छयले चडतइ ।
ए अरिवरसिराइ गिहिलुम्फइ दसदिसिवहि पडतइ ॥ १
ताइ इच्छए सो पडिच्छए ।
पजलीयो कीलणायरो ।
गयणसचुए णाइ भिंदुए ।

हुई । उद्दुल्लय=उल्लूखल से । णियए=वेदी में । तडितरलइ=बिजली की तरह बहकते हुए । पिबइ=बालता है । तालतरुइ=तालफन । रक्खसि=राक्षसी ।

८ मिरिरमणी बच्छयते=लक्ष्मी रूपी रमणी के लिए, जिनका वक्ष, विलास का

ता महारवा	तिजभेरया ।
पु छलालिरी	वण्णचालिरी ।
घाडया म्वरी	जिभिओ हरी ।
उल्ललतिया	एहि मिलतिया ।
वेयातिया	दीह न्तिया ।
उरि ए तिया	घाडेतिया ।
एवामिणा	जाडोसिणा ।
थादया उरे	धारिया खुरे ।
मेहसगहे	मामिया एहे ।

गधी न उत्पात—

सुट्ठुचावरी	कसरिकरी ।
वीह ताडिओ	महिहि पाडिओ ।
वालुसखओ	पुणुविम्वओ ।
जगि एमाइओ	तुरउ धाइओ ।

तालवृक्ष के रूप में रानम न आना—

गहिरहिसिरो	जीवहिसिरो ।
वक्रियाणखो	खाइ टुक्खणो ।
हिलिहिलतओ	महि टलतओ ।
कात्तचोडओ	ए तु जोडओ ।
सन्धिधारिणा	चित्तधारिणा ।

घर पा । दमन्निवहि=ज्या निगाओ व पय म । कीरणावरो=कीटा म नागर,
वनुर । मिण्ण=गैद म । पुछनाविरी=पू छ दिना व रो । वण्णचानिरा=
वान हिताओ दूई । घाडया म्वरी=गधा दोनी । कसरिकरी=जस की दासी ।

घुसिण्णिनरे	वाहुपनरे ।
छुहिवि पीलिओ	गयणि चालिओ ।
मो.हओ गलो	पत्तपच्छलो ।
रणि हओ हओ	णिगिओ गओ ।

घत्ता

ता जसोय भणिय ण्णुलिण्णइ पाणियहारिहिं ।
ण्णदणु कहिं नियइ जायउ तुम्हारिसणारिहिं ॥८॥

(६)

उत्पल से बाधा जाना—

दुयई

मरुहयमटिरुहेहिं पडिषण्णिउ गदह तुरय चूरिओ ।
अपरु उदुहलम्भि पइ उदउ जाणहु चालु मारिओ ॥

घाइय तामु जसोय विसकुल ।
करयनजुयलपिहियचलथणयल ।
घदउ उक्खल मेल्लिन घल्लिउ ।
महु जी.पिण्ण नियहिं सिसु बोल्लिउ ।
फण्णणरसुरह मि अइअइसइयउ
हरिमुहि खु मुनि कडियलिउ ।
कि सरेण किं तुरए दट्ठउ

छुहिवि=छुहर । पीनिओ=पीडित । मोहियो=मोड दिया । ण्णु-मुलिण्णइ=नगे के विनारे । पाणिय हारिहिं=पनहारिणों ने । तुम्हारिस णारिहिं=तुम्हारी जसी स्त्रियो से । जायउ=उत्पन्न हुआ ।

६ विसकुल=मस्तव्यस्त । घइमइमदपउ=प्रति प्रतिपादित=प्रत्यन्त बड़ चढ़ पर । परियट्ठउ=टटोच छुए । भरिठदउ=भरिष्ट देवता । विपवेसे=वृष के

मायइ सयलु अगु परिमटठउ ।
 अण्णहिं दिग्धि रञ्जहिं कीलतट्टु
 यालट्टु यालभील दरिमतट्टु ।
 दुग्ठ अरिट्ठदेउ धिमयेमें ।
 आइउ महुरायइ आणमें ।

वृषभ रूप में अरिष्ट देव का आगमन—

मिगजुयल्ल मचालिय गिरिमल्लु ।
 स्तरलुरग उम्भयधरणीयल्लु ।
 सरवरौस्तिनाल्लप्रिलियगल्लु
 कमणिवायनपावियनल्लथल्लु ।
 गठिनयवपूरियमुवण्णतरु ।
 हरयरयसहण्णिवह्वयभयनरु ।
 ससहरभिरण्णियरपडुरयदु ।
 गुहनेलामसिहरसोहाहरु ।
 निर मडु शिग्रिह दइ आणेप्पिणु
 सा कण्हे भयदहें लेप्पिणु ।
 मोढिउ कट्टु कडु त्ति विस्सुग्गु
 को पडिमल्लु तिनगि गोविदट्टु ।

धत्ता

ओहाभियधरल्लु हरि गोउलि धयनहिं गिज्जइ ।
 धवलण पि धरल्लु कुलधरल्लु केण ण शुण्णिज्जइ ॥६॥

रूप में । उक्कय=उगाढ लिया है । कमणिवाय धनु=परा की चोख स जल
 धन को कपा देने वाला । ओहाभियधरल्लु=वल का पराजित करने वाला ।
 धवमहि=धवल गोनों से । शुणिज्जइ=प्रभुत्व की जानी है ।

मा यशोदा की प्रतिक्रिया—

दुनई

ता कलयलु मुणति गोवालद पणयजलोदवाहिणी ।
सुयविलसिउ मुणति णिग्गय णियगेहहु एदगेहिणी ॥

भणइ जणणि एदुआलिहि धायउ
पुत्तु ए रक्खसु कुञ्चिहि जायउ ।
किइ वलद मोडिउ ओत्थरियउ
वइवसैं सिमु सह उअरियउ ।
हरिखरवसहिं सह सुउ जुअइ
जणु जोअइ महु हियउ डवअइ ।
वेत्तिउ मइ कुमार सताअहि
आउ जाहु घर मोल्लिउ भारहि ।
तेयउतु तुहु पुत्त णिरुत्तउ
रक्खहि अप्पाणउ करि वृत्तउ ।
परमहि भदओडिहि आरूढउ
पाहुअलेण वालु जणि रुढउ ।
महुआपुरि घरि भरि वाणअअइ
एदगेहिउ पत्थियहु कहिअअइ ।
तहुदेअमायरि उक्कठिय
पुत्तसिणेहें खणु णिणसठिय ।
गोमुहअउ सहउ वउत्थी

१० णिणुगेहहु=घरने घर से । दुआलिहि=दुआल म । कुञ्चिहि=बोले मे ।
वलद=वन । एदगेहिउ=नद की गोठ मे । देवइमायरि=मा दवकी ।

लोयदु मिसु मंदिनि वीसत्थी ।
 चलिय खदगोउलि सहु खाहें
 सहु रोहिणिसुण्ण चदाहें

घत्ता

मायइ महुमदणु बहुगोउहं मज्झि एरिक्खिउ ।
 ययपरिओदियउ कलहसु जेम ओलक्खिइ ॥१०॥

कृष्ण की गोपमडली रा देवरी और नलराम द्वारा रचागत—

(११)

दुगई

हरि भुयजुलललियणणउदलु खरचोव्यणिराइओ ।
 उग्गइपउरपुलय पढहन्धें वसुण्वेण ओइओ ॥
 भायक सिमुभीलारयरगिउ
 इलहरण दिट्ठिइ आरिगिउ ।
 भुयजुयलउ पसरतु णिरुद्धउ
 जायउ हरिसें अणु सिण्हिउ ।
 चित्तिन तेण कम्मपेसुण्णउ
 आलिगणु न्तेण थ न्णिणउ ।
 गाढसिणेहनसेण एउतइ

उक्क।ट्य=उत्कटा स भर गह । गोमदुवउर=गोमुख रूप नाम का व्रत ।
 वउत्थी=व्रतस्था ।

११ निमुकीलारयरगिउ=सिगु मीठा की धून से रगे हुए । सिण्हिउर=स्निग्ध ।
 वस पमुण्णउ=वस की दुष्टता । आणुविय=न आई । घल्लय=माछ धीजों

आणावि १ रसोइ गुणनावइ ।
 गधफूलदीउउ सजोइउ
 भोयणु मिट्ठउ मायइ ढोइउ ।
 अल्लयदलदहिंओल्लियकूरहिं
 मडयपरणेहिं धियपरहिं ।
 णाणाअमस्रपिसेसहिं जुत्तउ
 सरसु भाविभूणाहें मुत्तउ ।
 सिरि णिउद्धेल्लीदलमालह
 कषणादह दिण्ण गोमालह ।
 मुण्हइ मउदेवगइ धत्यइ
 भूसणाइ मणिनिरणपसत्यइ ।
 पुणु जणणिइ तिपयाहिण देतिइ
 तणयहु उप्परि खीरु सउत्तिइ ।

घत्ता

पोरिसरयणणिहिं गुणगणविभापियवासउ ।
 कूलहरलच्छियइ ण सइ अहिंसित्तउ केसउ ॥११॥

गोवर्धन उठाना—

दुषई

ता सूरगेयरहि दामोयद रामारत्तन धणो ।

गोवद्धगु भरोयि हस्कारिउ कयगोजूहयद्धणो ॥

यरहै बाहुदहगरियरिउउ

गिरि छत्तु य ञ्छाईयि घरियउ ।

जल परहतु जतु ग डियक्खउ

घारायरिसे गोन्नु रक्खिउ ।

परन्धयारि मचीरिउ नैतह

दीगुद्धरगु बिहूमगु मतह ।

पविमल छित्ति भमिय महिमदलि ।

हरिगुणकह दुई आईदलि ।

कालि गलतइ कतिइ अहियइ

कलिमलपरुपदनपधिरहियइ ।

महृगपुग्गरि अमरहि महियइ

अरहंतानउ रयगइ णिहियइ ।

तिष्णि ताउ तलोक्कपमिद्धउ

म्यदमारदेहमुहणिद्धउ ।

त रयणत्तउ रुहि मि णिरिक्खउ

पुन्निउ रुमे वरणे अक्खिउ ।

१२ वासा=वषा वा रात को रोहन बात । गोवद्धगु=गोवर्धन । दुई=दूई ।
 पक्खिउ=कर । वग्गु=वस के ज्योतिषी वे । घाकरइ=घातुरनि । दाव=

खायामिज्जइ विसहरसयणें
जो जलयरु आउरइ वयणे ।
जो सारगमोडि गुणुपावइ
सो तुज्जु वि जमपुरि पहुँचावइ ।

घत्ता

उगसेणसुयणु विहरधरासि तारिब्बउ ।
तेण एराहियइ जरसिंधु समरि मारिब्बउ ॥१२॥

(१३)

दुवई

भाणु सुभाणु खाम जिसकधर वरजरसिंध खदणा ।
सपत्ता तुर त जउणायडि थिय खचिय 'ससदणा ॥

मथुरा के लिए कूच—

अरिक्कदिदतमुसलहयकलुसिय
जइ वि सो नि अरविंदहिं वियसिय ।
धाली कतिइ जइ वि सुहावइ
सो वि तर जणघुसिणें भावइ ।
जइ नि तुरगहि चवलहि वरुचइ
तो नि तुरगइ साण पहुँचइ ।
जइ नि तीरि वेल्लीहर दावइ
तो वि ए दूसइ सपय पावइ ।
पनिउलु दिठुउ सिविर पमुक्कउ

देता है । सारंगमोडि=पनुप्पोडि । तारिब्बउ=तारिणा । मारिब्बउ=मारिणा ।

१३ सिविस=गिविर ।

गोत्रिन्दु माण्डु पदुक्कउ ।
 तण्णययलयरिन्दुसियविरक्क
 वण्णकियारि उमुमरयपिन्नम् ।
 समुमिरवेणुमहमोदियनणु
 काण्ण घरणिनाउ मडियतणु ।
 पूरण्णवण्णोदियनल्लु
 वंदलल्लपोमियमहिमील्लु ।

घत्ता

गु जाहलनडियन्डययिहत्तु सचन्तिउ ।
 महिचइतणुन्डेण आमण्णु पदुक्कउ मोल्लिउ ॥१३॥

(१४)

दुग्गई

मो आया रिमत्तु रि जोयइ दीमइ पर दुग्गया ।
 पमण्ड उण्णुत्तु रे तुम्हउ र्हिगत्तु ममुग्गया ॥

नन्द गोप का आम परिचय—

अम्हइ एदगोन कुडु तुत्तउ
 आया पुच्छट्टु भण्णु रिहत्तउ ।
 भण्ड सुभाणु जण्णु अम्हारउ
 अदमदीसरु रिम्मघारउ ।

समुमिर 'अणु' = सस्वर वणु क स्वर स माहित जन ।
 काण्ण तणु = वनभूमि की धातुओं स मन्त्रि शरीर ।
 गुवाहल विहत्तु = मू गों स जट हूए दहें प्रपन हाथ स निए टूए ।

१४ वुत्तउ = वहा । गुमाणु = बरास-घ का बैठा । हानिन् = प्रहार । यमुना क
 तट पर । वच्चइ = ब्रजति जाता है । वणु कणियार = वन कनर वृमुषों का
 रज है रजित शरीर ।

षट् ज्ञापसहु महुषट्ठणु
 सत्ताज्जरणु फण्हिलवट्ठणु ।
 तद्धि विरपवि सरासणचप्पणु
 फण्णारयणु लपसहु घण्णयणु ।
 पुलयसैणुमायरोमचुय
 त णिमुण्हिजि जोयते णियभुय ।
 हउ मि जामि गोहिदें भासिउ
 फरमि तिविहु ज पइ णिदेसिउ ।
 तरुणि ण लहमि लहमि विहि जाणइ
 हात्तिउ किं नपघीयउ माणइ ।
 त णिमुण्हिप्पिणु थालें थालउ
 जोयउ फसहु अयसु य कालउ ।

घत्ता

माहयपयजुयलु वदिट्ठु सुभाणु रत्तउ ।
 दिसकरिहु भयलु सिद्धेणु णावइ द्वित्तउ ॥१४॥

(१५)

दुयई

एदें एदण्हिज्जु णियणदणु ससण्णेदें णिहालिओ ।
 पाहुणयाइ जाहु सुयनघुहु इय वज्जरिजि चालिओ ।

अलौलिक सफलताए —

वावग्गइ पारद्धु णिहेलणु
 तद्धि मि परिट्ठिउ महिवइरक्खणु ।
 मिलिय जुगण अण्णेय महानल
 पायपहरक्कपात्रियमहियल ।

को नि ण सचानड जे थामे
 ते महमहणें जयमिरिकामें ।
 उच्चाटवि सुरदारिकरचडहिं
 पत्थरसभणिहिय नुगडहिं ।
 अरिवरणरणियरें परिगणित
 खण्णोड लहु जणणिद खीणिद ।
 आर जाहु दो पुत्त पट्टचड
 गोडल सुण्णड सुइरु ण मुच्चड ।
 एव मणेप्पिणु कण्डपचारें
 परिसुक्काइ ताइ भयमारें ।
 मलज्जिड महिदेसि समाणइ
 पुणरणि तंत्यु नि ठाणि चिराणइ ।
 आणिवि गोविंदु वि गोविंदु नि
 यियइ ताइ इइउ नि अहिराग्गिनि ।

धत्ता

सुपासिद्धड भरहि सो खण्णोड गुणरइहि ।
 पत्थरत समहिं राण्णज्जइ वरणरणइहि ॥१५॥

कृष्ण का प्रशस्ति—

कण्ठेण समणउ वो वि पुसु
 सनणउ जणणि विहवियसत्तु ।
 दुद्धरभररणधुरदिण्णम्बधु
 छदरिय जेण णियद्धत वंधु ।
 भल्लियि णियलइ गयधरगईइ
 सह माणिणीइ पोमागईइ ।
 अहिणदिय जिण्णरपायरेणु
 महुुरहि सणिहियउ उगसेणु ।
 पइयदियहहिंरइ कीलिरीहिं
 बोन्लायिउ पडु गोयालिणीहिं ।
 पंगुत्तउ पइ माइन सुहिल्लु
 कालिदितीरि मेरउ कडिल्लु ।
 ण्णहिं महुुरानामिणिहिं रत्तु
 महु उप्परि दीसहि अधिरचित्तु ।
 क वि भणइ दहिउ मथतियाइ
 तडु मइ धरियउ उम्भतियाइ ।
 लवणीयलित्तु करु तुज्जु लग्ग
 क वि भणइ पलोयइ मज्झु मग्गु ।

१६ कण्ठेण समणउ=कृष्ण के समान । विहवियसत्तु=जब को नष्ट करने वाले । दुद्धरभररण=बठोर भार वाले युद्ध की धुरी अपने कंधे पर उठाने वाले । महुुरहि=मधुरा म । पइयइ=जितन ही जिनो तब । रइयालिरीहिं=रत श्रीठा करने वाले । गोयालिणीहिं बोन्लायिउ पडु=गोबालिनो ने प्रभु कृष्ण से

तुह्म गिभि गारायण सुयहि ग्राहि
 आनिगित अरहि गोत्रियाहि ।
 सो सुयरहि किं गु पदण्णपडु
 मकेयपुडुगुददीणरिण्डु ।

कृष्ण के गौरीपुत्र जाने पर गोपियों की प्रतिक्रिया—

घत्ता

पा वि भण्ड एामनु उद्धरिणि स्वीरभिंणारउ ।
 रि गीमरियन् अज्जु न मड मित्तु भट्टारउ ॥१६॥

(१७)

इय गोत्रीयणययण्ड सुण्तु
 कीलइ परमेमद दरहमनु ।
 मभांमन् मेत्तिवि गन्धमा
 इहवम्मदु महु तुहु वाय वाउ ।
 परिपालित अणयण्णेण जाइ
 गीसरमि गु म्बणु मि जमोय माइ ।
 कडयन्त्रियन्ड तुहु जाहि ताम
 पडिक्खजुल्लम्भन् कम्मि जाम ।
 इय भण्णि वि तेण चित्तिउ त्तिण्णु
 वररमुद्धारड् पालिन्टु दिण्णु ।
 आन्तायिय भायिय गियमणेण
 गोपालय पूरिय रुचणेण ।

पद्विउ णदु महुसूयणेण
 ओदामियदेवयपूयणेण ।
 सह वसुएने सह हलद्वरेण
 सह परियणेण हरिसरिजणेण ।

धत्ता

सउरीणपरि पइदु अदिसुरणरेहि पोमाइउ ।
 भरहधरित्तिसिरीइ हरि पुण्णयतु अगलोइउ ॥१७॥



[३]

धनपाल

कुम्हारों के गङ्गापुर का नगर गठ धनवा । उसका पुत्र भविम अक्षरणी
परिवारा में बचपन से माप मापा के घर रहता है । मरणा होने पर वह भीतने
भाई वसुन्त के साथ हीनानगर में वाणिज्य के लिए जाता है भाई उस अवेला छान
कर मापियों के साथ बड़ सता है । कुमार भट्ट के निमन्त्रणा के पट्ट जाता है ।
जहाँ उस प्रभु सन्तति के साथ भविम्यानुष्ठा मिलती है । सौजन्य में उन्हें फिर
वसुन्त के वाणिज्य मिलता है । वह उसी मन्तर करना ॥ । वसुन्त फिर जाता
दरबार भविम्यानुष्ठा के अक्षर गङ्गापुर जाकर जग विवाद करना चाहता है ।
दुःख का मारा भविम भविमद्रयन की मन्त्रणा से गङ्गापुर पहुँचने में सफल हो
हो जाता है, वह दरबार में जाकर अपनी परिचय करना है । प्रभुन मणि में यही
वागुन है ।

दरबार में कुमार भविम का प्रतिवेदन

रायगणि गणि पथद्विदि दुष्टदो दुष्परिद ।
त निमुण्डु जेम भविमयत्ति जमु रित्परिद ।

भविम का रानमवन के लिए रुच—

दादय दधुनचु आयनिवि
माणरुमायसन्नु मणि मन्निवि ।
हरियत्तदो सकेउ समामिदि
कमनदलच्छि लच्छि मयामिदि ।
निययनएरिययण सपेमिदि
पुव्यागरसकेउ गवेमिदि ।
यहु नयन्ल पाहुड्ड ममारिदि

चदप्पहु निगम् जयच्चरिवि ।
 निगत्त वणिवरिन्दु हह्वारहो
 भद्वयद्वनिवह विसमसचारहो ।
 जहि गय गुनगुलति पिट्ट
 जगम हिलिहिलति तुक्कना तुलगन ।
 जहि मल्लियसक्कप्पामतहं
 निवहइ कणयन्दु पइसतह ।
 गलह माणु अहिमाणु न पुज्जइ
 नियसच्छदलील नउ लुज्जइ ।
 जहि अम्मोहजट्टनालघर
 मारुअटक्ककीरखम्मर ।
 मरुयेयगहु गौराहवि
 १ क्वरगोहलाहक्कनाहवि ।
 इयप्पमाइ अउअय धमु घर
 अयसरु पडिगालति महानर ।

धत्ता

सामतसण्हि जसेधम्मइ रत्तिणिगु ।
 व रायट्टुवाद पिक्खिनि कामु न खइमणु ॥१॥

पाहुइइ=प्रामादग्रहण । पट्टुवाहो=पना के द्वार से । पिट्ट=पुष्ट=विमान
 नियसच्छदलील=निब स्वच्छ कीला । अम्मोह-जट्ट-नालघर मारु
 टप्प आदि प्रदेशों के नाम ।

दरबार म उपहार दकर स्थान ग्रहण करना—

तु भदयदरमालु आसयिनि
 तन्निनि सीहवार गउ लधिनि ।
 दिट्ठु नरिदत्थाणु दुसचरु
 सायलेनरनिषह निरतरु ।
 नरचइ सज्यावसरपरिटिठउ
 दिट्ठु कणयसिहासणि सठिउ ।
 परिमिउ निजिठतिनिहपरिवारि
 जहि ओसासु नि नउ सिगारि ।
 त अत्थाणु अलीइइ लधिउ
 पुणु पट्टपायमूल आमभिउ ।
 करियि पणाउ पणयसिरुमलि
 पाट्टु पुरउ समप्पिउ अमलि ।
 क्रिउ सम्माणणाणु सभामणु
 सइ राइ दवाविउ आसणु ।
 चामरगाहिणीउ अयलोइउ
 पट्टपरिवारु सयलु आमोइउ ।

पत्ता

तो भणइ नरिदु करहि जयणु ससेयगउ ।
 सो आणमि इत्थु जेण समउ सयवु तउ ॥२॥

-
- २ वामु मणु न छुट्टइ=विचवा मन क्षुब्ध नहीं होता । नरिदत्थाणु=राजा का स्थान । पाट्टु=प्राशन=उपहार । अमनि=स्वच्छ । सइ=स्वयं । दवाविउ=दिनाया । आमोइउ=आमादित=प्रसन ।

घनपइ को बुलाए जाने की राजा से प्रार्थना और विवाह के कारण
घनपइ की आने की असमर्थता—

तो करकमलकयजलि हल्यै
पहु बिन्नजिउ बिणयसुक्यल्यै ।
पुर पउरालकारनियत्तै
घणवइ बुक्कनहो सिउ पुत्तै ।
त निसुणेगिणु वयणु कुमारहो
लहु आएसु दिन्नु पडिहारहो ।
पहुआएसि सोनि पधाइउ
घणपइ पुत्तसहिउ निम्माइउ ।
आउहु पउरु लणविणु मारउ
राउलि अत्थि तुम्ह हक्कारउ ।
घाइउ कोनि आउ सुनिउदउ
तहु तुम्हइ समारु सनघउ ।
पभणइ रायसिट्ठि अविसनउ
अम्हइ निरु गिगहु आसनउ ।
राउलि पउरवम्म सरेवउ
नित्तइ पाणिग्गाइणि करिव्वउ ।
तिं ययणिं विणियत्त अत्तेइउ
वयणु गणि नरपइहिं निरेइउ ।
सिट्ठि गियाहारभि समाउउ
न सरइ खणु नि सरवहो राउनु ।

३ निम्माइउ=नेहा । राउलि=राजकुल । हक्कारउ=बुलाया । वाइउ=वादी ।
सम्मायउ=सम्बन्धी । पउरवम्म=प्रवर वर्ग । समाउउ=समाकूल ।

तो ययगु कुरंतु भयिमयः विन्निवइ पट्ट ।
पइमाहो इयु तुममि रिवाहारंमु नट्ट ॥३॥

धनरा को दरवार में उपस्थित होने के बटोर आटेग

(४)

त निगुणेधि चमरित्त राणउ
पट्ट आणसु मरकमडमाणउ ।
पेमिउ कुरहु ममच्छरु दूयउ
सोधि ताद आमनीदूयउ
धणयउ सयसु वञ्जु आमिल्लहो ।
महु पउरि राउलि संखलहो ।
त निगुणेधि मिट्ठि आहत्तिउ
कम्मदयणयियप्पि सल्लिउ ।
सम्माणिमि दूयउ वइसारिउ
अणुणु बंधयसु ओमारिउ ।
दीसइ कारणु रिपि असारउ
अइअयमहु राउलि हस्यारउ ।
जइ परणसि रिपि निउ मुच्छिउ
तो कहि करहं वञ्जु को मुच्छिउ ।
पइमियि राउलि समउ महामहो
पट्ट परिओसहु लुगिधि पायहो ।

४ चमरित्त=चौक गया । कुरहु=बटोर । ममच्छरु=समक्षर । आमनी दूयउ=आमनी भूल । वइसारिउ=बैठाया । ओमारिउ=हवा दिया । मुच्छिउ=मुक्ति । कुहु=स्फुट ।

धत्ता

कुड कारण किंयि महु नियमयि ल्पन्नु भउ ।
ण्हइ दूएण नउ हक्कारिउ बहिमि हउ ॥४॥

(५)

घननइ की अपने पुत्र वधुदत्त से पूछताछ—

त निसुणिवि परिचितउ दाइउ
पचहं सयह मज्झि को चाइउ ।
जपइ मम्मन्नेय सहु राए
वरण गहणु महु तेण वराण ।
हुम्हमि तेण समउ ईक्कतरु -
इउ चितत दिन्नु पडिउत्तरु ।
अगउ वयणु तुम्ह परिपुण्ड्रिउ
मइ परएसि काइ किउ कुच्छिउ ।
धरि अप्पणइ ताम कलि विउन्नइ
पच्छइ पुणि राउलि पइसिउन्नइ ।
पचहिं सयहिं समउ जपतउ
तेण समाणु गणति त्रिदत्तउ ।
कोवि राउलि पइटठु पहु रनिवि
वज्जइ त सम्माणु त्रिहजिनि ।
जइ त वाह त्रिहजिनि दिव्वज्जइ
तो नि राउलि वि नाहि पइसिउन्नइ ।

कयणु गदणु मिर एहिं उरायहिं
 काउरिसहिं अदट्ठ पढिवायहिं ।
 भजिणि पचसयहिं जो पम्मुहु
 पढमिणि रागलि काह परम्मुहु ।
 धरिलि पच मि सय उदायहु
 जो जपइ तहो सिरु गदायहु ।

चत्ता

सो भणइ पुरमु उट्टइ ताम एउ करहु ।
 रायगणि गवि पिमुण्हो पिसणत्तणु हरहु ॥४॥

(६)

धनवद की पुत्र के माय रान दरवार म उपस्थिति—

सो नदणपचमोहियमइ
 मयलु पयइ मेलायइ धणयइ ।
 गउ राउनहो गरुयममोहिं
 अमुणिय कउनाउग्न निरोहिं ।
 सह पुत्ति पट्टपुरउ परिदिठउ ।
 माइंकारु तिसाइ अणिदिठउ ।
 विउ नरवट आयेसु धरणिणु
 भणिसयत्तु पच्छनु करणिणु ।
 यणियरु पणयमगगिरु जनइ
 आमयइ राउनइ समणउ ।

७ प्रावेसु=प्रावेण । प्रच्छन्नु करणिणु=पीछ करण छिपाकर । विणु=विघ्न ।
 पच्चवम्भु=प्रत्यय ।

जइ अपराहु तोवि नउ जुज्जइ
 जइ सुहि तो एइउ कि किज्जइ ।
 कन्नारभि मणोरहउतए
 मिज्जइ विग्घु पिसुणि एवहतए ।
 विहसिवि वधुयत्त पडियक्कइ

वधुदत्त की चुनौती—

अग्घ रिद्धि जो सहिवि न सकरइ ।
 सो पन्नवरक्खु पुरउ वइसारहि
 सुदिदवयणसरुद्धि पइसारहि ।
 किउ पेसुनु जेण भयभीसि
 अतए तुलमि अज्जु तहो सीसि ।

धत्ता

हु वार शुण्णि भविसु परिदिठउ तहो समुहु ।
 इहु सो पडियक्खु करहि वयणु जइअरियमुहु ॥६॥

(७)

कुमार भविस की प्रति चुनौती—

तो हु मारु करेवि सुनिम्भरु
 जोवइ समुहु जाम वट्टमच्छरु ।
 साम्म कुमारहो वयणु नियच्छिउ
 मत्ति विलीणु लहिमि नपुच्छिउ ।

लज्जद ममु ह्नु निण्णि न सक्किउ
 नियटुच्चरियइ माणकल्लिउ
 नउ पडियणु करइ नउ पणउइ
 मउलिययणकमलु धिउ धणउइ ।
 राए पच यि सय हक्कारिउ
 कोक्किउ नियडि पुरउ बडसारिय ।
 तेहिं यि भयिसयत्तु अयल्लोउयि
 लज्जद ममु ह्नु न सक्किउ जोइयि ।
 पच्चारिय सयलिय भूगालिं
 अटो यि तुहिं मिलिय कलिमालिं ।
 मुहि मरलइ अभतरि चोरइ
 दीसइ तुम्ह चारउ जं चोरइ ।
 पट्टययणि अणिभोयणित्तइ
 पासेइउ सराह धणित्तइ ।

घत्ता

हुइ छागामगि थोरपलनुभियमुदण ।
 पिययणु चवेयि म भीसियि घपरइमुदण ॥७॥

(६)

पाच सौ वप्रिय पुत्रों का नयान—

देव देव प्यइ अग्रिहाणइ
 न करिज्जउ अउराहु वरायइ ।

- ८ वाक्किव=बुलाव । कलिछील=कलिकास स । अणिययणु उत्तइ=अनियोग
 मे निपुत्त बुरे काम म पस हुए । पाउदउ=प्रस्वदित=पसीवा पसीना हो
 गया । छागामगि=छायानग=काति नग । हु हुइ=हो गयो । वृध्यद=
 उच्चते=बढ़ा जाना है । पुनहि=पुण्य से, भाग्य स । हुम=हुए ।

जामहिं पहु अरुहिण परिसम्कइ
 तामहिं भिन्चु घरेत्रि न सकवइ ।
 तो पुच्छिय पियरायण राण
 तेहिंमि कहिउ सयलु अणुराण ।
 पुरउ परिद्विउ बिनि मईतर
 तेहिं निवेइय वाय निरतर ।
 अहो रायाहिराय परमेसर
 सगइ कुलि जाणिअनइ उणिअर ।
 सुअउन सुणइ न दिट्ठउ देवसई
 किम एअइ वयणु तउ अम्सइ ।
 ज किय एण वम्मु अवियारिउ
 त जणवइ लज्जणउ निरारिउ ।
 पियरितुल्लु जो यघउ वुच्चइ ।
 सो किम्प वणि वचेणु मुच्चइ ।
 ताहिंमि एहु पुनहिं न समत्तउ
 हुउ सकलत्तु महासियधतउ ॥

घत्ता

अगइमि भनंत निद्वण निज्वसाय हुअ ।
 गय त जि पणसु दुम्मण दुम्मादण धुअ ॥८॥

(६)

पांच सौ वणिक् पुत्रों का बयान—

तं पियणयणु चउतहो आयहो
 खामउ एण बहुविणयसहायहो ।

शिष्यमञ्जुसमिद्धि दरिमाश्रित
 पचरि सय भोयगु भु जाश्रित ।
 सम्माश्रिति परिहाश्रित यत्थइ
 नियययगुहो भरियइ वोहित्यइ ।
 पुणरथि सअगु तद्धि नि घल्नेरिगु
 आयउ अनुलु महापगु लेरिगु ।
 अइ पट्ट परउ णउ किम्य भीमइ
 छेयतरि पेमुन्नउ दोमइ ।
 यिननि तुह मणनयणाणदण
 कमलाएरिसम्भइ नयण ।
 होमइ त जित्तम घरि तुम्हइ
 यग्नइ निरडेमइ अम्हइ ।
 त निमुण्णिनि रिहमिउ नरनारि
 पियमुत्तरि धरिलयहि अयलोइउ
 सन्ने पट्टपरिणारि वोडउ ।

धत्ता

आनिगिउ लेरि राए नेह्निरवरिण ।
 अदामगु दिन्नु पुत्तसण्हेह गुणवरिण ॥६॥

(१०)

राना की भविष्य से बचपन की पहचान—

पुण पुण पट्ट दरिसइ नियलोयहो
 अहो नयन्नु पट्टिवाटउ जोअहु ।

॥ वोहित्यइ = जहाज । सअगु = स्वजन । पेमुन्नउ = विपुलता, दृष्टता ।
 निरडेसइ = मटेगा ।

एहु सु घणउइ पुत्तु महउ
 कमलहितणउ सुद्ध गुणउतउ ।
 मइ कालतरेण नउ नायउ
 अहो लोयणहो दिन्नु अणुरायउ ।
 बालउ इत्थु एहु कीलउतउ
 चरियइ सुद्ध सुदारउ होतउ ।
 पोदविलासिणीइ रुम्मतउ ।
 एक्किक्कइ समाणु जुम्मतउ
 बहुसिहारतार तोडतउ
 सुनियत्थइ वत्थइ मोडतउ ।
 सिंहासणसिहरोरि थतउ
 चुम्भिजतु करोलइ गतउ ।
 घडिढउ मामइ सालि असगमु
 बहुकालहो सजाउ समागमु ।
 एम्बहिं करमि तेम सविसेसणु
 जेम क्यामि न होइ थन्सणु ।
 वो पियमु दरीहिं अल्लोइमि
 धियनियदुहियहिं वयणु पलोइमि ।

धत्ता

तहिं काले सुमित्त राए तामु परिटठविय ।
 सम्माणिमि लोय नियनियनिलयइ रटठविय ॥१०॥

धणनइ वंधुअत्त रक्खाधिय
 जणि गरुयाराह जक्खाधिय ।
 मंदिरि कट्ठयमुद्ध सचारिय
 विहट्ठपफट्ट सत्थर ओसारिय ।
 भरिसहो मयणमिदि दिदि दरिमिदि
 परमुद्धनि घणु हियइ पररिसिनि ।
 राए पउरूप मुहु षोक्खलाविउ
 तुम्हई णउ कम्भु संमारिउ ।
 एहु सिट्ठि ठ पुरपउरि महतरि
 आयउ चोरु छुद्धिनि कम्पतरि ।
 दिट्ठु तुम्हि पिट्ठ ठत्तणु आयहो
 तपि करेनि चड्डिउ परिछेयहो ।
 मडिधि अणु अनुत्तु भयभीमहो
 दरिसिय मिद्धिमि मंधि नियसीसहो ।
 एवहिं धिय अयहेरि करेनिणु
 जं सिञ्जइ त भणइ मिन्नेयिणु ।

घत्ता

तो भाणउ ममूहु मिरु विहुणइ धुम्मइ चरइ ।
 अहो देसहो तुम्हि कम्महतणिय विधित्तगइ ॥११॥

भविष्य का सम्मान—

तो कारण परिचितिनि भारिउ
 मइरतेहि समुहु ओसारिउ ।
 करइ धयणु समवायसमुच्चइ
 एइइ फालि काइ पहु बुच्चइ ।
 जपइ कोवि पुराइयक्रमहु
 अइयारि पहु जाउ परम्मुहु ।
 भविष्यत्तु अहिण सभणिउ
 सट्टिनि छायाभगहो आणिउ ।
 कोनि भणइ अवियाणियल्लत्तें
 अहु अजुत्त कीयउ धणुयत्तें ।
 परिण विदत्त हरेवि असारउ
 किम बुच्चइ धणु एहु महारउ ।
 अन्नं वृत्त पउर माहण्यें
 अइकम्महो किर काइ वियण्यें ।
 एगहिं धयणु किंपि तं बुच्चइ
 जेण सिद्धि सहु पुत्ति मुच्चइ ।

घत्ता

परिचितिनि कज्जु एकवायारु करेवि लहु ।
 पडिगाहिवि सिद्धि पुणु पउरि यिनत्तु पहु ॥१२॥

१२. ओसारिउ=हृगया। अइयारि=अतिचार, अतिवादी, आवरण । परिण
 विदत्तु==दूसरे का वमाया ।

धणउद धंघुअत्त रस्मायिय
 जणि गरुयाउराह लक्ख्वायिय ।
 मंदिरि कट्ठयमुद्ध सचारिय
 विहरफकट मन्थ ओसारिय ।
 भविमहो मयणुविदि दिदि दरिसिनि
 परमुद्धनि धणु हियइ पररिसिनि ।
 राए पउरूप मुहु पोत्तायिउ
 तुम्हं णउ कउनु संमारिउ ।
 पट्ट सिट्ठि ठ पुरपउरि महतरि
 आयउ थोरु छुह्नि कएत्तरि ।
 दिट्ठ तुम्हि धिट्ठत्तणु आयहो
 तपि करेनि चट्ठि परिट्ठेयहो ।
 मणियि अणु अतुत्त भयभीमहो
 दरिसिय विहिमि मंधि नियसीसहो ।
 पणहिं धिय अयहेरि भरेणु
 जं रिउउइ त भणह मिज्जेविणु ।

घत्ता

तो मणुउ समुद्ध मिर विहुणइ घुम्माउ चयइ ।
 अहो देवहो तुम्हि कम्महतणिय विधित्तगइ ॥११॥

भविष्य का सम्मान—

तो कारण परिचितिवि भारिउ
 मद्रवतेहि समुहु ओसारिउ ।
 करइ वयणु समवायसमुच्चइ
 एहइ कालि काइ पहु वुच्चइ ।
 जपइ कोवि पुराइयम्भहु
 अइयारि पहु जाउ परम्भहु ।
 भविसयत्तु अहिण सग्मणिउ
 सट्ठिवि छायाभगहो आणिउ ।
 कोवि भणइ अवियाणियलत्ते
 अहु अजुत्त कीयउ वधुयत्ते ।
 परिण विदत्त हरेनि असारउ
 निम वुच्चइ धणु पहु महारउ ।
 अन्ने वुत्त पउर माहप्पे
 अइम्भहो किर काइ वियप्पे ।
 एअहि वयणु किंपि त वुच्चइ
 जेण सिट्ठि सहु पुत्ति मुच्चइ ।

घन्ता

परिचितिवि कज्जु एक्कायारु करेवि लहु ।
 पडिगाहिवि सिट्ठि पुणु पउरि निनत्तु पहु ॥१२॥

याद्वि पउरपमु हु पडिजपद
 देय देय पउरिं विन्नपद ।
 धणउइ कुरुनगलि पिपदाणउ
 तउ धरि सुद्धु ममुन्नयमाणउ ।
 सो अन्नायनारि जं वुच्चइ
 त पउरहो न भणउ विरुच्चइ ।
 जइ अनाउ तामु मणि भाउइ
 ता कि पुर पउरहो वि पहायइ ।
 एउउ सरीरु विभायहि दुत्तउ
 तिहिमि ताहं सामनु पिदत्तउ ।
 पधुयत्तु चोरत्तणु पाउइ
 जइ अनहो धणु लेविणु आयइ ।
 भाइहु पुणु अनिइत्यु हरतइ
 दाइयमन्दरु हियइ धरतइ ।
 निग्गहु तुम्हि ताह न परिव्वउ
 परनीयावहारि जीवेउउ ।

पत्ता

परियाणिवि लेउ भविमयत्त अप्पणउ धणु ।
 आमिलहि सिट्ठि उरउ पुत्त पाणिग्गहु ॥१३॥

पौर प्ररों का निर्णय—

ज जि नत्तु पउरसघाए
 त जि तेम पडियजिउ राए ।
 घइसहु भविसयत्त वोल्लायहु
 अजरुप्परु संतोसु करावहु ।
 तो सगिलिउ पउरु अप्पाहिवि
 धणवइ पुत्तसहिउ पडिगाहिवि ।
 अहो अहो भविसयत्त बहुमाणउ
 तुइ अम्हइ भवालसमाणउ ।
 घघुयत्त ज लेगिअ आयउ
 त धणु धरि सररिअ विहायउ ।
 ज यणगहणि खित्तु अणिओयहो
 त अजराहु खमहिं पुरलोयहो ।
 भणइ कुमारु कयजलि हप्पउ
 नहु नियजम्मु अज्जु सकयत्थउ ।
 ज पुरलोए वयणु कराविउ
 करहु किंपि ज मयरहो भाविउ ।
 जे गय तहु सहाय ते पुच्छिवि
 पाणिग्गहणु करहु पडियच्छिवि ।

धत्ता

पुरु पुच्छइ तेवि करहु कज्जु ज जेम थिउ ।
 तो तेहिं मिलेनि तज्जिवि दिहु सकेउ किउ ॥१४॥

(१५७)

गुग्माचरण सीलमुनिउत्तिहि
 दिहु समनाउ भरिनि वणिउत्तिहि ।
 सुअणत्तण गुणेण जं रन्निउ
 तपि अमउ मग्गेणि अक्खिउ ।
 अहो परपउरि केम साहारिउ
 अउनि एहु रज्जु निरु भारिउ ।
 कहि निगाहु कहि सुहु उघुत्तहो ।
 कहि निउउइ समनाए गोत्तहो
 एह पर जुनइ बाइ जा सारी
 सा गेहिणि भयिसयत्तहो केरी ।
 अहो परमेसरि माय महासइ
 नामगाइणि ताहि दुहु नासइ ।
 काइ न वृत्त ण्ण दुयियण्णे
 तोनि न चलिय सीलमाइण्णे ।
 बुच्चइ तेही तारि पइअय
 हुअ पच्चग्ग महा नयदेय ।
 वयउहु भग्गु भरिनि दुव्वायहो
 हरलोइमिउ चित्त सघायहो ।
 मन्लोअम्लिउ सलितु रयणायरि
 सयनु वि जणु बुद्धवउ सायरि ।
 ताहि मनासि ण्ण साहारिउ
 जामहि वधुयत्त ओसारिउ ।

धत्ता

पणउतइ लोइ जइ उअसमु न करविसइ ।
 तो बुद्धइ आसि हुअ सअइ स्वयंलमइ ॥१५॥

पाच सौ वणिक पुत्रों द्वारा-शोला अपहरण का गम्भीर आरोप—
बाप घेरे को हथकड़िया जेल—

एहाउत्थनाय जणविदहो
वेलावलि उत्तरिवि समुदहो ।
आए अम्हि धरिनि निरुतजिय
थिय कुलकित्ति कलंकहो लग्नम
कहिमि को वि काइ मि न पयासइ ।
थिय भोयणु परिहरिनि महासइ
अम्हइ दुक्ख दुक्ख त'हायिय ।
ओसइमित्तु गामु गि'हायिय
आणेरिणु सुहिसदयणहिं दक्खिय
प'लुक्कुमारि भणिवि जणि अक्खिय ।
पइसारिय धरि गरुय पिहोए
थिय समट्ट करिवि पइसोए ।
गंभीरत्तणेण नउ अम्हइ
अइहरि कुलहो कलकउ रक्खइ ।
पनइउतरेण ता अच्छइ
सा जि एहु परिण'बइ यद्धइ ।
सयणिहिं वह विवाहु पारंभिन
एत्यंतरि एरिसउ नियमित ।
तिलमित्तुनि जइ अलियउआयहो
तो अम्हइ मिच्छित्त परायहो ।
निमुणेविणु वणिकउत्तहो वयणइ
थियइ वन्न मंपिनि सुहिसयणइ ।

(१५)

गुग्मचरण सीलमुनिउत्तिहि
 णिहु समराउ ररिणि वणिउत्तिहि ।
 सुअणत्तण गुणेण ज गम्भित्त
 तपि अमउ मग्गेणिण अक्खित्त ।
 अहो परपउरि केम साहारिउ
 अउरि एहु कउजु निरु भारित्त ।
 कहि निराहु कहि सुहु उधुत्तहो ।
 कहि निउउउ समराए गोत्तहो
 एह वर जुनउ याउ जा मारी
 सा गेहिणि भणिसयत्तहो केरी ।
 अहो परमेसरि माय महासइ
 नामग्गहणि ताहि दुहु नामउ ।
 काइ न वुत्त णण दुग्गियण्णे
 तोनि न चलिय मीलमाहण्णे ।
 वुच्चउ तेही तारि पइज्यय
 हुअ पच्चम्भ मदा नयदेउय ।
 धयउहु मग्गु भरिणि दुव्यायहो
 हल्लोहमिउ चित्त सपायहो ।
 मल्लोहमल्लित्त सलिलु रयणावरि
 सयनु नि नणु बुद्धउत्त सायरि ।
 ताहि मनासि एण माहारित्त
 जामहि वधुयत्त ओसारित्त ।

घत्ता

पणवतइ लोइ जइ उवममु न करविसइ ।
 तो बुद्धइ आसि हुअ सत्त्वइ मयमल्लगइ ॥१५॥

पाच सौ वणिक पुगों द्वारा—शोला अपहरण का गंभीर आरोप—
बाप बेटे को हथकड़िया जेल—

एहाउत्थजाय जणविंदहो
बेलाउलि उत्तरिवि समुदहो ।
आए अम्हि घरिवि निरुताज्जय
थिय बुलाकित्ति कलकहो लज्जिम
कहिमि को वि काइ मि न पयासइ ।
थिय भोगणु परिहरिनि महासइ
अम्हइ दुक्ख दुक्ख त'हायि ।
ओसहमित्तु गामु गिन्हाविय
आणेविणु सुहिंसहयणहिं दक्खिय
प'नुकुमारि भणिवि जणि अक्खिय ।
पइसारिय परि गरुय विहोए
थिय सघट्ट करिनि पइसोए ।
गंभीरत्तणेण नउ अम्हइ
अइहरि कुलहो कलकउ रक्खइ ।
एवद्धतरेण जे अचछइ
सा जि एहु परिणयेइ पथइ ।
सयणिहिं तह निआहु पारंभिउ
एत्थंतरि परिसउ नियमिउ ।
तिलमित्तुयि जइ अलिउउआयहो
तो अम्हइ मिच्छित्त परायहो ।
निमुण्णेविणु वणिउत्तहो पथणइ
थियइ वन्न भंषिवि सुहिमपणइ ।

यद्धिउ गवआवेसु नरिदहो -
 जोइउ समुह्नु कुरुभदग्निहो ।
 ओसारवि वेवि निह्नु यंवहो
 अणुह्नुतु पत्तु दुन्नयरधहो ।

घत्ता

गयउरु सविलम्बु अंमुजलोत्तियलोयणइ ।
 सुहिसयणमपहि घरि घरि कियइ अमोयणइ ॥१६॥

(१७)

प्रजा में प्रतिक्रिया—

घरि घरि दट्टि दट्टि जणु जूरिउ
 भग्न मढपकरु हियइ गिस्तरिउ ।
 हा विहि जाउ सुद्धु रिच्छायउ
 ज जम्महोवि न केणरि नायउ ।
 हो राउलि पुरपउर महायउ
 तासु मलित्तु वेम घरि आयउ ।
 जपइ कोवि न पयहों अगें
 पउ स-बु दुणुत्तहो सगें ।
 कोवि वयइ परिघाद्वय खेरउ
 पउ पनचु सरूपहि केरउ ।
 भविसयत्तु घुल्लाविउराए
 सह माणि घट्टिदय अणुराए ।
 घरहि क्रिपि ज जुज्जइ आयइ
 दु-नयदोस विडवियमायइ ।
 तं निमुणैविणु घत्तु कुमारि

इउ लज्जागणिवज्जु अइयारि ।

अह अम्हमि एउ किं जुज्जइ -

ज इउ एउडडतरु किज्जइ ।

घत्ता ।

असमजसु कज्जु 'एहउ' किंवि समाजइ ।

ज थोइलयपि दुत्तरि दुप्पवसिपड्ड ॥१७॥

(१८)

निर्णय मे परिर्तन—

मणमलित्तु किं कासुवि भावइ

अह पुत्रकिउ कम्मु कराजइ ।

जामहिं कज्जु दुसरुडि आयइ

तामहिं सुअणत्ताणु न पहाजइ ।

दुक्करु कज्जाकज्जु गियारह

राउलि दप्पमाडु दुव्वारह ।

जं पटुपुरउ गियारि न भजइ

ठ इहरत्ति परत्तिमि छिज्जइ ।

एयहिं महु सम्माणि जुज्जइ

निक्करुउ पुरपरिवाडिए किज्जइ ।

जइवि तुम्ह पटुसत्तिप छज्जइ

तोवि सु दुरु जं पुरु पदिवज्जइ ।

तउ सम्माणु जइवि मइ पाउउ

पुरुअयराहि जइवि संभावित ।

तोवि मज्झु मणु एउ न भाणइ

नउ सोहइ गिणु पउरपो आणइ ।

न लहमि सुद्धि देहजणिगारिय

त्रिमुहि पउरि जणणि धवारिय ।
 हसइ नरिहु पलधियसाडहं
 सुहियउ होइ पनाचु किराहई
 न चवहि किंपि अणज्जु अचित्ताई
 न चलहि एतवि इक्कु विणु निचित्तिहं ।

धत्ता

सुणिवदनिओइ इहपरलोय विमुदमइ ।
 धणपालवि होवि न करहि स्रणुविपमायमइ ॥१८॥



मुनि कनकामर

,करवड करिव' का नामक करवड, ध्यानरेत धाहीवाहन और पद्मावती रानी का पुत्र है। पत्नी का दोहद पूरा करने के लिए राजा रानी को वर्षा में हाथी पर घूमता है। हाथी रानी को ले उठता है और एक साप्ताह में छोड़ता है वही, मरघट में कुमार का जन्म। बदाल रूप में अभिषेक एक बनवास, उसे पामता है। बाद में करवड नाटकीय ढंग से दतीपुर का राजा घोषित होता है। वह घनेक अमभाष्य और साहसी घटनाओं का नायक बनता है। प्रस्तुत सचि-करवड के दतीपुर में प्रवेश से शुरू होती है, जिसमें राज्याभिषेक स्वागत, मदनावली का चित्र दर्शन, प्रेम विवाह, पिता से युद्ध और मिलन आदि घटनाओं का वर्णन है।

रोमांस युद्ध और शांति

(१)

प्र. व. क.

पुनः मतिर्हि भणियउ एवइ एउ तुहु गयनरखधि समारुइहि ।

चलु चलु सु दर नहु चलहि दतीपुरि रवजहो भरु धर्हिहि ॥

भावी राजा के रूप में दतीपुर में करवड का प्रवेश—

एिज्जरकरतमय गिल्लगडे

करवडु चरिउ ता करिपयहे ।

क बि लीला मणहर अइवहेइ

ए सुखइ अवराइ सहेइ ।

संचल्लिउ सो सहु खरवरेहि

विजिज्जमाणु चलचामरेहि ।
 लीलापिलाम सुहमा मिणाहिं
 गाइज्जमाणु धरमामिणीहिं ।
 फनयठिरानस्यहीलणेहिं
 सधुयमाणु वंदीनणेहिं ।
 गुणपउररायतगगमणेहिं
 सेज्जमाणु छायरज्जणेहिं ।
 परलोयग्जे उज्जुगईहिं
 सत्ताइज्जमाणु मज्जणमईहिं
 अनरेहिं नि लोयहिं कलियमाणु
 गउ सु वरु पुरनरे जणममाणु ।

धत्ता

सो पुरनरणारिहिं गुणणिनउ पइमनउ दिट्ठउ छयरफइ ।
 ए दसरहणणु तेयणिहिं उम्महिं सुरणारीहिं नइ ॥

(२)

पुर पतिताओं की प्रतिक्रिया—

तहिं पुरनरि खुदियउ रमणियाउ
 भाणद्वियमुखिमणमणियाउ ।
 क नि रहमउ तरलिय चलिय धलिय णारि
 पिहवफफउ मठिय का विचारि ।

किया जाता हुआ चचम चामरों से जिस पर हवा की जा रही है ।
 सधुयमाणु=मत्स्यन चारणु, जिसकी स्तुति कर रहे हैं । उज्जुगईहिं=मीथी
 गति वाल ।

अइमणहरु ए हिमवतसिंगु ।
 मुत्ताइलमालातोरणेहि
 ए विहसइ सियन्तहि घणेहि ।
 त्रिकिणिरणु धयवट्टमालु
 ए एच्चइ पणयिणि विट्ठियतालु ।
 चामीयरमणिरयणेहि घट्टिउ
 ए मग्गहो अमर त्रिमाणु पट्टिउ ।
 तहि पइमइ एण्णिउ विमलतुद्धि ।
 पारभिय गुरुयण नण्णिमुद्धि ।
 वरहेमवु भु मगलु वरति
 क वि माणिणि णिग्गय ता तुरंति ।
 परिमगलु त्रिउ वरदीयपहि
 जय वारिउ पणु णारीसएहि ।
 सोयण्णफलमन्य उच्छवम्मि
 पइसाहिउ सो णियमंदिरम्मि ।

घत्ता

सो सयलगुणायरु सीलणिहि शिण्यभारसंजुत्तउ ।
 सामतमतिनणपरियरिउ पुरिअच्छइरज्जु वरंतउ ॥

(११)

ताह तेण त्रि रज्जु करतएण
 आणायिय वम तुरतएण ।

अद्मणहरु ए हिमवतमिगु ।
 मुत्ताहलमालातीरणेहि
 ॥ विहसद् सियन्तहि घणेहि ।
 किंनिणिरणतु धयवड्यमालु
 ॥ खच्चइ पणयिणि त्रिद्विनासु ।
 चामीयरमणिरयणेहिं पड्डिउ
 ए मग्गहो अमर धिमाणु पड्डिउ ।
 तहिं पद्मइ खण्णिउ विमलजुद्धि ।
 पारमिय गुरुयण नणनिंसुद्धि ।
 करहेमपु भु मगलु करवि
 क धि माणिणि णिग्गय ता तुरंवि ।
 परिमगलु किउ परदीरएहिं
 जय पारिउ पूणु खारीसएहिं ।
 सोयण्णलसन्नय उच्छवम्मि
 पद्ममाहिउ सो णियमदिरम्मि ।

घत्ता

सो सयलगुणायरु सीलणिहि विणयभारसंजुत्तउ ।
 सामतमतिनणरियरिउ परिअच्छद्दइरज्जु करत्तउ ॥

(११)

ताहि तेण त्रि रज्जु करतएण
 आणायिय वम तुरतएण ।

मदनावली से विवाह का प्रस्ताव—

शिखर हियउ मुखिउ पदघरणरेण
 करु होहइ कण्णहे पदु भरेण ।
 इय मुखिवि तो नि पडिलनिउ भाय
 पदु अप्पहि अम्हइ जाहु राय ।
 एउ छंदइ सो पद उल्लसतु
 पुणु भणइ खरेसरुणीससतु ।
 महो सहयर अम्ह पयत्तएण
 पदु लेनि भमहि कण्णेण वेण ।
 आयएणनि तें वयणालुमारु
 तहो रायहो कहियउ पडिनियारु ।
 एत्थत्थि देव मोरटटु देसु
 सुरलोउ निडनिउ ज असेसु ।
 तहि एयर अत्थि गिरिणयरु णामु
 सुरसेयरणरणयणाहिरामु ।
 तहि राउ अत्थि अरिमिरवयतु ।
 अनम्मु एउ अनियगिऊतु ।

धत्ता

तहे रूपरदी कलसरिय जा एयणपियारी एयरह ।
 मयणालि णामइ तेयणिहि मा हई धीय मणोहरह ॥

५ पडिलविउ=प्रतिपत्ति=प्रत्युत्तर निया । आयणवि=आवण्य मुनार ।
 पयत्तएण=प्रयत्न ॥ । पडिवियारु=प्रति विचार । मोरटटु=सीराट्ट दग ।
 रूप करदी=रूप की धान ।

नो गीयउ गायउ खेयरहि मउ सूयउ करकइहो तणउ ।
तो तेण नियभिउ महो हियउ पुणु चउदिमु लायउ रणरणउ ॥

(७)

विवाह की स्वीकृति—

मइ तुज्म सहिण पायडिय त्रित्ति
नइ सस्वहि ता महो करि परित्ति ।
विरहगिनालपञ्चलियमाण
महो खासहि जाय ए सहिण पाण ।
ता दुक्खु यहतिए एरवरासु
सग्गेरें अक्खिय यत्त तासु ।
करकइगेयआयएणएण
मथणात्रलि पीडिय कामएण ।
आयएणेवि बालहे तणिय यत्त
राणए लहायिय हरियएत्त ।
जयमूमण कुलगयणम्मि चद
पडु अभिउ राए महो एरिद ।
अग्गिदूमहमोडणमडसहाउ
इउ तुज्म एयरे पडु लेनि आउ ।
पडु पेम्मिवि गच्छइ मोहु नो वि
वरु होइ एरेसर ताहे सो वि ।

हवा न घातन्त वन वा तरह । विनयन=विह्वलना । गूबर=युतगुना ।

मइ एहउ पिसुण्डिउ तुज्ज गिव एउ इत्तिउ तम्हामहो सरउ ।
सा कमलदलच्छी ससिवयण तउ करयलु करपल्लवे धरउ ॥

(८)

विवाह—

तहो सुण्णिउ ययणु पडधरणरासु
पदिउणिणउ राण सयलु तासु ।
ते सरिसा कुलणहससहरेण
सपेसिय णियणर णिवररेण ।
दिवहम्मि पसणणए कयसहाय
मयणाउलि लेणिणु ते वि आय ।
किय हट्टसोइ धरि तोरणाइ
सपद्धइ तहो करकण्णाइ ।
णाणाविइ पउजइ वाइयाइ
गीयाइ रसालइ गाइयाइ ।
भाउड्डइ णच्चइ णच्चियाउ
गयतुरयइ थट्टइ सचियाइ ।
उग्घाडिउ मुइवहु मिहि जणाइ
ए मोहपडलु तग्गयमणाई ।
घयजलिअजलण आमरिउ सत्त
देवाणिय भट्टहि पदिणि मत ।
करु बालहे अण्णिउ णउररेण

सपेसिय=भेजा । हट्टसोह=हट्टगोभा । वाइयाइ=वाद्य । भावड्डइ=भावाध ।
थट्टइ=समूह । उग्घाडिउ=उघाड दिया । घय जलिय सत्त=घो से जलती घाय की

किय सवहणाड दाहियररण ।
 मउ तारामेलउ गिनिडु तम
 जम्मे वि ण विहइ णेहु जेम ।
 पहिलारउ मिलियउमणु-पमथु
 कित लोयचारु जणुररणथु ।
 सुनिमुदण्णिहिं रनियमणह
 मामतहि स्थित गिराहु ताह ।

पत्ता

एरणहो हुय गिराहु तहि सुर गेयर देक्खविउ नसिय ।
 एण्यमोवहो उरि विरत्तमणु वहोनणिय रिद्धिमणिअहिलसिय ॥

(६)

माघी रूप य मा का आगमन और आजीर्ण—

तहि अरमरि पोमारउ वि माय
 गियणदणु दक्खहु तुरिय आय ।
 सा न्दिठी करउं गिणेण
 पुणु पणमिथ भारे मणुणेण ।
 गियपुत्तगिराहें हरिसियाण
 आमीम पण्णिणीनुरित ताण ।
 विरु जीराह उदण पुहदणाह
 कान्ति मुरमरि जाय वाह ।
 उदसारिय विणए सा एणेवि
 दिणु अणु महत्त ण्हउ भणेवि ।

गान भावरें (केर) । त्वाविय-गिरावर । अणित्त=अपित्त करने ।
 सवहणाह=गयें ।

सम्भाणिय उयण्हिं कोमलेहिं
 परिहाणिय उत्थहिं उज्जलेहिं ।
 आसीस देवि मा गय तुरति
 करकडक्किं ए विष्फुरति ।
 ता एत्तहिं जणमणजणियराउ
 करकड पुरउ पडिहारु आउ ।

घत्ता

करकमल णियेसिणि सिरकमले पडिहारु पयपइ पुट्टसरु ।
 चापाहिबरायहो दूढ णिय सो अण्णइ सिहवारम्मिरु ॥

(१०)

चपा नरेश के दूत का सन्देश—

त सुणिणि वयणु करकडण्ण
 पडिहारु पउत्तउ तुरियण्ण ।
 लइ जाहि तुरिउ सो सुइहु जेतु
 चापाहिबदूउ आणि एत्थु ।
 त रायहो वयणु सुणेधि तेण
 लहु आणित सो पडिहारण्ण ।
 सो देक्खिनि दूवउ राणण्ण
 समाणित दाणइ आसणेण ।
 ससिद्धी मेइणि संयल जामु
 भणु कुसलु दूव चापाहिजामु ।

■ तुरिय पीछ । वय=घाई । परिहाविव=पहनाए ।

१०- सिहवारम्म=सिंह द्वार पर । अणवरउ=अनवरत । विहियसेव=विहित

दूयेण भणिन् नहो कुम्भु राय
 पइ जेहा अन्निहि जसु सहाय ।
 अणउरउ गुरिदिहि त्रिहियसेय
 सो सुमरइ तुम्हइ वेउदेव ।
 जइ पलइ ए भिष्णुउ मीयलत्तु
 तइ पापणरिन्हो तुहु थिरुत्तु ।

घत्ता

लइ पालहि थिय करकइ तुहु चपादिनरायहो केर धर ।
 होएयिगु णक्कइ वे रि जण अणुहु जहु तुम्हइ भोय धर ॥

(११)

रुक्मिणी का प्रत्युत्तर—

त्रिगु केरइ लमइ खादि भित्त
 णइ मेडणि नुचहु हप्पमेत्त ।
 ए त्रि पालहि जइ पुगु मेय वासु
 वो ठाउ करहि अइ रहि मिणामु ।
 त सुणित्रि ययगु अरकइण्ण
 ते हियए कोहु धरवण्ण ।
 आयउणयण भानयने गीय
 ए चन्निायर सगिग ठीय ।
 जानाहि दूउ तउ सामि जेत्यु
 तउ स्वणु त्रि एक्कु मा वसहि एण्णु ।

सव । मीयलत्तु = जीतनता । कर = धाना ।

वें कहि चापाहिवासु
 हउ आयउ तुरियउ तुज्जु पासु ।
 जइ सगरि अति भवानलेउ
 सगासु मज्झु ता तुरिउ देउ ।
 इउ सुणिवि वयणु गउ दूउ तेत्थु
 सिरिधाडीगाहणु यसइ जेत्यु ।

घत्ता

तें कहियउ दतीपुरिणिबइ सो वइ देव ण वि णउइ ।
 सगामरगि तुम्हेहिं सहु अइज्जुम्हइ धीरउ इउ सनइ ॥

(१२)

चपा नरेश की तैयारी और ऊरकडु का कूच—

त सुणिवि वयणु चापाहिराउ
 सण्णज्मइ ता निर वद्धराउ ।
 तावेत्ताहिं दतीपुरिणिबेण
 कपाविय मेइणि मदरेण ।
 णिण्णांसय अरियणजीनएण
 उड्ढाविय दहदिसि रय रणेण ।
 णहु लायउ खलियउ रनि रणेण
 लहु दिण्णु पयाणउ कुद्धएण ।
 गगापएसु सपत्तएण
 गगाणइ दिट्ठी जतएण ।

१२ सण्णज्मइ=सनद होता है । वद्धराउ=वद्धराग । उड्ढाविय=उड़ाया ।
 खलियउ=खलित हो गया । पयाणु दिण्णु=प्रस्थान किया । माइच्चहो=

दूनेण भणित तहो कुमलु राय
 पइ जेहा अन्ठहिं जसु सहाय ।
 अणवरउ एरिन्हिं त्रिहियसेय
 सो सुमरइ तुम्हइ देवदेव ।
 जह जलह ए मिष्णउ मीयलत्तु
 तह नापणरिन्हो तुहु खिरुत्तु ।

पत्ता

लइ पालहि एण करकइ तुहु चपादिसायहो केर धर ।
 होएबिणु एककइ वे त्रि जण अणुहु जहु तुम्हइ मीय धर ॥

(११)

करकइ का प्रत्युत्तर—

त्रिणु नेरइ लभइ एाहि मित्त
 ण्ह मेरणि भुत्तहु हप्पमेत्त ।
 ए त्रि पालहि जइ पुणु सेव वाछु
 तो ठाउ करहिं अह रहिं मिणासु ।
 त सुणिनि तयणु करकइण्ण
 तें हियनए कोहु धरतएण ।
 आयणएण भानयनेणीय
 ए चण्णदिवायर सगिग ठीय ।
 जानाहि दूउ तउ सामि जेत्यु
 तहु खणु त्रि एकहु मा उअहि एत्तु ।

सव । सायनत्तु = जीतनता । केर = घाना ।

वें कहि जापादिवासु

हउ आयउ तुरियउ तुज्जु पासु ।

जइ सगरि अति भदायलेउ

सगासु मज्जु ता तुरिउ देउ ।

इउ सुणिनि वयणु गउ वूउ तेरयु

सिरिधाडीगहणु वसइ जेत्यु ।

घत्ता

तें कहियउ दतीपुरिणिबइ सो वइ देय ण वि णवइ ।

सगामरणि तुम्हेहिं सहु अइजुम्भइ धीरउ इउ लउइ ॥

(१२)

चपा नरेश की तैपारी और करगुड का कूच—

त सुणिनि वयणु जापाहिराउ

सण्णज्जइ ता त्रिर वद्धराउ ।

तावेत्ताहिं दतीपुरिणिबेण

धपाविय मेइणि मदरेण ।

णिण्णामय अरियणजीउण

उट्ठाविय दइदिसि रय रणेण ।

णहु छावउ खलियउ रधि रण

लहु दिण्णु पयाणउ कुद्धण ।

गगापएसु सपत्तण

गंगाणइ दिट्ठी जउण ।

१२ सण्णज्जइ=मनद होना है । वद्धराउ=वद्धराग । उट्ठाविय=उठाया ।
खलियउ=स्नानित हो गया । पयाण दिण्णु=प्रस्थान किया । भाइजुम्भइ=

सा मोहः सियनल कुडिनयति
 ए मेयमुयगहो महिन जनि ।
 दूराउ वदनी अडमिहाड
 हिमवत गिरिन्हो मिति एाड ।
 मिहि कुलहि लोयहि प्दतएहि
 आइन्चहो असु परित्तिण्हि ।
 दम्भकियण्हि करयनेहि
 थड मण्ड एाड पयहि छनेहि ।
 इउ सुद्धिय गियमग्गेण जामि
 मा रुमहि अम्महो उयरि मामि ।
 एाड पेक्किन्नावि गिउ रुरुण्णामु
 गउ तण्णण्णयद गुण्णगियण्णामु ।

धत्ता

जे मगरि मुरजरम्भेरहं यउ नगियउ धणुहरमुअसरहि ।
 ते नेदिउ पट्टणु धन्दिमिहि गयतुग्गण्णिहि दुद्धरहि ॥

(१३)

चपा नगरी का धिराव—

त चेदिउ जा राण्य तेणु
 ता आलि पुरयणु हुअ मग्गेण ।
 एरण्हहो कहि परण केण
 उअरुद्ध परवत्तु सयत्तु जेण ।
 हे एरण्ड परवत्तुगुह्णाम

आदित्यकाभूय का । अन्विद्य= दूब से धक्का और उठ रूप । मुद्धिय=मुद ।

१३ धन्दि=पैर तिया । उअरुद्ध=गात्र तिया ।

वदीयणसज्जण परियास ।
 उद डसु ड गय गुलुगुलत
 कुडिलाणण वरहय हिलिहिलत ।
 सचल्लिय रहवर घरहरत
 फारक्कहिं फुरियहिं फरहरत ।
 करवालफिरण रविकरहरत
 वडुडिय कउत्तल थरहरत ।
 छुरिएहिं कौत अइ जिप्फुरत
 पमणा इव नेए सचरत ।
 सीदोउ मडुद्धरु अइपयडु
 तुह उवरि पराइठ वइरिदडु ।

धत्ता

त सुणिधि णरिदढो मुइकमलु सजायउ रत्तप्पलसरिडु ।
 डसियाइरु भूमगुरणयणु कोहाणलु वडिडउ गव हरिडु ॥

(१४)

सैनिक प्रतिक्रियाए —

तान सो उट्टिओ भाइया रिंकरा
 सगरे जे रि देयाण मीयक्का ।
 वाउयेया हया सज्जिया कु नरा
 चक्कचिक्कार सचल्लिया रहवरा ।
 हक्क डक्कार हु फार मेल्लतया
 धानिया के वि कु ताइ गेण्हतया ।
 के रि सम्माणु सामिस्स मएणतया
 पायपोमाण रायस्स जे मत्तया ।

चाग्रहत्या पसत्या रणे दुद्धरा
 धात्रिया ते खरा चारुचित्तागरा ।
 के त्रि कोवेण धावत कपतया
 के वि ऋगिष्णुस्त्वर्गाहिं पिपंतया ।
 के त्रि रोमचक्रचेण सजुत्तया
 के त्रि सण्णाहमग्दमगत्तया ।
 के त्रि सगामभूमीरसे रत्तया
 सगिणी छन्मग्गेण सपत्तया ।

घत्ता

अपाहिउ णिग्गउ पुररहो हरिन्नरिरहधर परियरिउ ।
 वडङ्गाडपीरररहिं मणु केहिं ण अणुमरिउ ॥

(१४)

द्व. द. पुद्—

ता हथइ तूराड
 भुग्गयलपूराड ।
 घज्जति ऋणाड
 सज्जति सेण्णाड ।
 आणाए घडियाए
 परलड भिडियाड ।
 कु ताड मज्जति
 ऋजरड गज्जति ।
 रइसेण वग्गति
 ऋरिन्मणे लग्गति ।
 गत्ताड तुट्ठति
 सुडाड पुट्ठति ।

रुडाइ धावति
 अरियाणु पावति ।
 अताइ गुप्पति
 रुहिरेण थिप्पति ।
 हड्डाइ मोडति
 गोयाइ तोडति ॥

घत्ता

के वि भग्गा कायर जे वि खर के वि भिडिया के वि पुणु ।
 खगुग्गाभिय के वि भड मडेविणु थरुका के वि रणु ॥

(१६)

षाप वेटे का युद्ध—

ता रोसें धंपाहिउ खरिदु
 रह चडिवि पधायउ ण सुरिदु ।
 सो तुरिय गयउ परबलणिवामु
 अभिडियउ करकड्हो खिवासु ।
 ता कलयलु वडिदउ रिहि बलाह
 घाणानलिछाइयणहयलाह ।
 करकडें कोहालणजुएण
 अइरानइ करदीहरमुएण ।
 ता तुरियइ चपणराहिवामु

सहसति पमेल्लिय मत्ति तामु ।
 रहु द्विण्णित्ति चिण्हद्वत्त खण्णेण
 पुणु सारहि पाडित्त तुरित्तेण ।
 ता सेरे चपणराहिवेण
 सपेसिय गण तुरतण्ण ।
 सर पेसिय जा चपाहिणेण
 करकड्हो उल्लु मग्गत्त खण्णेण ।

पत्ता

नरकङ्क पेण्डिवि उल्लु चलित्त मरिण रोसु मद्दत्तत्ति निम्फरित्त
 जा निज्ज पड्डण्णी खेयरड तद्दे पेसणु निण्णित्त तें तुरित्त ।

(१७)

विद्याओं का प्रयोग—

तान तेणुद्वरेण
 मुक्क निज्ज मन्दरण ।
 ता खण्णेण विज्ज धिट्ठ
 चाविया तुरत्त निट्ठ ।
 पे क्करत्तिट्ठ क्करत्ति
 वाग्नेय सचरत्ति ।
 रक्खसी न वावरत्ति
 भासुरा विस्से मिलत्ति ।
 कु भित्तु म णिहत्ति
 रहवरेण रह णत्ति ।
 सग्गारम्मि ले नि निट्ठ
 दसण्णेण ताद्दे णत्त ।

के वि मुच्छमोदियाइ
 के वि जोइ जोदियाइ ।
 के रि घायखडियाइ
 के रि जीव छडियाइ ।

यत्ता

ता कुवियइ चपणरेसरइ सुरिण रि असिलियरे घरिय ।
 जा बिज गिलती खरसयइ वलसत्ति सणद्ध तहे हरिय ॥

(१८)

युद्ध की निरव्यापी प्रतिक्रिया—

गय बिज तट्ठीय
 वरफडें दिट्ठीय ।
 रोस वहतेण
 परे धणुहु निउतेण ।
 तहो चणे गुणु दिणु
 त पेक्खि जणु खिणु ।
 ता गयणे गुणसेव
 खोई गया देव ।
 टनारसरेण
 धोरें रउहेण ।
 धरणियलु तडयडिउ
 तस कुम्मु कडयडिउ
 भुणयलु खलमलिउ ।

गिरिपथरु टलटलिउ

मयरहरु मलमलिउ ।

घरणिउ मलमलिउ

मगणाहु परिसरिउ

मुरराउ थरहरिउ ।

घत्ता

सो मदु सुणैविणुघणुगुणहो रह भग्गा गुट्टा गयपवर ।

मग्गलियउ चपणा(र)दियहो भयमीय ए चल्लहिंरहिंमयर ॥

(१६)

मा का हस्तक्षेप—

सुगलोयह टुडु दियउउ रिभिणु

टुडु परउलु भयमीयउ णिमणु ।

मनद्धउ टुडु वडमाइयाणु

टुडु भग्गाए चपणरिमाणु ।

टुडु चाउ सणद्धे सजिनयाउ

टुडु सेयनल गुणु मजिनयाउ ।

करक्के गुणै मिउ गणु पवर

चपाहिवेण ता मुक्कु अवर ।

हुउ गणु णिरत्थउ सोटु जाउ

पोमाउउ सगरे पत्त ताउ ।

मा न्दिउय तेण णरसरेण

पुणु पणमिय दूरहोणवमिरण ।

हे माए माए मगर अमब्भे

किं आइय तुहु भडनियरमञ्जे ।
सा भणइ पुत्त सवरहि चाउ
एहु घाडीवाहणु तुम्ह ताउ

घत्ता

कहि माए महासइ गूणखिलउ स्मिनु ताउ महारउ खिउ हवइ ।
ता ताइ तुरतइ तहो कहिउ सुखि पुत्त महारल धरणिवइ ॥

(२०)

मिलन—

चापाउरिरायहो घरे रमणी
हउ होंती जणवयमणदमणी ।
सजायउ जइयहु गभे तुहु
उपपणउ तइयहु दुक्खु महु ।
हउ हरिनि शीघ ता करियराइ
दतीपुरि बाहिरि दुद्धाइ ।
तहिं जायउ भीममसाणि तुहु
पइ पेक्खिनि जायउ मज्झु सुहु ।
फरकडु णरेसरु एरु म्भणु
त सुखिनि वयणु थिउ निमणमणु ।
णियपुत्तहो अक्खिनि चत्तमया
पुणु तुरियउ कतहो पासेगया ।
सा दिट्ठीय चपणरेसरेण
गीगाणइ ण रयणायरेण ।

जाणतें एह पोमागढ्या
तो त्रि तेण मढातें मा णमिया ।
अह गरुणउ जो वयभरु धरेइ
ते राणउ कतहे शुद्ध करेइ ।

घत्ता

परिपुच्छिय चपणराहियउ कह छुटिय तुहु तहो गयवरहो ।
ता कहियउ ताइ तुरतियण गियगयण पमुक्की तहे सरहो ॥

(२१)

पद्मावती घाढीगहन को पूरु कया सुनाती है —

तहो पासे ममाणए महो सुयउ
कुनमढणु एदणु सो हुयउ ।
परिपालित केण वि गेयराइ
उउ लइयउ तहि मइ गिय भराइ ।
अतोपुरिराणउ ता मुउउ
तहि गयरे णराहिय मो क्रियउ ।
सो जाणहि अहि तुहु भिडिय
तुहु कोइ विसाण परिणहिय ।
मा मुम्भहि छहहि एहु गहु
गिय एदणु तेरउ एहु एहु ।
त उयणु सुणियि चपाहिवइ
सतुठ्ठउ तक्खणे सो हियइ ।
हूउ घणणउ जसु एहुउ सुयउ

जो सगरे धीरउ दिढभुयउ ।
परिछडिवि घणुहरु गालियसरु
करकडपासु गउ शिवपत्ररु ।

घत्ता

पुणु जाइनि धाबीयाइणइ आलिगिउ एदणु सो खणिण ।
जह सगरे जाइनि तेयणिहि पञ्जुएणु कुमुरु दामोयरिण ॥

(२२)

चमा याचना उपसहार—

करकडइ वुत्तउ शियनणु
पइ सरिसउ ज मइ कियउ रणु ।
मा गिण्हि मेरउ देउ छलु
त खमहि भडारा महो सयलु ।
तं सुणिवि वयणु चापाहिउइ
उल्लसियउ तक्खणे सो हियइ ।
गउ लेविणु शयरहो सहु शियेहि
पइसारिउ खाणाउच्छयेहि ।
सा शयरी करकडें सहेइ
अमराउरि लज्जा सहो वहेइ ।
शर रयणइ लेविणु साणुराय
णिम्मदिरे वद्धावणु आय ।
वा दुद्धरायह जो घरट्ट
करकडहो वद्धउ रायपट्टु ।

पुणु अण्णु राए तवत्तणेण ।
 तणु मडिउ तवमिरिभूमण्णेण
 वम्मटठठिणिगट्ठणमारु ।
 तउ धरिणि सुदुदरु वाममारु
 तणु छडिणि वडिणि द्विययगटि
 सो लमाउ सिअरुत्तणण कठि ।

पत्ता

गउ घोडीयाहणु मिअणिलउ करणयामरगणउ गुणहं वरु ।
 करवडु करतउ रज्जु पुरि मो अन्धइ माणिणिद्विययहरु ॥



[५]

कवि धाहिल

'पूव ज'म की धनश्री हो बतमान ज म म हस्तिनापुर के माधवाह प्रशोवदत्त की पुत्री पद्मश्री है। सावेतपुर के कुमार समुद्रदत्त से उसका विवाह होता है। विवाह के बाद, वह कुछ दिन समुरान में ही रहना है। फिर मा की बीमारी की खबर पाकर अपने घर जाता है। यहाँ पद्मश्री को भूल जाता है। वह वियोग में व्याकुल हो उठती है। एक साधु कुमार को वियोग में दुखी 'बकची' को देखकर अपनी पक्षी की याद आती है वह समुराल पहुँच जाता है। शाम को पद्मश्री सज्जन कर प्रिय से मिलने के लिये जाती है। ठीक इसी समय, पूव ज'म के अतराय से एक व्यतर देव जिन्ना उठता है, पद्मश्री तून मुझे संकेत दिया था यह दूसरा कौन है। यह सुनना था कि कुमार सदेह, शीघ्र और धुँखा से जल उठता है। पद्मश्री को मिलता है—भक्तना, अपमान के घूट और परित्यक्त जीवन। वह शेष जीवन धार्मिक आश्रय में बिताने के लिये बाध्य है।

उज्जोइउ भुयणु असेसु इ
गरुय-राय रजिय हियउ ।
अत्यनण सिहरि रवि सठियउ
समा-यहु-उक्कठियउ ॥

(१)

सध्या का चित्रण पद्मश्री का वामगृह में प्रवेश—

अत्यमिउ दिनायम् सभ जाय
लिय कणय घडिय न भुयण भाय ।
कमलिणि कमलुनिय महुरहि
असुण हि रुपइ मकज्जनेहि ।

सोआउरु मणि चम्काउ होइ
 षउ मित्त विश्रोउ न दुम्नु देउ ।
 अचारिय मन्त्र नि निमि विहाइ
 किलिकिलिय भुय-रस्मम पिमाय ॥
 तगु पमरिउ किपि न तगु विहाइ
 तगु गाम गामि निस्त्रिउ नाउ ॥
 मोहत कुमुय उगु उडउ चउ
 कदप्प-महोमहि-रु न-वडु ॥
 यणि जेम मड नहु इत्यि नू
 नासेइ मियकह तिम्य तमोह ।
 हिरण्यक-किरण विष्णुरिउ भाउ
 गयणगणु घरलिउ न टुनाइ ॥
 निमि पदम-पहरि उजाम-कामि
 वासहरि कुमरु मणभिरामि ॥
 महमहिय-बहल-अरघ्य-गधि
 पचन-सुसुममाता सुगधि ॥
 रगुणिय महुर रवि ममर-लीरि
 पञ्जालिय-मणि-मगल-वईरि ॥
 पन्मसिरि महिउ पालरि ठाइ
 महियणु आणन्तिउ घरहु जाइ ॥

घटा

भाणारिह रुण्ड रिसेमेहि
 मुर मोक्खट माणेउ कुमरु ।

आलिंगित कन पसुत्तउ
नाइ स त्रिगुह पचसरु ॥

(२)

प्रभात का चित्रण—

परिगलित रयणि उगमिउ भाणु
उज्जोइउ मज्झिम-भुयण भाणु ॥
त्रिच्छाय-कति समि अत्यमेइ
सत्तलकह किं थिर उदउ होइ ॥
सूरह भएण नासेवि निहीणु
गिरि-कदरि त्रितरि तमोहु लीणु ॥
रहहिं कमलायर पयड कोस
थिलसति मित्त किर विगय-दोम ॥
मडलति कुसुय महुर मुयति
थिर नेह मलिण किं कह ति हति ।
मुणिरर ररति सव्माउ माणु
धुरलति इस निम्मलु त्रिहाण ॥
नयरारु पदति थुणति सिद्ध
पउमसिार कुमारि सहु त्रिउद्ध ॥
गोसग्ग वज्जु सयलु इ करेवि
गुरु-वलण-कमलु पणमति वे ति ॥
गउ सत्थयाहु निय पुरि स-वधु
ठिउ कुमरु-तहि यरउसुहगधु ॥

२ प्रभात का चित्रण । गो सग्ग वज्जु=यवरे के सब नाम । वेवि=दोनों ।
सोहम्मउ=सोभाम्य । ताव'नउ=तावण । विम्बिह्व काले=विस्मित मन से ।

सोश्राउरु मणि चरसाउ होइ
 वउ मित्त पिश्रोउ न दुस्सु देउ ।
 अघारिय मयन पि मिमि विहाइ
 किलिमिलिय भुय रस्सम पिमाय ॥
 तमु पमरिउ मिपि न नणु विहाइ
 नणु गम गमि निस्सित्तु नाइ ॥
 धोहन कुमुय वणु उठउ चउ
 कदप्प-महोसहि रुक्कडु ॥
 वणि जेम मड रुद्ध हात्थि जूड
 नासेइ मियरुट्ठ तिस्य नमोहु ।
 हिरण्ण-किरण पिण्णुरिउ भाइ
 गयणगणु धरलिउ न गुणाइ ॥
 निमि पदम पहरि जाम-कामि
 वासहरि कुमारु मणभिरामि ॥
 महमहिय उहल-वरधुय गधि
 पचन-सुसुममाला सुगधि ॥
 रणुगणिय महुए रवि भमर-लीवि
 पञ्जालिय-मणि-मगल-पईवि ॥
 पउमसिरि महिउ पालरि ठाइ
 सहियणु आणन्तिउ धरहु जाइ ॥

घटा

नाणाउिह ररण विमेसेहि
 सुर मोक्खउ माणैउ कुमरु ।

१ अत्यवगुमिहरि—अत्याचन व विषय पर । मम=मध्या । ज्ञाय=हो गर् ।
 सध्या वा चित्रण ।

आलिङ्गित कन पसुत्तउ
नाइ ॥ विग्गहु पचसरु ॥

(२)

प्रमात का चित्रण—

परिगलिय रयणि उग्गमिउ भाणु
उज्जोइउ मज्झिम-भुयण भाणु ॥
त्रिच्छाय-कति ससि अत्थमेइ
सकलक्कहि किं थिरु उदउ होइ ॥
सूरह भएण नासेवि निहीणु
गिरि-कदरि त्रिविर तमोहु लीणु ॥
रेहहिं कमलायर पयड कोस
जिलसति मित्त फिर विगय-दोस ॥
मडलति कुसुय महुयर मुयति
थिर नेह मलिण किं कइ पि ह्वति ।
मुणियर करति सव्माउ भाणु
कुरलति इस निम्मलु निहाण ॥
नवजारु पढति धुणति मिद्ध
पउमसिंरि कुमारि सहु त्रिउद्ध ॥
गोसग्ग वज्जु सयसु इ करेवि
गुरु-चलण-म्मलु पणमति वे पि ॥
गउ सत्थवाहु निय पुरि स-वधु
ठिउ कुमर-उहि वरउसुहगधु ॥

२ प्रमात का चित्रण । गो सग्ग वज्जु=मवेरे के सब वाम । वेवि=दोनों ।
सोहम्मउ=सोभाग्य । लाव'नउ=लावण्य । विम्हिय मणेहि=विस्मित मन से ।

गाढागुणाय पञ्चमसिरि तामु
 छाया य न मेऽलङ्ग मणु रि पामु ॥
 हरि हियइ जेम्प नियमेइ लच्छि
 तिह मा यि कुमारह दीहरच्छि ॥
 पुत्रयजिनय नणु-मणु हरण-रुपु
 मालीनि जहिरुछिइ रिमय मोरु ॥

घत्ता

मोहगउ लायनर न
 परगयिणु रिमिहिय मणाहि ।
 मलहिवनइ अणुनिणु लोणहि
 हरिमुणु रिमय-लोयणेहि ।

(३)

ममुराल म पद्मश्री और ममुरदत्त श्री दिनचर्या—

गुरु रिमिह रिणोड रिमि जनि
 अरुणोपक गन्मयड करनि ॥
 कडय रि निय अग-यमाहणेण
 रइय रि गुरु चलणाराहणेण ॥
 रइय रि निर्गिन्-गुण कित्तेणेण
 कडय रि माटुण नममणेण ॥
 कडय रि निणुपम्म-रहाणणहि
 कडय रि रसति रज्ज्वाणणहि ॥

३ पसाटुण=प्रसादन य । पच्छिगुद=पञ्चाङ्गुण=प्रेक्षण=नाटक दखनर ।
 माहम्मिय भोगुण=गार्हपत्य भोदन य । पद्मानग=प्रनागर । बटुनेयद=

कइय वि कर ति जल-वे लि रम्मु
 कइय वि लिहति बर चित्त कम्मु ॥
 कइय वि पेच्छगय पलोयणेण
 कइय वि साहम्मिय भोयणेण ॥
 कइय वि पढन्ति पन्होत्तराइ
 बहु भेयइ गूढ-घणक्खराइ ॥
 भुजतइ मणहर विसय लट्ठ
 सबच्छर वोलिय ताम अट्ठ ॥
 अह अन्न दियहि नार्मि वराहु
 सापयहि अयिउ लेहवाहु ॥
 तिं पित्तु लेहु पायइ कुमार
 तहिं लेहि लिहिउ किर एव सारु ॥
 “लहु एहिं कुमार समुदत्त
 तुहु विरहि विसठुल जणयि पुत्त ॥
 गुरु-सोय-सेल्ल-निन्निभज्जमाण
 फठ टिठय दुक्खि धरइपाण ॥

घत्ता

रच्छामुहि मेहि घर गणि
 सणि रुयति न त्रि थक्कइ ।
 सरि नलिणि जेम जल-वज्जिय
 रत्ति दियहु परिसुक्कइ ॥”

मां की रीमारी ज लेखपर और समुद्रत का प्रधान, पद्मश्री की
विशेष वेदना—

पद्ममिरिहि माहिय लेह यत्त
 'मद्द दुर्मि अन्दइ नगणि तत्त ॥
 ता नामि कने पेम्मेमि ताउ
 अरणेमि जलेरिहि हियय-मोउ ॥"
 सा पमण्ड अंसु नलोत्त नेत्त
 हउ जामि तउ मद्द अउत्त ॥"
 लग्गनि दियह पिय दुग्गु देसु
 मिउ मदिहि अ-दहि तुरियउ म्मु ॥"
 गउ दिट्ट नगणि पणमिउ अमोउ
 आनिमिण विहि नि पण्डु मोउ ॥
 आणुनिय-यवय-मयण मिच्छ
 अन्दइ पुमारु हुउ फालु तेत्तु ।
 पद्ममिरि रिह मिहि-मोमियणि
 निह भूरइ रयणिहि निह रहणि ॥
 नेमिचित्तिय पुच्छइ भण्ट माहु
 कडयहु आवेसइ मग्गु नाहु ॥
 उलि-मद्द-मकम्भण महुर-याय
 लहु अरिउरहि फाय ॥
 आवेइ नु नउ मग्गु अग्गु
 दहि मालि मत्तु तो दमि तुग्गु ॥
 आवेउ नु लोयण-सन्धु
 मुद्द देमि जक्क लद्धुयइ दग्गु ॥

आगेर तुरिउ महु जीएसु
ओयाइउ तुम्हह मि देसु ॥

घत्ता

नयणसु-सलिल गङ्गयल-थल
दिणि डिणि किम्भइ वाल जिह ।
लाग्न्न-कति परिजिजय
किन्द् पक्खि ससिरेह जिह ॥

(५)

कुमार का चरुनी को देखकर पद्मश्री का पाद आना और ससुराल के लिए कूच करना—

अह एकहिं दियहि समुददत्त
निसि समइ सरोवर नेण पत्तु ॥
पिय रहिय दिट्ठ तिं धक्कनाइ
फदव कलुणु दुक्खिय घराइ ॥
उन्नेइ मप जल मज्झि देवि
सीरहिं ठिय पखउ पुणु धुणेनि ॥
पक्कय-गणु लोलइ गयणि ठाइ ,
तड-त्तरुयरि लग्गाइ दिसिहिं धाइ ॥
“चक्काय-धरिणि सरि^१एह जेम्ब
विरहाउर मज्झ मि दइय तेम्ब ॥
जिह राय नीरि पजरि निरुद्ध
अच्छइ महु मग्गु नियन्न मुद्ध ॥”
उम्भठ पिसडुल भट्ट द्वाउ
विरहानल सोसिय नियनि जाउ ॥

गुरुयणैण वृत्तु म "सद्वाय सन्ध
निय वन लण्डिणु आउरन्ध ॥"

आहृदु तुरगि मगुददत्त
हृदियण्डरि सद्दु सत्येण पत्तु ॥
पगुइय मण सो अउरन्ध-यालि
पदसरद सल्ल मदिरि तिमालि ॥
आयद्ध वेणि
सिय-दसण सेणि ॥
वर-गलिय-वलय
लयत अलय ॥
मल-मइल वेस
लीहायसेम ॥
इय-गुण विमिद्ध
पउमसिरि दिट्ठ ॥

घत्ता

पेस्सेगि कुमद तद्धि यानद्धि
नद्धु खणद्धि सोगु किह ॥
हुव्विमह लोय-सत्ताणु
कय पुनह तालिह, निह ॥

(६)

मिलन की पूर्ण तैयारी और अन्तराय—

द्वात्रिंश सुयवन्दाणिय नलेण
सु निउ तिलित्तु हृदियदणेण ॥
तगोत्तु निनु मिय उचिय मित्ति

परिपुच्छिय कुसलाइय-पउत्ति ॥
 एत्थतरि मउलित गुरु पयाउ
 धारुणि पसग-जणियाणुराउ ॥
 कहवि य अत्यवणु न होइ लोइ
 न अन्भमुक्कुर वि अत्यवेइ ॥
 पउमसिरिइ सज्जिय गस भवणु
 विणिघेसिउ कोमल-तुलि सयणु ॥
 निम्मल पईउ निहयघार
 सेज्जहि ठिउ अज्जइ तहि कुमार ॥
 ज वद्धउ अग्नहि जम्मि आसि
 घणसिरिए वम्मु वहु-दुक्ख रासि ॥
 त उदयगउ भोगतराउ
 केलिप्पित आइउ तहि पिसाउ ॥
 पउमसिरि नियवि आप्त गेहु
 चितवि "विहवावउ विहि मि नेहु"
 सो अन्न भित्ति अतरिउ भणइ
 फुडु पयणहि जिइ सो कुमर सुणइ ॥
 'अत्यमिइ सूरि पसरिइ तमोहि
 आवेज्जमु अणुदिए एत्थु गेहि ॥
 पउमसिरि मग्गु सकेउ देइ
 आणित एत्थु पइ अनु कोइ ॥'
 "को वोल्लइ एहु अणज्जु घटठ"
 जोवइ कुमार ता भत्ति न्ह ॥

६ विन्ह पविष्ठ = कृष्ण पक्ष । सविरेहजिह = जिस प्रकार चन्द्र रेखा ।
 विहवावउ नेहु'—दोना वा प्रेम नष्ट कर । , प्रनभित्ति

मायायि टुट्टु पिप्साउ
 सुट्टु सुनरि अयलोदयउ ।
 पयणादन् लेम्न पहेउउ
 भस्ति न नन्नड फदि टियउ ॥

(७)

कुमार डाग नागी जाति री निन्दा—

चितड कुमार 'दुरसीन ण्ड
 बलत्तु महु भिन-नेह ॥
 अद्विम्हन् निम्मल सुल-यमूय
 दुच्चारिणी रह हूउ मन्व-धूय ॥
 वम्मग्ग-लग्ग हूय टुट्टु सीन
 उशम त्रियम्मिय-भामलीन ॥
 सच्छट् अण्णन् निराणुरप
 अन्नाणिय मोहिय त्रिय-सरु ॥
 न गण्ड माइ वपु म महोर
 न गण्ड इह वरलीय भयावणु ॥
 न गण्ड मरगु लग्न भउ मे नड
 करइ अक-वइ दददसु येन्लड ॥
 कयहु करणि कनु मारायइ

दूकरा दोरान व अन्तर सु । आवन्नु=आवन् । अण्ण=अणाय । नन्दु=

नष्ट हु गदा । विना=विवाह ।

७ अद्विम्हन्=अयन विम्मित । मन्व तूय=मन्व वा वेग । वम्मग्ग-लग्न=माग
 माग म तग यद । सच्छट्=स्वच्छट् । अन्नाणिय=अन्नाया । भयावणु=

सइ अन्नु पुणु सो नि ण भायउ ॥
 पलविकय ण्ह नारि वट्ट भगेंहि
 घदण-लय जिह भूत्त भुयगेंहि ॥
 छिन्निणि नम्हु वन्न-सहु वालहि
 दसमि अज्जु कयतु दुसीलहि ॥
 तोडमि कमलु जेम्ब सिरु दुट्ठहि
 फलउ अणग सगु पाबिट्ठहि ॥

यत्ता

चित्तइ एउ कुमार
 कोमाणन जालिय मणउ ।
 “परिहारु डडु खल नारिहि”
 सुमरिय नीइ वियस्खणहु ॥

(=)

पद्मश्री का शयनकक्ष में प्रवेश, प्रताडना और अपमान—

आइय पडमसिरि अलसरेवि
 परि कमलु पडर तगोलु लेवि ॥
 पसरत-वहल मुहनास ग ध
 उडिभन्न निविड रोमच यध ॥
 उच्चड भिरडि भग भीसावणु
 कुत्रिउ कयतु नाइ दुइ सणु ॥
 'कोय फरत नासु डमियाहरु

मयानर । उडडसु सोत्तइ=आग से खेलता है । पलविकय=प्रलयाव ।

८ पलवरेवि=पलवार करके । पडर=प्रवर । दुइ सणु=दुइ-नीम । डसियाउर=

कुम्भ दिट्ठि न पयहु मणिच्छर ॥
 मन्त्रिय उण लय जिह ररि-रायहु
 सन्त्रिय मनरि जेम्ब दुनायहु ॥
 सन्त्रिय कमलिणि जेम्ब मियम्हु
 सन्त्रिय कुलवहु जेम्ब कलम्हु ॥
 सन्त्रिय गरुडह जेम्ब मुर्यगी
 सन्त्रिय वग्गह जेम्ब कुरगी ॥
 सन्त्रिय सेल मुत्ति जह वज्जह
 सन्त्रिय मुणियह जेम्ब अक्कजह ॥
 सन्त्रिय निह मइ अमह-वमगह
 सन्त्रिय जिह चम्माह विगलह ॥
 सन्त्रिय रायहसि जिह जल्लयद
 सन्त्रिय जेम्ब वसु ररि पण्यह ॥

धत्ता

निम्ब करिणि त्रिभि आसन्त्रिय
 गर-णहरह पचाणणहु ।
 तह भीसणु रुउ निप त्रिणु
 धान चमक्किय चित्त तहु ॥

दण्डिताघर । कुम्भ दिट्ठि=कुम्भ दृष्टि । वणनव=वनवता । सानूरि=सदानी
 चम्माह=चम्माह । जल्लय=जल्लय । विगलह=विगल । विभि=
 विष्णुचल ।

उगते प्रभात मे पद्मश्री के मियण जीवन का चित्रण—

दोल्लाविठ कतु न देइ वाय
 कर मउलि करेविणु भणइ जाय ॥
 “को अविणउ मइ किउ सामिसाल’
 पडिभणइ सो वि आरुहु गाल ॥
 “दुस्सीलें दिट्ठि महु परिहरेहि
 अह कालि अपूरइ तुहु मरेहि ।
 तं असुय-पुब्बु निसुणेवि कउ
 अइगरुय तास-कपत गत्त ॥
 धउजाइय जिह कुल सेल-मुत्ति
 मुच्चिय धरणीयलि पडिय भत्ति ॥
 चिर वेलइ उट्टिय लद्ध सन्न
 मुह-भमलु नरिणि करयलि परुन ॥
 अच्छेइ वाल जिह वृन्न हरिणि
 नइ कलुणइ भत्ति त्रिह्वाइ रयणि ॥
 पउमसिरि-सरीरइ जेम्ब कति
 नक्खत्त नियह नहयत्ति गलति ॥
 इ दिय मुह व नासइ तमोहु
 कुम्भुड-रउ पसरइ नाइ मोहु ॥
 गयणे वे चादु त्रिच्छाउ जाउ
 सोय ॥ प्रियघउ चक्कवाउ ॥
 नयणा इन कुमुयइ सकुयति

कुल्ल दिट्ठि न पयहु मणिच्छर ॥
 मन्थिय उण-लय निह ररि-रायहु
 मन्थिय मनग्गि जेम्भ दुयायहु ॥
 मन्थिय कमलिणि जेम्भ मियम्भु
 मन्थिय कुल्लयहु जेम्भ कलम्भु ॥
 सक्किय गरुड्ह जेम्भ सुर्यगी
 सक्किय पग्गह जेम्भ कुरगी ॥
 सक्किय सेल मुत्ति जह वग्गह
 सक्किय मुणियइ जेम्भ अरुण्ह ॥
 मन्थिय निह मइ अमइ-ममगह
 मन्थिय जिह चम्माइ पियान्ह ॥
 सक्किय रायहमि निह जलयद
 मक्किय जेम्भ यमु ररि पण्यद ॥

धत्ता

निम्भ ररिणि पिन्नि आसक्किय
 म्बर-ण्हरह पचाणणहु ।
 तह भीसणु रुउ निए निणु
 यान्न चमक्किय चित्त तहु ॥

दक्षिणाधर । कुल्ल दिट्ठि=मूर दृष्टि । वण्णयव=वनवता । सान्धूरि=मंदरा
 यक्काद=वनवाह । जयय=वनह से । विण्णयह=विठान से । विन्धि=
 विघ्नावल ।

उगते प्रभात में पद्मश्री के त्रियण जीवन का चित्रण—

घोल्लात्रिउ वतु न देइ वाय
 कर मउलि करेविणु भणइ जाय ॥
 'को अविणउ मइ किउ सामिसाल'
 पडिभणइ सो वि आरुहु गल ॥
 'दुस्सीलें दिट्ठि महु परिहरेहि
 अह कालि अपूरइ तुहु मरेहि ॥
 त असुय-पुब्बु निसुणेवि कत
 अइगळय तास-कपत गत्त ॥
 वज्जाहय जिह कुल सेल-मुत्ति
 मुच्चिय घरणीयलि पडिय भत्ति ॥
 चिर वेलइ उट्ठिय लद्ध सन्न
 मुह न्मलु नरियि करयलि परुन ॥
 अच्छेइ पाल जिह वून हरिणि
 नइ फलुणइ भत्ति गिहाइ रयणि ॥
 पउमसिरि सरीरइ जेम्ब कति
 नक्खत्त निगह नहयत्ति गजत्ति ॥
 इ दिव मुह व नासइ तमोहु
 बुक्कुड-रउ पसरइ जाइ मोहु ॥
 गयणे वे चहु मिच्छाउ जाउ
 सोय व वियघउ चक्खवाउ ॥
 नयणा इव कुमुयइ सकुयति

आमा एव दीदु दिमउ होति ॥
 उगमइ अरणु सताउ नाइ
 रणिउद्धि जेम्प निमि खयहु जाइ ॥

घत्ता

हरिसो इय निगाउ
 कुमरु सदेसहु पटिठयउ ।
 दोहगु जेम्प घर-यान्नाहि
 उयलि महीयति मठियउ ॥

(१०)

पद्मश्री का आत्म चिन्तन—

‘ दुव्वयण-सल्लु मणि पक्खिवेणि
 वत्तुण रयति मइ परिहरेणि ।
 पिउ गेहि गयउ गलियाणुराउ
 मइ फाइ हयासइ मियउ पाउ ॥
 आणेसि नाइ ति घरियणण
 कइया रि न खडिय तुम्ह आण ॥
 तुहु सामिय वेण उ अलिउ अञ्जु
 सभालिउ जिह मइ मिउ अक्खु ॥
 हउ सुक्क निरह-सत्ताय-सत्त
 कणवीर माल निह न रि निरत्त ॥
 दुव्वाडय मत्तरि जिह मिलाण
 कपि-वरतणु व्व उक्खय मिसाण ॥
 तप्पाडिय फणि-मणि जिह भुयगि

विच्छाद्य दीण भय-नेविरमि ॥”
 धासहरह निग्गाइ सीलरति
 धत्तचलेण नयणइ लुहति ॥
 चित्तु एह गरुणणइ सिट्ठु
 जोयायिउ कुमर न कहिं रिं दिट्ठु ॥
 अइभीम सोय सायरि निहित्त
 दोहग्ग सल्ल सल्लिय विचित्त ॥
 वज्जिय विस मज्जरि जइ भमरेंहि
 वज्जिय सर दिट्ठि जइ तिमरेंहि ॥
 वज्जिय सुयण गोठि ठ जइ पिसुणेंहि
 वज्जिय सीह दिट्ठि जइ हरिणेंहि ॥

पत्ता

तिह मयल सोक्ख-परिवज्जिय
 निष्फल इन तारन सिरि ॥
 जिणु दिव्व दिट्ठि मणि भायइ
 कति पउत्थइ पउयसिरि ॥

आमा इध दीदुउ न्मिउ होति ॥
 उगमइ अरगु मंताउ नाइ
 रत्रिउदि जेम्ब निमि मयहु जाइ ॥

घत्ता

हरिमो इय निगाउ
 कुमरु मदेमहु पटिउयउ ।
 मोहगु जेम्ब पर-यान्हि
 उयलि महीयति मठियउ ॥

(१०)

पद्मश्री का आत्म चिन्तन—

‘ दुःखयण-मस्तु मणि पक्खिबेरे
 फलुण रयति मइ परिहरणि ।
 पिउ गोहि गयन गलियाणुराउ
 मइ काइ इयामइ कियउ पाउ ॥
 आणेसि नाह ति धरियपाण
 फइया नि न म्बडिय तुम्ह आण ॥
 तुहु सामिय केण इ अलिउ अउनु
 मंभालिउ निह मइ किउ अउनु ॥
 इउ सुक्क रिउह-भउव-उत्त
 कणवोर-भाल निह न नि रिउत्त ॥
 दुःखाइय मवरि निह मिलाण
 कपि-यउत्तणु ज्ज उक्खय तिसाण ॥
 उपाडिय फणि-मणि निह भुयगि

विच्छाया दीण भय-जोरिगि ॥'
 वासहरह निग्गइ सीलवति
 वत्ताचलेण नयणइ लुहति ॥
 चित्ततु एहु मरुयणइ सिट्ठु
 जोयागिउ कुमरु न र्हिं पिं दिट्ठु ॥
 अइभीम सोय सायरि निहित्त
 दोइग्ग-सल्ल-सल्लिय विचित्त ॥
 यज्जिय विस-मनरि जह ममरेंहि
 वञ्चिय सर दिट्ठि ठ जिह तिमरेंहि ॥
 वञ्चिय सुयण गोदि ठ जिह पिमुणेंहि
 वञ्चिय सोइ दिट्ठि ठ जिह हरिणेंहि ॥

घत्ता

तिह सयल सोक्ख-परिवज्जिय
 निप्पल इउ तारम्भ सिरि ॥
 जिणु दिव्व दिट्ठि मणि मयइ
 वति पउत्थइ पउयसिरि ॥

शुद्धि पत्र

पृष्ठ

अशुद्ध रूप

शुद्ध रूप

२२ लोपक

सपत्र प्रवस्था

सहत्र प्रवस्था

२५-२६

सङ्

साङ्

३६/१२

बडमग्मइ

बडमग्मह

३१/१०

नित्य

नित्य

३१/११

तह

तहि

३१/६ टिप्पणी

पङ्क स

पङ्कन से

३८/२६

वसत यात्रु

बसत भात्रु

३६/६

तेवढढउ

ते वढढउ

४२/५

सुमहि

सुमरि

४६/२५

उटम्भइ

उटम्भइ

४७/६

जेन ग्राम्भ

जल ग्राम्भ

४८/१८

देमुच्चाउणु

देमुच्चाउणु

४६/३३

एह

एह

४६/३५

भावही

भावहि

४६/३५

पमाणियह

पमावियइ

५०/४५

गोना

गोरढी

५०/३७ टि०

जीवाग

जावागल

५१/४७

अप

अह

५१/४८

मधु

भणु

५१/५०

लज्जिअणुइ

लज्जिअइ

५१/५५

पवमनि

पवसति

५२/६४

प बसतेन

पवसतेन

५२/६६

अणुणुइ

अणुणुइ

५३/५

एट

एट्ट

५३/६

गिरा

गिरा

निमि

निमिच्च

मतट्ट

मतट्ट

पृष्ठ	अष्टक	शुद्ध
५४/६	विवन	विपन
५५/४	रोमयणवस	रोमयणवस
५६/१	सिनाय	सितायन
५६/२ जि०	पामय घन	पायय घन
५७/२	वि	विठ
५८/१४ १५ प०	सावडड	सावडड
	वपड	पटड
६३/टि०	आधानी	आगला
६४/७	विम हप्पिणु	विहसेप्पिणु
६७/जि०	आवा	आवा
६८/१४	चटु	चटु
७१/१ प०	रिटछोमि	रिटछोमि
७५/५	मरेणु	मरेणु
	त्रिलोत्तिय	जनान्तिय
७६/६	पुडु	पुडु
७७/६	मुि	मुहि
८०/१०	डयरि	डयरि
८१/११	मेहु	एहु
८२/१२	सयनिपि	सयनिपि
८३/१३	वज्जारिवि	वज्जारिपि
८६/मूमिका	पुत्रिया धी	पलिया धी
८९/प० १	सरनर	सुरणर
९२/५	पणरवि	पुणरवि
९३/६	पविरल	पविरल
९७/१२	यवतु	भुयवतु
१००/१४	भयवलिहि	भुयवलिहि
१०१/१५	मरछुयनि	मरदधुय
१०१/१५	गिच्छिपुलि	निगिच्छपुलि
१०२/१५	मुत्तन	पुत्तन
१०२/जि०	मुनम्म	मन्तलम
१०३/जि०	मुपपुत्ति	मुत्तितपुत्ति
१०७/१६	डयरिव	डयरिव

पृष्ठ	अनुच्छेद	शुद्ध
१११/टि०	गाय	गीघ्र
११३/४	विगण्ड	विगण्ड
११८/टि०	ग्यम	ग्यम
११९/६	गुण्ड	गुण्ड
११९/७	वमस	वस रस
११०/श्री०	सवटा	गवट
१२२/१० ५	दत्तिया	दत्तिया
१२५/१०	गुण	गद
१२५/१०	तिवकगड	अविगड
१३३/१६	कृष्ण का	कृष्ण की
१३८/२	आसधिवि	आसधिवि
१४४/	हक्कारिव	हक्कारिवि
१४४/	८	६
१४४/श्री	वप्रिय पुत्रा	वप्रिय पुत्रा
१४६/टि०	विपुनता	विपुनता
१४८/११	अवहरि	अवहरि
१५१/१४	भवाल	भुवाल
	हण्ड	हण्ड
१५३/	सज्जिम	सज्जिम

